दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

पुस्तकालय

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या .... आगत संख्या 92443 H

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

सिद्धयोगसंग्रह

—वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य।

सिद्धयोगसंग्रह

लेखक—
वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य
बम्बई

द्वितीय संस्करण] जनवरी १९४६ [मूल्य—२॥)

प्रकाशक—
वैद्यराज पं० रामनारायण शर्मा वैद्यशास्त्री
अध्यक्ष—श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन
कलकत्ता, पटना, झांसी और नागपुर।

मुद्रक—
जेनरल प्रिंटिंग वर्क्स लि०
८३, पुराना चीनाबाजार ष्ट्रीट,
कलकत्ता।

प्रकाशकका निवेदन

वैद्यसमाज तथा आयुर्वेदप्रेमी जनताके सम्मुख "सिद्धयोगसंग्रह" उपस्थित करते हुए आज मुझे अवर्णनीय आनन्दका अनुभव हो रहा है। यह अनुभवसिद्ध योगोंका संग्रह है और आयुर्वेदमार्तण्ड **वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य** जैसे कृतविद्य तथा सिद्धहस्त वैद्यद्वारा चालीस वर्षके अनुभवके पश्चात् लिखा गया है—इतना ही इस ग्रन्थकी उपयोगिता तथा उपादेयताके बारेमें पर्याप्त है।

नवीन चिकित्सकोंको चिकित्साकार्य प्रारम्भ करते हुए निश्चित फलदायी योगोंका ज्ञान प्रायः न होनेसे बहुत कष्ट होता है। ऐसे वैद्योंके लिये यह ग्रन्थ अनुपम रत्नमञ्जूषा सिद्ध होगा। जिन्हें चिकित्साकार्य करते हुए पर्याप्त समय हो चुका है, उन्हें भी इस ग्रन्थसे अपूर्व लाभ होगा।

ग्रन्थके लेखक वैद्य यादवजी महाराजकी विद्वत्ता और अनुभवसे आयुर्वेदजगत् सुपरिचित है। १८-२० वर्षकी उम्रसे ही आपने आयुर्वेदके प्राचीन हस्तलिखित तथा अप्राप्य ग्रन्थोंके उद्धारका कार्य प्रारम्भ कर दिया था। आयुर्वेदीय ग्रन्थमाला द्वारा आपने कई ग्रन्थरत्न प्रकाशित किये हैं। निर्णयसागर प्रेससे प्रकाशित होनेवाले अनेक ग्रन्थोंका सम्पादन आपने किया है। हालमें आप 'द्रव्यगुणविज्ञान' नामका पाठ्यक्रमोपयोगी ग्रन्थ तैयार कर रहे हैं। इसके सिवाय आपने न जाने कितने विद्वान् लेखकों तथा प्रकाशकोंको प्रेरित और प्रोत्साहित कर प्राचीन ग्रन्थोंका प्रकाशन, प्राचीन ग्रन्थोंकी व्याख्या तथा आयुर्वेदोपयोगी नूतन विषयोंपर ग्रन्थोंका निर्माण और प्रकाशन कराया है।

अनुभवके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त है कि आप चालीस वर्षसे मुंबई जैसी राजनगरीमें सतत चिकित्साकार्य कर रहे हैं और यशका उपार्जन करते हुए भारतके प्रथम कोटिके वैद्योंमें गिने जाते हैं। भारतके सब प्रान्तोंके सभी कक्षाओंके अनेकानेक वैद्यराजोंके आप सदा सम्पर्कमें रहते हैं और इस प्रकार उनके अनुभवोंको भी प्राप्त करने और उन्हें स्वयं भी अनुभवमें लानेका आपको सदा सुयोग बना रहता है। यूनानी वैद्यकका भी आपने तीन वर्ष गुरुमुखसे अध्ययन किया है, जिसकी छाप आप इस ग्रन्थमें यत्र-तत्र पायेंगे।

इसके अतिरिक्त आपने अपने औषधालयमें तथा मुंबईकी आयुर्वेदीय पाठशालामें आयुर्वेदका सानुभव शिक्षण देकर सैकड़ों शिष्य तैयार किये हैं, जो आपकी यशः-पताकाको और भी उज्ज्वल कर रहे हैं।

इतने परिचयसे समझा जा सकता है कि यह ग्रन्थ चिकित्सक-समाजको कितना उपयोगी हो सकेगा। यह उपयोगिता और भी बढ़ जाती है, जब हम देखते हैं कि ग्रन्थ अत्यन्त सरल और सुबोध भाषामें संक्षेपतः लिखा गया है तथा इसमें दिये योग भी ऐसे हैं जिन्हें बनाना विशेष कठिन नहीं है।

वाचकोंके हाथमें ऐसा उत्तम ग्रन्थ अर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष तथा अभिमान होता है। पूज्य गुरु यादवजी महाराजका मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने मुझे इस ग्रन्थके प्रकाशनकी आज्ञा दी तथा आयुर्वेदकी यह महती सेवा करनेका अवकाश दिया।

२०-१२-४३
। । पटन

आयुर्वेदका नम्र सेवक—
रामनारायण शर्मा 'वैद्यशास्त्री'

द्वितीय संस्करण

'सिद्ध योगसंग्रह' का प्रथम संस्करण १९४३ में छपा था। एक सालके भीतर ही सारी प्रतियां समाप्त हो गयीं और मांग पर मांग आने लगी। किन्तु कागजकी दिक्कतके कारण अभीतक द्वितीय संस्करणका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका था।

इधर मांग इतनी बढ़ी और लोगोंका आग्रह इतना हुआ कि हमारे लिए द्वितीय संस्करणके प्रकाशनको और अधिक दिन टालना असम्भव हो गया। प्रस्तुत संस्करण उसीका परिणाम है। ग्रन्थकी उपयोगिताके बारेमें कुछ कहना सूर्यको दीपक दिखलाना होगा। यह यादवजी महाराज जैसे महान चिकित्सकके सिद्ध योगोंका संग्रह है, यही काफी है। द्वितीय संस्करणको प्रथम संस्करणसे दूना छपवाया गया है। फिर भी जितनी मांगें आ रही हैं, हमें भय है कि ग्रंथके छपते-छपते ही न कहीं सारी प्रतियां समाप्त हो जांय।

हमें इस बातका परम संतोष और हर्ष है कि हम आयुर्वेद जगत्की इस ग्रन्थके प्रकाशनद्वारा सेवा करनेका सुअवसर पा रहे हैं।

रामनारायण शर्मा

नोट—इस ग्रन्थमें दिए गए योगों (नुस्खों) के बनानेमें उन लोगोंको बड़ी कठिनाई हो रही थी जो वैद्य नहीं हैं या जो वैद्य होनेपर भी साधन-सम्पन्न नहीं हैं। इस लिए श्रीबैद्यनाथ आयुर्वेद भवनने इस ग्रंथकी सभी औषधियोंको काफी तादादमें तैयार करनेका प्रबन्ध किया है। आप आर्डर भेजकर मंगा सकते हैं।

Prithviraj

लेखकका निवेदन

आयुर्वेदके चिकित्साग्रन्थोंमें एक एक रोगके लिये अनेक योग लिखे हुए हैं। उन सब योगोंका बनाना और रोगियोंपर प्रयोग करके उनका अनुभव करना साधन-सम्पन्न वैद्योंके लिये भी कठिनसा है। ग्रन्थकारोंने तत्तद्रोगोंमें उनका अनुभव करके ही वे योग लिखे होंगे। तथापि उनमें कुछ ऐसे योग हैं जो विशेष गुणकारक हैं और भिन्न-भिन्न प्रान्तोंके वैद्योंमें विशेषरूपसे प्रचलित हैं। चिकित्साकार्यको प्रारम्भ करनेवाले और जिन्होंने विशेष अनुभव प्राप्त नहीं किया है या किसी अनुभवी गुरुकी सेवामें रहकर चिकित्सा कार्य नहीं देखा है उन नवीन वैद्योंके लिये शास्त्रोक्त असंख्य योगोंमेंसे कौन कौनसे योग बनाने चाहियें, यह कठिन समस्या हो जाती है। ऐसे वैद्योंको अपने प्रारम्भिक चिकित्साकार्यमें मार्गदर्शक हों, इस आशयसे मैंने अपने ४० वर्षोंके चिकित्सा कार्यमें जिन योगोंको विशेषरूपसे फलप्रद पाया उनका संग्रह करके यह "सिद्धयोगसंग्रह" नामका ग्रन्थ तैयार किया है। इनमें अधिकांश योग भिन्न भिन्न प्रान्तोंके वैद्योंमें प्रचलित शास्त्रीय योग हैं और कुछ अन्य वैद्योंसे प्राप्त और स्वतः अनुभव किये हुए हैं। कुछ शास्त्रीय योगोंमें मैंने अपने अनुभवसे द्रव्योंमें कुछ परिवर्तन भी किया है। उनके मूल पाठमें तदनुकूल परिवर्तन कर दिया है और नीचे किञ्चित्परिवर्तित ऐसा लिख भी दिया है। शास्त्रीय योगोंके गुणपाठमें उस योग के जो गुण विशेष अनुभवमें आये वे ही रख कर अन्य हटा दिये हैं। भाषानुवादमें निर्माणविधि, मात्रा, अनुपान आदि विस्तृत और स्पष्ट भाषामें लिखा है ताकि नवीन वैद्य भी योगोंको सुगमतासे बना सकें और उनका प्रयोग कर सकें। हिन्दी मेरी जन्मभाषा न होने तथा हिन्दीमें ग्रन्थ लिखनेका यह पहला प्रयास होनेके कारण इस ग्रन्थमें भाषासम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ रह गई हैं। एवं प्रेस दूर होनेके कारण छपाईकी दृष्टिसे भी अनेक त्रुटियाँ रह गई हैं। आशा है कि पाठक उनको सुधार कर पढ़ेंगे और इसके लिये मुझे क्षमा करेंगे। यह ग्रन्थ गुजरात और महाराष्ट्रके वैद्योंको भी उपयोगी हो इसलिये इस ग्रन्थमें प्रयुक्त औषधोंके हिन्दी नामोंके साथ उनके गुजराती और मराठी पर्यायोंकी सूची भी आरम्भमें दी गई है।

कागज आदिकी अति महंगाईके समयमें इस ग्रन्थको अच्छे कागजपर छपवाकर प्रकाशित किया इसलिये मैं अपने प्रिय शिष्य **वैद्यराज पं० रामनारायणजी** अध्यक्ष—**"श्रीबैद्यनाथ आयुर्वेद भवन"** को अनेक धन्यवाद देता हूं। इस ग्रन्थके प्रूफ देखने, योगोंकी वर्णानुक्रमणिका और शुद्धिपत्र बनाने आदिमें मेरे प्रिय शिष्य **रणजितराय देशाई** आयुर्वेदालङ्कारने बहुत परिश्रम किया है, अतः उसको भी धन्यवाद देता हूं।

ता० १०-११-४३
ठा० विगास स्ट्रीट, बम्बई।

निवेदक—
वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य।

सिद्धयोगसंग्रहके योगोंकी
वर्णानुक्रमणिका

सिद्धयोगसंग्रहमें आये हुए औषधोंके हिन्दी नामोंके

गुजराती और मराठी पर्याय नाम

अ

हिन्दी	गुजराती	मराठी
अगेथू	अरणी	ऐरण, टाटूकल
अजवायन	अजमा	ओवा
अडूसा	अरडुसी	अडुलसा
अतीस	अतिविषनी कली	अतिविष
अदरक	आदु	आलें
अनन्तमूल	कागडीओ कुंढेर, उपलसली	उपलसरी
अनारदाना	दाड़मसार	डालिंब बीं
अमलतास	गरमालो	बाहवा
अरहर	तुवर	तूर
अरंड खरबूजा	पोपैयुं	पोपया
असगंध	आसंध	आस्कंद

आ

हिन्दी	गुजराती	मराठी
आक	आकडो	रूई
आम	आंबो	आंबा

इ-ई-उ-ए

हिन्दी	गुजराती	मराठी
इन्द्रायन	इन्द्रावणां	कडू वृन्दावन, कवंडल
इमली	आंम्बली	चिंच
इलायची	एलची	वेलची
ईख	शेरडी	ऊंस
उसारेरेवन्द	[illegible]लियो, रेवंचीनीनो सीरो	रेवचिनी शिरा
एलवा	एलियो	कालाबोल, एलिया

क

हिन्दी	गुजराती	मराठी
कचूर	कचूरो	कचोरा

कछुआ	काचबो	कांसव
कूट	कठ, उपलेट	कोष्ठ
कबाबचीनी	चणकबाब	कबाबचीनी, कंकोल
कमलगट्टा	पबडी, कमलकाकडी	कमलकांकडी
कमीला	कपीलो	कपिला
करंजुआ	कांकच, कांचका	सागरगोटा
कलमी सोरा	सुरोखार	सोराखार
कलिहारी	दूधीओ वछनाग	कललावी
कवांच	कवचनां बी	कुहिलीचें बीं
कसीस	हीराकसी	हिराकस
कालमेघ	लीलुं करियातुं	ओले किराईत
काला नमक	संचल	संचलखार, पादेलोण
काली मिर्च	कालां मरी	मिरीं
कांस	कासडो	कसई, कसाडात
कुचला	झेरको चलां	कुचला, काजरा
कुटकी	कडु	कडू कुटकी
कुड़ा	कडो	कुडा
कुरैया	कडा	कुडा
कुश	दरभ	दर्भ
कुसुम	कसुंबो	करडई
केर, करील	केरडां	नेबती
कैथ	कोठ	कवठ
कौयल	गरणी	गोकर्णी

ख

खपरिया	खापरियुं	कलखापरी
खरेंटी	खपाट	चिकणा
खस	वालो	वाला
खीरा	काकड़ी	काकडी, तौसें
खोल	धाणी	लाह्या

ग

हिन्दी	गुजराती	मराठी
गदहपूरना	साटोडी	खापरी, घेटुली
गनिआर	अरणी	ऐरण
गन्ना	शेरडी	ऊंस
गिलोय	गलो	गुलवेल
गुड़हल	जासुंद	जास्वंद
गुलशकड़ी	गंगेटी	तुप्कडी
गूलर	उंबरा	उंबर
गंगेरन	गंगेटी	तुप्कडी
गंभारी	शीवण	शिवण
ग्वारपाठा	कुंवार	कोरफड

घ

घीकुंवार	कुंवार	कोरफड
घुंघची	चणोठी	गुंज

च

चकवड़	कुंवाडीयो	टाकला
चन्दन	सुखड	पांढरें चन्दन
चन्द्रसूर	अशेलियो	अहालीव
चिचड़ा	अघेडो	आघाडा
चिरमिटी	चणोठी	गुञ्ज
चिरायता	करीआतु	किराईत
चिरौंजी	चारोली	चारोली

छ

छड़ीला	छडीलो	दगडफूल
छतिवन	सातवीन	सात्वीण
छुहारा	खारेक	खजूर
छोटी पीपल	लींडीपीपर	पिंपली
छोटी कटेरी	भोंयरिंगणी	भुईरिंगणी
छोटी मांई	पडवास	....

ज

हिन्दी	गुजराती	मराठी
जलनीम	बांम, कडवी नेवरी	....
जामुन	जांबु	जांभूल
जीवन्ती	खीरवेल, खीणेर,	डोडी हरणदोडी
जैत	जैती, रायसिंगडी	शेवारी
जौहड़ (हीमज)	जौहड़	बालहिरडे

ट-ड-ढ

टेसू	खाखरो (केसुडा)	पलस
डाभ	दरभ	दर्भ
ढाक	खाखरो	पलस

त

तोखुर	तबखीर	तवकीर
तूण	....	तूण
तेजपान	तमालपत्र	तमालपत्र

द

दरियाई नारियल	झेरी नारियल	कडू नारल
दालचीनी	तज	दालचीनी
दुधिया (दुद्धी)	दुधेली	नायटी, दुधी
दूब	धो	दूर्वा

ध

धनिया	धाणा	धने
धान	चोखा	भात
धाय	धावडी, धावणी	धायटो

न

निबौली	लिबोडी	लिम्बोल्या
निसोथ	नसोत्तर	निशोत्तर
नीम	लीमडो, लींबडो	कडूनिब
नीला थोथा	मोरथुथु	मोरचूत
नीलोफर	कमल	निलें कमल
नौसादर	नवसार, नवसागर	....

प

हिन्दी	गुजराती	मराठी
पद्माख	पदमकाष्ठ	पद्मकाष्ठ
पपीता	पपैयु	पोपई
पाकर	पीपरी (ली)	पिंपरी
पाठा	कालीपाठ	पहाडवेल
पाडर	पाडल	पाडल
पाढ	कालापाठ	पहाडवेल
पाढल	पाडल	पाडल
पीठवन	पीली समेरवो, पीठवण	पिठण
पिण्डखजूर	खजूर	खजूर
पित्तपापड़ा	खडसलियो, पितपापडो	पित्तपापड़ा
पुष्करमूल	पोखरमूल	....

ब

हिन्दी	गुजराती	मराठी
बड़ी कटेरी	उभी रिंगणी	डोरलें
बरगद	बड	बड
बरहंटा	उभी रिंगणी	डोरली
बरियार	खपाट	चिकणा
बरुना	वायवरणा	वायवर्णा
बायविडंग	वावडींग	वावडिंग
बालछड़	जटामाँसी	जटामांसी
बिधारा	वरधारो	वरधारा
बिहीदाना	मुगलाई बेदाणां	मोगली बेदाणा
बेत	नेतर	वेत
बेर	बोर	बोर
बेल	बीली	बेल
बेलगिरी	बीलीनो गरभ, बीलीनो मगज	बेलफलाचा गीर
बैंगन	रिंगणाँ, वंताक	वांगीं

भ

भटकटैया	भोंयरिंगणी	भुईरिंगणी
भंगरा	भांगरो	माका
भिलावाँ	भिलामो	

म

हिन्दी	गुजराती	मराठी
मकोय	पीलुडी	कामोणी, काउभोरी
महुआ	महुडो	मोहडा, मोइ
माजूफल	मायां	मायफल
माषवन	जंगली अडद	रान उडीद
मिश्री	साकर	साखर
मुगवन	जंगली मग	रानमुग
मुनक्का	दराख	काली द्राक्षें, मनुका
मुलेठी	जेठीमध	ज्येष्ठीमध
मूसाकानी	उंदरकानी	उंदिरकानी
मेंहदी	मेंदी	मेंदी
मोम	मीण	मेण
मौलसिरी	बोलसरी	बकुल

र

रक्तचन्दन	रतांजली, लालचन्दन	रक्तचंदन
रसौत	रसवंती	रसांजन
रेंडी	एरंडो, दीवेलो	एरंड
रोहिड़ा	रगतरोहीडो	रोहिडा, रक्तरोडा

ल

लाजवन्ती	रीसामणी	लाजालू
लावा	धाणी	लाह्या
लिसोड़ा	गूंदो, वडगूंदो	भोंकर

लोध	लोधर	लोध्र
लौको	दुधी	दुधो भोपला
	व	
विजयसार	बीयो	बिवला
विदारी	भोंयकोंहलुं	भुईकोहला
वंशलोचन	वांसकपुर	वंशलोचन
	श	
हिन्दी	गुजराती	मराठी
शहद	मध	मध
शीतल मिर्च	चणकबाब	कबाबचिनी, कंकोल
शेमल	शेमलो, सीमलो	सांवर शेवरी
शंखाहुली	शंखावली	शंखपुष्पी
	स	
सत्यानाशी	दारुडी	पिंवला धोत्रा, पिसोला
सनाय	मिंढीआल, सोनामुखी	सोनामुखी
सरफोंका	सरपंखो	शरपुंखा
सहदेई	सेदरडी	ओसाडी
सहेंजना	सरगवो	शेवगा
साँटी	साटोडी	पुनर्नवा, घेटु
सुहागा	टंकणखार सुहागो	टांकणखार
सोआ	सुवा	शेपु, वालंतशेप
सोना पाठा	....	टेंट
सौंफ	वरिआली, वजीयारी	बडिशेप
संखिया	सोमल	सोमल
संभालु	नगोड	निर्गुण्डी, निगड

टि०—इस अनुक्रमणिकामें यूनानी द्रव्योंके गुजराती-मराठी पर्याय नहीं दिये गये हैं ! कारण, वे सर्वत्र एक ही नामसे यूनानी दवा बेचनेवालोंके यहां मिलते हैं।

सिद्धयोग-संग्रह ।

द्रव्य और

गोदन्त २ भाग;

तीनोंको ए

मात्र जमण्ड या

किसी अन्य

उप तथा दाह,

तृषा, वम का उपयोग

होता है । ज्वरका

वेग उतर ले औषधका

प्रयोग क

अ से वर्णन किया

जाता है

स्वरूप

मिलती है।

इसको- सिद्ध संप्रदाय-

वाले 'कर्पूरशिला' और अंग्रेजीमें बाजारमें पत्रमय

शिलाके या पासेदार टुकड़ोंके रूपमें मिलती है। औषधमें दोनोंका उपयोग होता है।

लोध	लोधर	लोध्र
लौको	दुधी	दुधी भोपला
	व	
विजयसार	बीयो	चिवला
विदारी	भोंयकोंहलुं	भुईकोहला
वंशलोचन		[illegible]न
हिन्दी		
शहद		
शीतल मिर्च		कंकोल
शेमल		
शंखाहुली		
सत्यानाशी		पिसोला
सनाय		
सरफोंका		
सहदेई		
सहेंजना		
सांटी		
सुहागा		
सोआ		
सोना पाठा		प
सौंफ		
संखिया		
संभालु		ड

टि०—इस अनुक्रमणिकामें यूनानी द्रव्योंके गुजराती-मराठी पर्याय नहीं दिये गये हैं ! कारण, वे सर्वत्र एक ही नामसे यूनानी दवा बेचनेवालोंके यहां मिलते हैं।

सिद्धयोग-संग्रह ।

नम आयुर्वेदप्रवर्तकेभ्यो देवेभ्यो महर्षिभ्यश्च ।

ज्वराधिकार १ ।

१—गोदन्तीमिश्रण ।

द्रव्य और निर्माण विधि—

गोदन्ती भस्म ८ भाग, जहरमोहरा पिष्टी २ भाग, रसादि वटी २ भाग; तीनोंको एकत्र मिलाकर रख ले ।

मात्रा और अनुपान—१ माशा ३—४ घंटेसे ठण्ढा जल, लाजमण्ड या किसी अन्य ज्वरघ्न कषायके अनुपानसे दिनमें ४—५ बार देवे ।

उपयोग—साधारणतः किसी भी प्रकारके ज्वरमें ज्वरके सन्तापको तथा दाह, तृषा, वमन, शिरोवेदना आदि ज्वरके लक्षणोंको कम करनेके लिये इसका उपयोग होता है । विषमज्वरमें ज्वरका वेग हो तबतक ही इसका प्रयोग करे । ज्वरका वेग उतरनेके बाद सप्तपर्णवटी आदि ज्वरके आगामी वेगको रोकनेवाले औषधका प्रयोग करे ।

अब गोदन्ती मिश्रणमें आनेवाले तीनों योगोंका पृथक् पृथक् नीचे वर्णन किया जाता है ।

२—गोदन्तीभस्म ।

स्वरूप-वर्णन—

गोदन्ती बम्बईके बाजारमें 'गोदन्ती' या 'घापाण' इसी नामसे मिलती है । इसको मराठीमें 'शिरगोला' गुजरातीमें 'चिरोड़ी', दक्षिण भारतके सिद्ध संप्रदाय-वाले 'कर्पूरशिला' और अंग्रेजीमें 'जिप्सम्' कहते हैं । यह बाजारमें पत्रमय शिलाके या पाशेदार टुकड़ोंके रूपमें मिलती है । औषधमें दोनोंका उपयोग होता है ।

भस्म-निर्माणविधि—

मृत्तिका रहित अच्छी गोदन्ती ला, पहले उसको गरम जलमें धोकर साफ कर ले। पीछे सुखा, जमीनमें एक हाथ गहरा खड्डा बना, उसका ¾ भाग उपलों (कंडों) से भर ऊपर गोदन्तीके टुकड़े रख, खड्ढेके शेष अंशको उपलोंसे भरकर अग्नि देवे। स्वांगशीतल होनेपर इस भस्मको पृष्ठ ३ पर लिखे हुए चन्दनादि अर्ककी एक भावना दे सुखा, पीस, कपड़छान करके बोतलमें भर ले। यदि जमीन-में खड्डा करके उपलोंकी अग्नि देनेकी सुविधा न हो तो अंगीठीमें लकड़ीके कोयलों की अग्निमें पूर्वोक्त विधिसे भस्म बना ले। कई वैद्य इस प्रकार भस्म तैयार करके पीछे उसको कुमारीगर्भ (घीकुवांरके गुद्दे) की या निम्बपत्र-स्वरसकी भावना दे, टिकिया बना, उनको सुखाकर, मिट्टीके २ तवोंके बीचमें टिकिया रखकर अग्निपुट * देते हैं।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—जल, दूध, मधु; या घृत और शर्कराके साथ मिलाकर देवे।

उपयोग—ज्वरमें गोदन्तीमिश्रणके रूपमें, सिरके दर्दमें १ से २ माशा गोद-न्तीभस्म, मिश्रीका चूर्ण १-२ माशा दोनोंको समान गोघृतमें मिलाकर दे और सूर्यावर्त और अर्धावभेदक—आधासिसी (अधकपाली) में दिनमें चार मात्रा ४-४ घंटेसे, इसी प्रकारसे दे। इसमेंसे एक मात्रा सवेरमें सूर्योदयके १-२ घंटे पूर्व (पीड़ा प्रारम्भ होनेके पहले) देनेसे विशेष लाभ होता है। स्त्रियोंका श्वेत या रक्तप्रदर, बालकोंका फक्करोग (बालशोष-सूखा) और शरीरमें सुधांश (चूने-केल्शियम) की कमीसे होनेवाले सर्व रोगोंमें यह उत्तम औषध है।

३—जहरमोहरा पिष्टी।

जहरमोहराका स्वरूप-वर्णन—

यह बाजारमें इसी नामसे मिलता है। यह एक पत्थर है जो रंगमें सफेद, कुछ पीलाई और हरापन लिये होता है। जो वजनमें हलका और चिकना हो वह

---

* कई वैद्य प्रारम्भमें ही ग्वारपाठाके रसमें गोदन्तीके टुकड़ोंको रख गजपुट देकर गोदन्तीभस्म तैयार करते हैं; जैसा कि **सिद्धभैषज्यमणिमालामें** लिखा है—

व्युषितं पयसि कुमार्याः पुटितमिभपुटे वलक्षहरितालम्।
तत्तदनुपानवशतो ज्वरादिनाशनाय किमु नालम्॥

अच्छा समझा जाता है। यह यूनानी वैद्यकमें प्रचलित द्रव्य है। हकीम लोग इसको विषघ्न, हृदय तथा मस्तिष्कको बल देनेवाला, वमनको बन्द करनेवाला एवं अनुष्णा-शीत (मातदिल) मानते हैं। इसकी उत्तम जातिको **'जहरमोहरा खताई'** कहते हैं।

पिष्टी-निर्माणविधि—

जहरमोहराके अच्छे टुकड़ोंको जलमें धो, सुखाकर कपड़छान चूर्ण करे। पीछे पत्थरके खरलमें उत्तम गुलाबजल या चन्दनादि अर्क* में अतिसूक्ष्म पिष्टी बना, सुखाकर बोतलमें भर ले।

मात्रा—२ रत्तीसे १ माशा तक।

अनुपान—जल, गुलाबका अर्क, चन्दनादि अर्क आदि।

उपयोग—इसका उपयोग वमन, दाह, दिलकी घबराहट, अन्नविष, विसूचिका (हैजा), बच्चोंके हरे रंगके दस्त आदिमें होता है।

४–रसादि बटी।

रसबलिघनसारचन्दनानां सनलदसेव्यपयोदजीवनानाम्।
अपहरति वटी मुखस्थितेयं सकलसमुत्थितदाहमश्रमेण॥

योगरत्नाकर दाहाधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, कपूर, श्वेत चन्दन, जटामांसी, नेत्रवाला, नागरमोथा और खस प्रत्येक सम भाग। प्रथम पारद और गन्धककी कज्जली करे। पीछे अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिलाकर जल, गुलाबका अर्क या चन्दनादि अर्कमें २-३ दिन मर्दन कर, दो दो रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखा ले, या सुखाकर चूर्णके रूपमें रख ले।

---

* **चन्दनादि अर्क बनानेकी विधि**—उत्तम चन्दनका चूर्ण, मौसिमी गुलाबके फूल, केवड़ेके फूल, बेद मुश्कके और कमलके फूल सबको एकत्र करके और उसमें अठगुना पानी डालकर भपकेमें आधा अर्क खींचे। मैंने इस प्रकार तैयार किये हुए अर्कका **चन्दनादि अर्क** नाम रक्खा है। मोती-प्रवाल आदिकी पिष्टी बनानेमें इसीका प्रयोग करता हूं। यदि बेद मुश्कके फूल न मिले तो मौलसरीके फूल डाले।

मात्रा—१–२ गोली (२-४ रत्ती) ।

अनुपान—जल, गुलाबका अर्क, चन्दनादि अर्क या लाजमण्ड ।

वक्तव्य—मैं इस योगमें छोटी इलायची और दरियाई नारियल (जहरी नारियल) का चूर्ण और मिलाता हूँ। इससे विशेष लाभ होता देखा गया है ।

उपयोग—किसी भी प्रकारका दाह, तृषा, हिक्का और वमनमें इस योगका उत्तम उपयोग होता है । विसूचिका (हैजा) में भी इसका उपयोग होता है ।

५—ज्वरसंहार रस

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, कुटकी, नीमकी अन्तरछाल, कूठ, नागरमोथ, सफेद सरसों, इन्द्रजव सेंका हुआ, सुहागा आगपर फुलाया हुआ, रक्तचन्दन, अतीस और ममीरी* सबका चूर्ण सम भाग और रससिन्दूर या शुद्ध हिंगुल सबसे आधा भाग ले । प्रथम रससिन्दूरको बारीक पीसे, पीछे अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिलाकर अदरक, तुलसी और निर्गुण्डी (सम्भालु) के पत्तोंके स्वरसमें ३-३ दिन मर्दन करके २-२ रत्तीकी गोलियां बना ले या सुखा कर चूर्णके रूपमें रख ले ।

मात्रा और अनुपान—दो रत्ती केवल या एक माशा गोदन्ती भस्मके साथ मिलाकर जल या किसी ज्वरघ्न कषायके अनुपानसे दे ।

उपयोग—ज्वरसंहार रस अनुपानविशेषसे सब प्रकारके ज्वरोंमें विशेषतः कफ और वातज्वरमें लाभ करता है । इसको गोजिव्हादि क्वाथके अनुपानके साथ देनेसे श्लेष्मज्वरमें कफ पककर ज्वर शीघ्र अच्छा होता है और प्रतिश्याय (जुकाम) तथा खांसी भी जल्दी अच्छी होती है । कफज्वरमें पार्श्वशूल हो तो इसके साथ २ से ६ रत्ती मृगशृंग भस्म (हरिण या सांभरके सींगकी भस्म) और श्वसनकज्वर (न्यूमोनिया) हो तो इसके साथ शृंगभस्म २-६ रत्ती तथा अभ्रक भस्म एक रत्ती मिलाकर दे और ऊपरसे गोजिव्हादि कषाय या भार्ग्यादि कषाय, नौसादर और यवक्षारका प्रतीवाप देकर दे । ज्वरसंहार रसका तरुण और जीर्ण दोनों प्रकारके ज्वरमें प्रयोग कर सकते हैं ।

---

* यदि ममीरी न मिले तो एक भाग काली जीरी (कडुआ जीरा, स० अरण्य जीरक) डाले ।

६—संशमनी वटी (गुडूचीघनवटी)।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अंगूठे जितनी मोटी अच्छी ताजी-हरी गिलोय लाकर पहले उसको जलसे अच्छी तरह धो ले। पीछे उसके ४-४ अंगुली जितने टुकड़े करके कूट ले। बाद उसको भीतरसे खूब साफ की हुई लोहेकी कड़ाहीमें या पीतलके कलईदार बर्तनमें चौगुने पानीमें डालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ करे। क्वाथ ठण्डा होनेपर अच्छे वस्त्रसे २-३ बार छान, कलईदार बर्तनमें डालकर जबतक क्वाथ सीरे (हलवे) जैसा गाढ़ा हो तबतक पकावे। पीछे अग्निपरसे उतारकर गोली बनने योग्य घन हो तबतक धूपमें सुखाकर २-२ रत्तीकी गोलियां बना ले।

मात्रा और अनुपान—५ से २० गोली दिनमें ४-५ बार जलके साथ देवे।

उपयोग—किसी भी प्रकारके ज्वरमें इसका निश्शंक प्रयोग कर सकते हैं। जीर्णज्वर और राजयक्ष्माके ज्वरमें इसका अच्छा उपयोग होता है। प्रमेह, श्वेत प्रदर, मन्दाग्नि, दौर्बल्य और पाण्डुरोग (रक्ताल्पता) में इससे अच्छा लाभ होता है। यह बलकारक और रसायन गुणयुक्त है। गुडूचीके घनमें चतुर्थांश अतीसका चूर्ण मिलाकर दो दो रत्तीकी गोलियां बना ले। इसमें से ५-१० गोली जलके अनुपानके साथ देवे तो विषम ज्वर (पारीके बुखार) में भी इससे लाभ होता है।

७—त्रिभुवनकीर्ति रस।

हिंगुलं च विषं व्योषं टङ्कणं मागधीशिफाम्।
संचूर्ण्य भावयेत्त्रेधा सुरसार्द्रकहेमभिः॥
रसस्त्रिभुवनकीर्तिर्गुञ्जैकाऽऽर्द्ररसेन वै।
विनाशयेज्ज्वरान् सर्वाननुपानविशेषतः॥

योगरत्नाकर ज्वराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वत्सनाभ, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, अग्निपर फुलाया हुआ सुहागा और पीपलामूल प्रत्येकका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण सम भाग लेकर उसको अदरकका रस, तुलसीका रस और धतूरेकी पत्तीका रस—इन

प्रत्येककी ३-३ भावना देकर और प्रति भावना ६ घण्टा मर्दन करके १-१ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बना ले। अन्तमें ३ भावना कागजी नीबूके रसकी दे तो यह योग विशेष गुणप्रद होता है।

मात्रा और अनुपान—इस रसकी १-१ गोली दिनमें ३-४ बार अदरकके रस और मधुके साथ या तुलसी और बिल्वपत्रके फाँटके साथ अथवा किसी ज्वरघ्न क्वाथके अनुपानके साथ देवे।

उपयोग—अनुपान विशेषसे सर्व प्रकारके तरुण ज्वरोंमें विशेषतः वात और कफ प्रधान ज्वरोंमें इसके प्रयोगसे स्वेद होकर ज्वर उतर जाता है। ३-४ दिन इसके प्रयोगसे यदि ज्वर न उतरे और संततज्वर (मर्यादा ज्वर) का निर्णय हो जाय तो आगे इसका प्रयोग न करना चाहिये।

८—संजीवनी वटी।

विडङ्गं नागरं कृष्णां पथ्यामलविभीतकम्।
वचां गुडूचीं भल्लातं सद्विषं चात्र योजयेत्।
एतानि समभागानि गोमूत्रेणैव पेषयेत्।
गुञ्जाभा वटिका कार्या दद्यादार्द्रकजै रसैः।
वटी सञ्जीवनी नाम्नाऽजीर्णज्वरविनाशिनी॥

शार्ङ्गधर संहिता म० खं० अ० ७।

द्रव्य और निर्माणविधि—

वायविडङ्ग, सोंठ, छोटी पीपल, हर्रे, बहेड़ा, आंवला, बच, गिलोय, शुद्ध भिलावा और शुद्ध बछनाग ये सब सम भाग ले। प्रथम बछनाग और भिलावेको गोमूत्रमें खूब महीन पीसे। पीछे अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, गोमूत्रमें तीन दिन मर्दन करके १-१ रत्तीकी गोलियां बना ले।

मात्रा और अनुपान—एकसे दो गोली अदरकके रस और मधुके साथ दे।

उपयोग—सञ्जीवनी वटी—अजीर्णमें, अजीर्णसे होनेवाले ज्वरमें और कफवात प्रधान ज्वरमें अदरकके रस और मधुके अनुपानसे; सन्निपात ज्वरमें ३-७ लवंग और १०-२० ब्राह्मीकी ताजी पत्ती पीस, २-४ तोला जलमें मिलाकर उस जलके अनुपानसे देवे। ज्वरमें पतले दस्त होते हों तो ५ रत्ती जायफल जलमें घिस कर उसके साथ देवे।

वक्तव्य—ज्वराधिकारमें बछनागयुक्त जितने योग ग्रन्थोंमें लिखे हैं, उनमें त्रिभुवनकीर्ति और सञ्जीवनी ये दो योग मेरे अनुभवमें अच्छे हैं, अतः ये दो योग ही मैंने यहां लिखे हैं।

९--विश्वतापहरण रस।

सूतशुल्बत्रिवृताबलितिक्ता दन्तिबीजचपला विषतिन्दुः।
पथ्यया सह विमर्द्य समांशं हेमवारिसहितं दिनमेकम्॥
रक्तियुग्मगुटिकाऽऽर्द्रकवारा नाशयेदभिनवज्वरमाशु।
विश्वतापहरणोऽत्र च पथ्यं मुद्गयूषसहितं लघु भक्तम्॥

योगरत्नाकर ज्वराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, ताम्रभस्म, निसोथ, शुद्ध गन्धक, कुटकी, शुद्ध जमालगोटा, छोटी पीपल, शुद्ध कुचला और बड़ी हर्रेका दल* ये सब द्रव्य सम भाग ले। प्रथम पारा और गन्धककी कज्जली करे। पीछे ताम्रभस्म तथा अन्य औषधोंका सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, धतूरेके पत्तोंके स्वरसमें एक दिन तथा भंगरेके स्वरसमें सात दिन मर्दन करके २-२ रत्तीकी गोलियां बना ले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—अदरकका रस और मधुके साथ अथवा मिश्री मिलाये हुए जलके साथ दे।

उपयोग—नवज्वरमें या उदरादि अन्य रोगोंमें जहां विरेचन करानेकी आवश्यकता हो, वहां दे।

१०---अश्वकंचुकी रस।

पारदं टङ्कणं गन्धं विषं व्योषं फलत्रयम्।
तालकं च समं सर्वं जयपालं त्रिभागकम्॥
मर्दयेद्भृङ्गनीरेण भावना तु त्रिसप्तधा।
द्विगुञ्जां वटिकां कृत्वा छायायां शोषयेद् बुधः॥
अश्वारोही रसो देयो ज्वरे श्वासे विबन्धके॥

* गुठली निकाला हुआ बकल (छिलका)।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, आगपर फुलाया हुआ सुहागा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध बछनाग, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, शुद्ध हरताल या माणिक्य रस ये सब सम भाग और शुद्ध जमालगोटा तीन भाग ले। प्रथम पारा और गन्धककी कज्जली करे। पीछे उसमें हरताल मिलाकर उसके सूक्ष्म कण भी न दिखें तबतक मर्दन करे। बाद अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, भंगरेके रसमें २१ दिन मर्दन कर, २-२ रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखा ले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—अदरकका रस, मिश्री, या मिश्री मिलाया हुआ जल।

उपयोग—ज्वरमें या अन्य उदरादि रोगोंमें जहां विरेचन करानेकी आवश्यकता हो, वहां एक दो मात्रा यथावश्यक प्रयोग करे।

वक्तव्य—जयपाल (जमालगोटा) युक्त जितने विरेचन योग रस-ग्रन्थोंमें लिखे हैं उनमें **विश्वतापहरण** तथा **अश्वकंचुकी** ये दो योग उत्तम हैं। अतः मैंने ये दो योग ही यहां दिये हैं। इनका प्रयोग ज्वरमें विरेचन योग्य अवस्था देखकर एक दो बार ही करना उचित है। अन्य उदरादि रोगमें यथावश्यक अनेक बार प्रयोग कर सकते हैं। यदि किसी मृदुकोष्ठवालेको इन योगोंसे अधिक विरेचन हो तो मीठे बेदाना (मृदुबीज) दाड़िमका रस, छाछ, इसबगोलका लुआब मिश्री मिलाकर या सौंफका अर्क देना चाहिये।

११—कालारि रस।

त्रिशाणं पारदं चैव गन्धकं टङ्कपञ्चकम्।
त्रिशाणं वत्सनाभं च पिप्पली दशशाणिका॥
लवङ्गं च चतुःशाणं त्रिशाणं कनकाह्वयम्।
टङ्कणं वह्निशाणं च पञ्च जातिफलात् क्षिपेत्॥
मरिचं पञ्चशाणं स्यादाकल्लं च त्रिशाणकम्।
करीरार्द्रकनिम्बूकैर्मर्दयेच्च दिनत्रयम्।
कालारिरसनामाऽयं सर्वज्वरविनाशनः॥

योगचिन्तामणि।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद ३ भाग, शुद्ध गन्धक ५ भाग, शुद्ध बछनाग ३ भाग, छोटी पीपल १० भाग, लौंग ४ भाग, शुद्ध धतूरेके बीज ३ भाग, आगपर फुलाया हुआ सुहागा ३ भाग, जायफल ५ भाग, काली मिर्च ५ भाग और अकरकरा ३ भाग ले। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली कर उसमें अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, केरकी कोंपल, अदरक और कागजी नीबू इन प्रत्येकके रसमें ३-३ दिन मर्दन करके २-२ रत्तीकी गोलियां बना ले।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान और उपयोग—अदरकका रस, तुलसीका रस, ७ से २१ लौंगका अर्धावशेष क्वाथ इनमेंसे किसी एक अनुपानसे वातज्वर, कफज्वर और वात कफाधिक सन्निपात ज्वरमें देवे। सन्निपात ज्वरकी प्रलापावस्थामें तगरादि क्वाथके अनुपानसे या ७ लौंग, ३ माशा ब्राह्मी (मण्डूकपर्णी) की ताजी हरी पत्ती, ३ माशा जटामांशी और ३ माशा शंखाहुलीके क्वाथके अनुपानसे देवे। विषमज्वर (पारीके ज्वर) में १॥ माशा जायफलके चूर्णके साथ देकर ऊपरसे दूध देवे अथवा निम्बपत्रस्वरसपुटित गोदन्ती भस्म १ माशाके साथ मिलाकर देवे। आगे जो ज्वरघ्न क्वाथ लिखे हैं उनमेंसे किसी भी क्वाथके अनुपानसे भी दे सकते हैं।

१२—कस्तूरीभैरव रस (लघु)

हिंगुलं च विषं टङ्कं जातिकोषफले तथा।
मरिचं पिप्पलीं चैव कस्तूरीं घनसारकम्॥
नागवल्ली दलरसैर्दिनमेकं विमर्दयेत्।
गुञ्जामितां वटीं दद्यात् सन्निपाते सुदारुणे।
कस्तूरीभैरवः ख्यातो रसोऽयं लघुपूर्वकः॥

भैषज्यरत्नावली ज्वराधिकार (किञ्चित् परिवर्तित)

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध बछनाग, आगपर फुलाया हुआ सुहागा, जायफल, जावित्री, काली मिर्च, छोटी पीपल, कस्तूरी और कपूर सम भाग ले। प्रथम पानके रसमें शुद्ध बछनागका मर्दन करे, पीछे कस्तूरी और कपूर मिलाकर मर्दन करे। बाद अन्य

द्रव्योंका कपड़छान किया हुआ सूक्ष्म चूर्ण मिला, पानके रसमें एक दिन मर्दन कर १-१ रत्तीकी गोलियां बना, छायामें सुखाकर, रख ले ।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—१-२ गोली पानके रसमें, मधुमें अथवा दूधमें मिलाकर देवे । इसका उपयोग वातज्वरमें, कफज्वरमें और वातकफ-प्रधान सन्निपात ज्वरमें करे । सन्निपात ज्वरमें जब पसीना अधिक होकर शरीर ठंडा होने लगे, हाथ-पांव ठण्डे हों और नाड़ी क्षीण होने लगे तब इससे विशेष लाभ होता है । इस योगमें यदि बछनागके स्थानपर शुद्ध कुचला और अम्बर एक एक भाग डाल कर बनावे तो यह नाड़ी और हृदयकी दुर्बलतामें और वातरोगोंमें विशेष लाभ देता है और वाजीकर गुणयुक्त होता है ।

१३—बृहत्कस्तूरी भैरव रस ।

मृगमदशशिसूर्या धातकी शूकशिम्बी
रजतकनकमुक्ता विद्रुमं लौहपाठे ।
कृमिरिपुघनविश्वा वारितालाभ्रधात्र्यो
रविदलरसपिष्टः कस्तूरीभैरवोऽयम् ॥
अनुपानविशेषेण सर्वज्वरविनाशनः ।

भैषज्यरत्नावली ज्वराधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कस्तूरी, कपूर, ताम्रभस्म, धायके फूल, कवाँचके बीज, रौप्य भस्म, सुवर्ण भस्म, मोतीकी पिष्टी, प्रवाल भस्म, लोहभस्म, पाठा, वायबिड़ंग, नागरमोथा, सोंठ, खस, शुद्ध हरताल या माणिक्य रस, अभ्रक भस्म और आँवला ये सब द्रव्य सम भाग लेवे । प्रथम वनस्पतियोंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण और भस्में मिला आकके पत्तोंके रसमें २ दिन मर्दन करे । पीछे उसमें कस्तूरी और कपूर डाल, एक दिन आकके पत्तोंके रसमें मर्दन कर २-२ रत्तीकी गोलियां बना छायामें सुखाकर ले ।

मात्रा—१ गोली ।

अनुपान और उपयोग—इस रसका सर्व प्रकारके सन्निपातज्वरोंमें,—अधिक पसीना, शीतांग, प्रलाप, तन्द्रा, नाड़ीकी क्षीणता आदि लक्षणोंमें दोषोंका बलाबल देखकर अदरकका रस, पानका रस, चन्दनका घासा अथवा लवंग, ब्राह्मी, जटामांसी,

तगर और शङ्खाहुली इनका क्वाथ, इनमेंसे किसी एक अनुपानसे देवे। सूतिकाज्वरमें देवदार्वादि क्वाथके अनुपानसे देवे।

१४—हिंगुकर्पूरवटिका।

द्रव्य और निर्माणविधि—

घीमें सेंकी हुई हींग १ भाग, कर्पूर १ भाग, कस्तूरी ½ भाग ले। सबको एकत्र घोंटकर १-१ रत्तीकी गोलियां बना ले। कर्पूर और हींगको एकत्र घोंटनेसे प्रायः गोली बननेयोग्य हो जाता है। यदि न हो तो जरा शहद मिलावे।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—ठंडे जलसे गोली निगला दे। यदि रोगी गोली निगलनेमें समर्थ न हो तो गोलीको शहदमें या थोड़े अदरकके रसमें मिलाकर जीभपर लगा दे।

उपयोग—ज्वरमें सन्निपातके लक्षण देखते ही हिंगुकर्पूरवटी देवे। इससे नाड़ीकी गति सुधरती है और हाथ-पांव कांपना, कपड़ा फेंकना, उठ-बैठ करना, बकना आदि लक्षण कम होते हैं। श्वसनक ज्वरमें (न्यूमोनियामें) इससे कफ पतला होकर निकलने लगता है, कफकी दुर्गन्ध नष्ट होती है और कफके अन्दरके रोगजन्तु (कीटाणु) का नाश होता है। हृत्कम्प और दम्मेमें हिंगुकर्पूरवटीसे लाभ होता है।

स्व० वा० डा० बामन देशाई विरचितं औषधिसंग्रहसे किञ्चित्परिवर्तित।

१५—वसन्तमालती रस।

स्वर्णं मुक्ता च दरदं मरिचं भागवृद्धितः॥
खर्पराष्टौ कलांशं स्यान्नवनीतं पयोभवम्।
निम्बूकैर्मर्दयेत्तावद्यावत् स्नेहो लयं व्रजेत्।
मालती प्राग्वसन्तोऽयं रसो धातुज्वरं जयेत्॥
मात्रा गुञ्जाद्वयोन्माना कणामधुसमन्वितः।
प्रकुञ्चपञ्चके पञ्चनवतिर्निम्बुकान्यलम्॥

सिद्धभैषज्यमणिमाला ४ गुच्छ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सुवर्णकी भस्म अथवा सोनेके वर्क १ तोला, मोतीकी पिष्टी २ तोला, शुद्ध हिंगुल ३ तोला, काली मिर्चका कपड़छान चूर्ण ४ तोला, शुद्ध खपरिया अथवा जसद

की भस्म ८ तोला ले। प्रथम शुद्ध हिंगुलको पीसकर यदि सुवर्णकी भस्म ली हो तो सब द्रव्योंको एक साथ मिलाकर ३ घंटा मर्दन करे, यदि सोनेके वर्क लिये हों ता उसमें अन्य द्रव्य मिलाकर पीछे सोनेके वर्क एक एक कर मिलाता जावे और सोनेके सब वर्क अच्छी तरहसे मिल जायं तबतक मर्दन करता रहे। बाद उसमें दो तोला गायके दूधसे अथवा छाछसे निकाला हुआ मक्खन मिलाकर एक दिन मर्दन करे। पीछे कागजी नीबूका कपड़ेसे अच्छी तरह छाना हुआ रस मर्दन योग्य हो उतना (अधिक नहीं) प्रति दिन डालकर दिन भर मर्दन करे। एक बार डाला हुआ नीबूका रस सूखने पर ही दूसरा रस डाले। इस प्रकार जबतक मक्खनकी चिकनाई नष्ट न हो, तबतक नीबूके रसमें मर्दन करे। सामान्यतः मक्खनकी चिकनाहट निकलनेके लिये मध्यम कदके ९५ नीबूका रस आवश्यक होता है। पीछे १-१ रत्तीकी गोलियां बना छायामें सुखाकर रख ले। यह रस **वसन्तमालती** नामसे प्रसिद्ध है।

मात्रा—१ से २ रत्ती, सबेर-शाम दिनमें दो बार दे।

अनुपान—छोटी पीपलका चूर्ण २ रत्ती और मधुके साथ देकर ऊपरसे गौका दूध देवे अथवा सितोपलादि चूर्ण १ माशा और मधुके साथ मिलाकर देवे।

उपयोग—इसका उपयोग अभ्रक भस्म १ रत्ती, प्रवाल पिष्टी १-२ रत्ती, हरिण या साँभरके सींगकी भस्म २-४ रत्ती, गुडूचीसत्त्व १ माशा और सितोपलादि चूर्ण १ माशाके साथ मिलाकर मधु और दूधके अनुपानसे किया जाता है। यह योग जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा, रोगान्त दौर्बल्य, स्त्रियोंका श्वेतप्रदर, पांडुरोग, ग्रहणीरोग, अग्निमांद्य, गण्डमाला, अन्त्रक्षय, फुफ्फुसकलाशोथ, बालशोष (सूखा-फक्करोग) इन रोगोंमें विशेष लाभ देता है। यह जाठराग्नि और धात्वग्निकी परिपाक क्रियाको सुधारकर उनकी विकृतिसे होनेवाले सब रोगोंको दूर करता है और शरीरको बल, वर्ण तथा पुष्टि देता है।

१६—पुटपक्व विषमज्वरान्तक रस।

हिंगुलसंभवं सूतं गन्धकेन सुकज्जलम्।
पर्पटीरसवत् पाच्यं सूतांघ्रि हेमभस्मकम्॥
लौहमभ्रकताम्रं च रसस्य द्विगुणं क्षिपेत्।
टङ्कणं गैरिकं वङ्गं प्रवालं च रसार्धकम्॥

मुक्ता शङ्खं शुक्तिभस्म प्रदेयं रसपादिकम्।
निर्गुण्डीकनकद्रावैर्कालमेघरसेन च ॥
भावयित्वा प्रकुर्यात्तु गोलं संशोषयेत्ततः।
मुक्तागृहे च संस्थाप्य पुटपाकेन साधयेत् ॥
प्रातः सायं भक्षयेत्तु द्विगुञ्जाफलमानतः।
ज्वरमष्टविधं हन्ति, यथादोषानुपानतः ॥
प्लीहानं यकृतं शोथं कासं श्वासमथारुचिम।
ग्रहणीमामदोषं च मेहं पाण्डुं तथैव च ॥
पुटपक्वो रसः प्रोक्तो विषमज्वरनाशनः ॥

भैषज्यरत्नावलीसे किंचित परिवर्तित

द्रव्य और निर्माणविधि—

हिंगुलसे निकाला हुआ पारद १ तोला और शुद्ध गन्धक १ तोला दोनोंको खरलमें एकत्र मिला ऊपरसे थोड़े पानीके छींटे देकर उसमें पारदके सूक्ष्म कण भी न दिखें ऐसी कज्जली बनावे। पीछे उस कज्जलीकी रसपर्पटीके विधानसे पर्पटी बना ले। बाद पर्पटीको खरलमें डालकर मर्दन करे। जब सूक्ष्म हो जाय तब उसमें सोनेकी भस्म या वर्क $\frac{1}{4}$ तोला, लोह भस्म २ तोला, अभ्रक भस्म २ तोला, ताम्र भस्म २ तोला, शुद्ध सुहागा $\frac{1}{2}$ तोला, शुद्ध सोना गेरू $\frac{1}{2}$ तोला, बंग भस्म $\frac{1}{2}$ तोला, प्रवाल भस्म $\frac{1}{2}$ तोला, मोतीकी पिष्टी $\frac{1}{4}$ तोला, शंख भस्म $\frac{1}{4}$ तोला और मोतीकी सीपकी भस्म $\frac{1}{4}$ तोला एकत्र करके सम्भालूकी पत्ती, धतूरेकी पत्ती और कालमेघ इन तीनोंके स्वरसमें एक एक दिन मर्दन कर, उसका दो सीपके बीचमें रह सके ऐसा कुछ चिपटा गोला बनावे, बराबर मापकी दो मोतीकी सीप ले उसके दोनों किनारोंको संपुट ठीक बने ऐसा घिस उसमें गोलेको रखकर ऊपर एक कपड़ा लपेट दे। बाद उस कपड़ेके ऊपर पानीमें अच्छी तरह मसली हुई मिट्टीका दो अंगुल मोटा लेप करे। लेप थोड़ा सूखने पर उस सम्पुटको निर्धूम कंडोंकी आँचमें रखे। जब ऊपरकी मिट्टी कुछ लाल हो या भीतरसे गन्धकका गन्ध आने लगे तब उसको अग्निसे बाहर निकाल कर स्वांगशीतल होने दे। पीछे ऊपरकी मिट्टी हटा, सम्पुटसे रसका गोला निकाल, उसको खरलमें खूब बारीक पीसकर शीशीमें भर ले। इसको पुटपक्व विषमज्वरान्तक रस कहते हैं।

मात्रा—१-२ रत्ती ।

अनुपान और उपयोग—इसका उपयोग जीर्णज्वर, यकृत् और प्लीहाकी वृद्धियुक्त ज्वर, राजयक्ष्मा, पांडुरोग और प्रमेहमें गिलोयके स्वरस या क्वाथके साथ करे ; कास और श्वासमें अडूसेके स्वरसके साथ तथा आमदोष और ग्रहणी रोगमें भुने हुए जीरेका चूर्ण १ माशा और मधु ३ माशेके साथ करे ।

१७ महाज्वरांकुश रस ।

शुद्धसूतं विषं गन्धं धूर्तबीजं त्रिभिः समम् ।
चतुर्णां द्विगुणं व्योषं हेमक्षीरीविभावितम् ॥
चतुर्वारं घर्मशुष्कं चूर्णं गुञ्जाद्वयोन्मितम् ।
पक्वजम्बीरकद्रावैस्तथाऽऽर्द्र करसैर्युतम् ।
महाज्वरांकुशो नाम विषमज्वरनाशनः ॥

योगरत्नाकर ज्वराधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध बछनाग १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, शुद्ध धतूरेके बीज ३ भाग, काली मिर्च ४ भाग, सोंठ ४ भाग; छोटी पीपल ४ भाग लेवे । प्रथम पारे गन्धककी कज्जली कर उसमें अन्य औषधोंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला सत्यानाशीके स्वरसकी ४ भावना देकर दो दो रत्तीकी गोलियाँ बना ले । इसको महाज्वरांकुश रस कहते हैं ।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—विषमज्वरमें ज्वरका वेग उतरा हो उस समय ३-३ घंटेसे १-२ गोली जम्भीरी नीबू और अदरकके ३-३ माशे रसके साथ मिलाकर देवे या किसी विषमज्वरनाशक क्वाथके अनुपानसे देवे ।

१८—हरीतक्यादि वटी ।

हरीतकीशम्बलवेल्लजानां कुर्याद्वटीं वारिणि सर्षपाभाम् ।
वेगं रुणद्धि प्रथमं प्रदत्ता ज्वरस्य वेलेव महाम्बुराशेः ॥

सिद्धभैषज्यमणिमाला ज्वराधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

बड़ी हरडके दल(छाल)का चूर्ण, शुद्ध संखिया और कालीमिर्चका चूर्ण तीनों सम भाग

ले, जलमें एक दिन मर्दन करके उसकी सरसों बराबर गोलियां बना छायामें सुखा कर रख ले।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—शीतज्वरमें ज्वर उतरनेके बाद ३-३ घण्टेसे १-२ गोली गायके दूधके अनुपानसे देवें। इससे विषमज्वर (बारीसे आने-वाला ज्वर) नष्ट होता है।

१९—विषमुष्ट्यादि वटी।

संशोधितानां विषमुष्टिकानां तुल्यांशमारीचरजोयुतानाम्।
वट्यो विशालाफलवारिबद्धा विबन्धवातज्वरमुद्धरन्ति॥

सिद्धभैषज्यमणिमाला ज्वराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध कुचलेका चूर्ण और कालीमिर्चका चूर्ण समभाग ले, उसको इन्द्रायनके फलके रसमें १ दिन मर्दन करके दो दो रत्तीकी गोलियाँ बना ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली ३-३ घंटेसे जलके साथ खानेसे विषमज्वरको दूर करती है। ये गोलियां दीपन पाचन हैं और पेटके दर्दको भी दूर करती हैं।

वक्तव्य—कुचलेके ऊपर पहले थोड़ासा घी लगाकर उसको तवे पर जबतक वे बादामी रंगके होकर फूल जावें और नीचे उतारकर मुट्ठीसे ठोकने पर टूटने योग्य हो जावें तबतक सेंककर उसका उसी समय ही चूर्ण बना ले। इस प्रकार तैयार किया हुआ चूर्ण इस योगमें डाले।

२०—पञ्चतिक्तघनवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सप्तपर्ण (छतिवन) के वृक्षकी हरी-ताजी अन्तर छाल, करंजुए (कंजे, कंटको-करंज) की हरी ताजी पत्ती, गिलोय ताजी, काल मेघ और कुटकी सब समभाग ले। सप्तपर्ण (छतिवन) की छाल, करंजुएकी पत्ती, गिलोय और कालमेघ जलसे अच्छी तरह धोकर काढ़ा बनानेके योग्य अलग २ कूटे और कुटकीको भी काढ़ा बनाने योग्य जौकूट करे। पीछे सबको एक अच्छे कलईदार बर्तनमें अठगुने जलमें पकावे। जब अष्टमांश जल बाकी रहे तब नीचे उतारकर ठंडा होने दे। ठंडा होने

पर अच्छे कपड़ेसे उसको दो बार छान कर उसको कलईदार बर्तनमें डालकर पकावे। पकते पकते क्वाथ जब करछीको लगे इतना गाढ़ा हो, तब नीचे उतार कर बर्तनको धूपमें रखकर सुखावे। पीछे उसमें घन गोली बनने योग्य हो उतना अतीसका चूर्ण मिलाकर ३-३ रत्तीकी गोलियाँ बनावे। इसको **पंचतिक्तघन वटी कहते हैं।**

मात्रा और अनुपान—एक बारमें ३-३ गोली ३-३ घण्टेसे जलके अनुपानसे देवे।

उपयोग—विषमज्वरमें (पारीके बुखारमें) इसका उपयोग करे।

२१—सप्तपर्ण वटी

निर्माण विधि—

ऊपर लिखे हुए विधानसे सप्तपर्ण (छतिवन) की अंतरछालका घन बना, उसमें अतीसका चूर्ण गोली बन सके इतना मिलाकर ४-४ रत्तीकी गोलियां बनावे। इसका **सप्तपर्णवटी** या **सप्तपर्णघनवटी** नाम रखा गया है।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—३-३ घण्टेसे ३-३ गोलियाँ ठंडे जलके अनुपानसे देवे। इससे विषमज्वर दूर होता है।

२२—गुडूच्यादि क्वाथ।

गुडूचीधान्यकारिष्टरक्तचन्दनपद्मकैः।
गुडूच्यादिगणक्वाथः सर्वज्वरहरः स्मृतः॥
दीपनो दाहहृल्लासतृष्णाच्छर्द्यरुचीर्जयेत्।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गिलोय, धनिया, नीमकी अन्तरछाल, लालचन्दन और पद्माख ये पांचों द्रव्य समभाग ले, जौकूट करके रख ले। उसमेंसे १ तोला ले; चौगुने जलमें क्वाथ-विधिसे क्वाथ बनाकर देवे। इस प्रकार दिनमें ३-४ बार दे। यह क्वाथ सब प्रकारके ज्वर, दाह, जी मिचलाना, उलटी और अरुचिको दूर करता है तथा दीपन है।

वक्तव्य—इस क्वाथमें रोहिड़ाकी छाल, दारुहल्दी, सरफोंकाके मूल और पुनर्नवा (गदहपूरना—सांठी) के मूल ये चार द्रव्य और मिलाकर क्वाथ तैयार करनेसे वह यकृत् और प्लीहा (तिल्ली) के विकारोंमें अच्छा गुण देता है। यकृद्विकारमें इस क्वाथमें पिलाते समय ५—१० रत्ती शुद्ध नौसादर मिलानेसे अधिक लाभ होता है।

२३—षड़ङ्गपानीय ।

मुस्तपर्पटकोदीच्याचन्दनोशीरनागरैः ।
शृतशीतं जलं दद्यात् पिपासाज्वरशान्तये ॥

चरकसंहिता चि० अ० ३ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

नागरमोथ, पित्तपापड़ा, सुगन्धबाला, लालचन्दन, खस और सोंठ ये सब द्रव्य समभाग ले, जौकूट करके रख ले। इसमेंसे एक तोला लेकर उसको १२४ तोले जलमें मिट्टीके बर्तनमें पकावे। जब ६४ तोला जल रह जाय तब नीचे उतार ठंडा करके कपड़ेसे छान ले।

उपयोग—ज्वरवालेको जब प्यास लगे तब यह जल थोड़ा थोड़ा पीनेको दे। इससे प्यास कम होती है और ज्वरका वेग भी कम होता है। यह **षड़ङ्गपानीय** ज्वरमें उत्तम पाचन है। सब प्रकारके ज्वरमें इसका प्रयोग करे।

२४—कमलादि फांट ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कमलके फूल, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, खस, मुलेठी, नागरमोथा, धानका लावा और मिश्री सब मिलाकर २ तोला ले। उसको अधकचरा करके ६४ तोला उबलते हुए जलमें डालकर ठंडा होनेतक ढांककर रख छोड़े। ठंडा होनेपर कपड़ेसे छानकर उसमेंसे ज्वरवालेको थोड़ा थोड़ा करके पिलावे।

उपयोग—इस फांटसे हृदयका संरक्षण होता है, पेशाब साफ होता है, दाह कम होता है, दस्त पतले होते हों तो बंधते हैं तथा हृदयकी धड़कन और नाड़ीकी गति तीव्र हो तो वह कम होती है। तीव्र और चालू ज्वरमें अति उष्णतासे हृदयकी पेशी विकृत और शिथिल होती है, यदि आरंभसे ही यह फांट दिया जावे तो हृदयपर ये दोनों घातक क्रियाएँ नहीं होती हैं।

—स्व० वा० डा० वामन गणेश देसाईकृत औषधिसंग्रह ।

वक्तव्य—मैंने इस योगमें एक भाग अनन्तमूल (उत्पलसारिवा) मिलाकर प्रयोग किया है, इससे विशेष लाभ होता देखा गया है।

२

२५—गोजिह्वादि क्वाथ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गावजवान, मूलेठी, सौंफ, मुनक्का, अंजीर, उन्नाव, अडूसा, जूफा, सपिस्तान (सूखा लसोडा) खूबकलां (खाकसीर), हंसराज, गुलबनफ्सा और भटकटैया। प्रत्येक समभाग तथा कालीमिर्च आधा भाग ले, उनको अधकचरा करके रख छोड़े। इसमेंसे एक तोला ले उसको दस तोला जलमें पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़ेसे छान, उसमें ३ माशा मिश्री या मधु (शहद) मिलाकर दिनमें २-३ बार देवे।

उपयोग—प्रतिश्याय (जुकाम सर्दी) में, श्लेष्मज्वरमें तथा वह खांसी और श्वास जिसमें कफ जमा हुआ-गाढ़ा हो और सरलतासे न निकलता हो उसमें इस क्वाथसे बहुत लाभ होता है। इस क्वाथको केवल या इसमें ५ रत्ती नौसादर, ५ रत्ती यवक्षार और द्राक्षारिष्ट १-२ तोला मिलाकर उपयोग करे। कफज्वरमें त्रिभुवनकीर्ति, ज्वरसहार आदि योगोंके अनुपानरूपमें इसका अच्छा उपयोग होता है।

२६—तगरादि क्वाथ।

सतगरवरतिक्तारेवताम्भोदतिक्ता-
नलद तुरगगन्धाभारतीहारहूराः ।
मलयजदशमूलीशङ्खपुष्प्यः सुपीताः
प्रलपनमपहन्युः पानतो नातिदूरात् ॥

त्रिशती ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

तगर (यूनानी-आसारून), पित्तपापड़ा, अमलतासका गूदा, नागरमोथ, कुटकी, जटामांसी (बालछड़), असगन्ध, ब्राह्मी, मुनक्का, लाल चन्दन, दशमूल (शालपर्णी-सरिवन, पृश्निपर्णी-पिठवन, छोटा गोखरू, कटेरी-भटकटैया, बड़ी कटेरी-बरहंटा, बेल, गम्भारी, अरणी, सोनापाठा, पाडर—पाढल इनकी जड़ें) और शंखाहुली (कौड़ियाली) ये सब द्रव्य सम भाग लेकर अधकचरा-दरदरा कूटकर रख ले। इसमेंसे १ तोला ले १६ तोला जलमें पकावे। जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान कर देवे।

उपयोग—प्रलापक सन्निपातमें (सन्निपात ज्वरमें रोगी जब प्रलाप करने लगे तब) यह उत्तम योग है। इसका केवल या वृहत्कस्तूरीभैरव रसके अनुपानरूपमें उपयोग करे। यदि रोगीको दस्त पतले आते हों तो इसमेंसे कुटकी, अमलतास और मुनक्का निकाल कर इसका उपयोग करे।

२७—भार्ग्यादिकषाय।

भार्गीनिम्बघनाभयामृतलताभूनिम्बवासाविषा-
त्रायन्तीकटुकावचात्रिकटुकश्योनाकशक्रद्रुमैः।
रास्नायासपटोलपाटलित्रिवृद्दार्वीविशालानिशा-
ब्राह्मीपुष्करसिंहिकाद्वयशठीधात्र्यक्षदेवद्रुमैः॥
क्वाथोऽयं किल सन्निपातनिवहान् द्वात्रिंशदङ्गःक्षणा-
द्दुर्धर्षान्निजतेजसा विजयते सर्पान् गरुत्मानिव।
किञ्च श्वासबलासकासगुदरुग्हृद्रोगहिक्कामरु-
न्मन्यास्तम्भगलामयार्दितमलावष्टम्भवर्ध्मानपि॥

त्रिशती।

द्रव्य और निर्माणविधि—

भारगीका मूल, नीमकी अन्तर छाल, नागरमोथा, हड़, गिलोय, चिरायता, अडूसा, अतीस, त्रायमाण, कुटकी, बच, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, सोनापाठा, कुड़ाकी छाल, रासना, जवासा, कड़ुए परवलके पत्ते, पाडर, निसोथ, दारुहल्दी, इन्द्रायनकी जड़, हलदी, ब्राह्मी, पुष्करमूल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, कचूर, आंवला, बहेड़ा और देवदारु इन ३२ द्रव्योंको समभाग ले अधकचरा-दरदरा कूटकर रख ले। इसमेंसे एक तोला ले उसको १६ तोले जलमें पकावे। जब ४ तोला जल बाकी रहे तब उतारकर कपड़ेसे छान ले।

उपयोग—यह भार्ग्यादि क्वाथ आवश्यकतानुसार दिनमें २-३ बार अकेला या इसमें ५ रत्ती नौसादर और ५ रत्ती यक्षवार मिलाकर दे। यह क्वाथ कफज्वर, कफाधिक सन्निपातज्वर, श्वसनकज्वर (न्यूमोनिया), फुफ्फुसधराकलाशोथ (प्लुरसी), पार्श्वशूल, कफकास और श्वासको दूर करनेके लिये उत्तम योग है। इसको केवल या अभ्र और शृंगभस्मके अनुपानरूपमें दे।

२८—पटोलादिकषाय ।

पटोलत्रिफलानिम्बद्राक्षेन्द्रयवमुस्तकैः ।
मधुकामृतवासाभिः क्वाथं क्षौद्रयुतं पिबेत् ।
पटोलादिरयं क्वाथः सर्वज्वरनिवारणः ।

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं अ० २ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कडुए परवलके पत्ते, हड़, बहेड़ा, आंवला, नीमकी अन्तर छाल, मुनक्का, इन्द्र-जव, नागरमोथा, मुलेठी, गिलोय और अडूसा ये सब द्रव्य समभाग ले उसको अध-कचरा-दरदरा कूटकर रख ले । इसमेंसे १ तोला ले उसको १६ तोला जलमें पकावे । जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छानकर केवल या इसमें ५ रत्ती नौसादर और ५ रत्ती कलमीसोरा मिलाकर दिनमें ३-४ वार दे ।

उपयोग—इस पटोलादि क्वाथको सर्व प्रकारके ज्वरोंमें अकेला या त्रिभुवनकीर्ति, ज्वरसंहार, ज्वरांकुश, सप्तपर्णघनवटी आदि योगोंके अनुपानरूपमें दे ।

२६—अभयादिक्वाथ ।

अभयामुस्तधान्याकरक्तचन्दनपद्मकैः ।
वासकेन्द्रयवोशीरगुडुचीक्ततमालकैः ॥
पाठानागरतिक्ताभिः पिप्पलीचूर्णयुक् शृतम् ।
पिबेत्त्रिदोषज्वरजित् पिपासाकासदाहनुत् ॥
प्रलापश्वासतन्द्राघ्नं दीपनं पाचनं परम् ।
विण्मूत्रानिलविष्टम्भवमिशोषारुचीर्जयेत् ॥

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० २ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

हड़, नागरमोथा, धनिया, लालचन्दन, पद्माख, अडूसा, इन्द्रजव, खस, गिलोय, अमलतासका गूदा, पाढ़, सोंठ और कुटकी ये सब द्रव्य समभाग ले उनको अध-कचरा कूट कर रख ले । इसमेंसे एक तोला क्वाथ लेकर उसको १६ तोला जलमें पकावे । जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छानकर और उसमें ५ रत्ती छोटी पीपलका चूर्ण मिलाकर दे । ऐसी दिनमें २-३ मात्रा दे ।

गुण और उपयोग—यह अभयादि क्वाथ पाचन, दीपन, मल-मूत्र और वायुके बिबन्ध (कब्ज) को दूर करनेवाला तथा प्यास, खांसी, दाह, प्रलाप, श्वास, तन्द्रा, वमन, मुँहका सूखना और अन्नपर अरुचि इन लक्षणोंसे युक्त ज्वरको नष्ट करता है। सब प्रकारके ज्वरोंमें यह क्वाथ केवल या इसमें ५ रत्ती नौसादर और ५ रत्ती कलमीसोरा मिलाकर अकेला या अन्य ज्वरघ्न रसोंके अनुपानके रूपमें दे।

३०—देवदार्वादिकषाय।

देवदारु वचा कुष्ठं पिप्पली विश्वभेषजम्।
कट्फलं मुस्तभूनिम्बतिक्ता धान्यं हरीतकी॥
गजकृष्णा च दुःस्पर्शा गोक्षुरुर्धन्वयासकः।
बृहत्यतिविषा छिन्ना कर्कटं कृष्णजीरकम्॥
क्वाथमष्टावशेषं तु प्रसूतां पाययेत् स्त्रियम्।
शूलकासज्वरश्वासमूर्च्छाकम्पशिरोर्त्तिजित्॥

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० २।

द्रव्य और निर्माणविधि—

देवदार, बच, कूठ, छोटी पीपल, सोंठ, कायफलकी छाल, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी, धनिया, हड़, बड़ी पीपल, छोटी कटेरी, गोखरू, धमासा, बड़ी कटेरी, अतीस, गिलोय, काकड़ासींगी और श्याह जीरा ये सब द्रव्य समभाग ले उसको दर-दरा कूटकर रख ले। इसमेंसे १ तोला लेकर उसको १६ तोला जलमें पकावे। जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छानकर प्रसूता स्त्रीको पिलावे। इस प्रकार दिनमें २-३ बार आवश्यकतानुसार दे।

उपयोग—यह देवदार्वादि क्वाथ प्रसुतिज्वरमें उत्तम है। इसका केवल या बृहत्कस्तूरीभैरवके अनुपानरूपमें उपयोग करे। इससे शूल, खांसी, श्वास, मूर्च्छा, कम्प, शिरका दर्द और तन्द्रा-प्रलाप आदि उपद्रव युक्त सुतिकाज्वर दूर होता है। यदि प्रलाप हो तो इस क्वाथमें लौंग, ब्राह्मी, जटामांसी, तगर, शंखाहुली और खुरासानी अजवायन १-१ भाग और मिलावे। प्रसूता स्त्रीको प्रसव दिनसे ही देवदार्वादिक्वाथ और दशमूलक्वाथ दोनों मिलाकर प्रातःकालमें देनेसे प्रायः सूतिकोपद्रव होते ही नहीं।

३१—दशमूलक्वाथ ।

शालपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।
बिल्वाग्निमन्थश्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः ॥
दशमूलमिति ख्यातं क्वथितं तज्जलं पिबेत् ।
सन्निपातज्वरहरं सूतिकादोषनाशनम् ॥
शोषशैत्यभ्रमस्वेदकासश्वासविकारनुत् ।
हृद्रोगशोथपार्श्वार्तितन्द्रामस्तकशूलहृत् ॥

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० २ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सरिवन, पिठवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरू, बेल, अरणी, सोनापाठा, गंभारी और पाडर इन द्रव्योंका मूल ले उनको अधकचरा कूट कर रख ले। इसमेंसे १ तोला लेकर १६ तोले जलमें पकावे। जब ४ तोला जल बाकी रहे तब नीचे उतार कपड़ेसे छानकर पिलावे। यह क्वाथ आवश्यकतानुसार दिनमें २-३ बार दे।

उपयोग—मुँहका सूखना, हाथ पांव आदि अवयवोंका ठंडापन, चक्कर आना, पसीना अधिक आना, खांसी, श्वास, छाती तथा पसलीकी पीड़ा, तन्द्रा और शिरके दर्द युक्त सन्निपातज्वर, सूतिकाज्वर और शोथमें इसका प्रयोग करे। यदि सन्निपातज्वरमें प्रलाप और नींद न आना ये उपद्रव भी हों तो इस क्वाथमें लौंग, ब्राह्मी, जटामांसी, तगर, शंखाहुली और सर्पगन्धा (चांदड़-धनमरवा) ये द्रव्य १-१ भाग और मिलावे।

३२—बृहद्गुडूच्यादि क्वाथ ।

गुडूचीधान्यकोशीरशुण्ठीबालकपर्पटैः ।
बिल्वप्रतिविषापाठारक्तचन्दनवत्सकैः ॥
किरातमुस्तेन्द्रयवैः क्वथितं शिशिरं पिबेत् ।
सक्षौद्रं रक्तपित्तघ्नं ज्वरातीसारनाशनम् ॥

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० २ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गिलोय, धनिया, खस, सोंठ, सुगन्धवाला, पित्तपापड़ा, बेल, अतीस, पाढ, लाल-

चन्दन, कुड़ाकी छाल, चिरायता, नागरमोथा और इन्द्रजव ये सब द्रव्य सम भाग ले उसको दरदरा कूटकर रख ले। इसमेंसे १ तोला लेकर उसको १६ तोला जलमें पकावे। जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, ठंडा कर उसमें आधा तोला मिश्री या मधु (शहद) मिलाकर देवे।

उपयोग—जब ज्वरके साथ अतिसार भी हो तब इसका उपयोग करे। यदि २-३ दिन इसका प्रयोग करने पर भी दस्त बन्द न हो तो महागन्धक योग देकर ऊपरसे यह क्वाथ अनुपानरूपमें देवे।

वक्तव्य—भैषज्यरत्नावलीमें इस योगमें पित्तपापड़ाके स्थानमें पद्माख डालने को लिखा है। यदि पित्तपापड़ा और पद्माख दोनों डालें तो अच्छा काम होता है।

३३—सुदर्शनचूर्ण।

त्रिफला रजनीयुग्मं कण्टकारियुगं शटी।
त्रिकटु ग्रन्थिकं मूर्वा गुडूची धन्वयासकः॥
कटुका पर्पटो मुस्तं त्रायमाणाच बालकम्।
यवानीन्द्रयवा भार्गी शिग्रुबीजं सुराष्ट्रजा॥
वचात्वक्पद्मकोशीरं चन्दनातिविषाबलाः।
शालिपर्णी पृश्निपर्णी विडङ्गं तगरं तथा॥
चित्रको देवदारुश्च चव्यं पत्रं पटोलजम्।
यवतिक्ता नक्तमालो लवङ्गं वंशलोचना॥
पुण्डरीकं च काकोलीपत्रकं जातिपत्रकम्।
तालीसपत्रं च तथा समभागानि चूर्णयेत्॥
सर्वचूर्णस्य चार्धांशं कैरातं प्रक्षिपेत् सुधीः।
एतत् सुदर्शनं नाम चूर्णं दोषत्रयापहम्॥
ज्वरांश्च निखिलान् हन्यान्नात्र कार्या विचारणा।
श्वासं कासं च पाण्डुंच हृद्रोगं हन्ति कामलाम्॥
त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूल निवारणम्।

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० ६।

द्रव्य और निर्माणविधि—

हरड़, बहेड़ा, आँवला, हल्दी, दारुहल्दी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी (बरहंटा), कचूर, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, पीपलामूल, मूर्वा, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, त्रायमाण, नेत्रवाला, अजवायन, इन्द्रजव, भारङ्गमूल, सहिंजने के बीज, फिटकरी आगपर फुलाई हुई, बच, दालचीनी, पद्माख, खस, सफेद चन्दन, अतीस, बरियारके मूल, सरिवन, पिठवन, वायबिडङ्ग, तगर, चित्रक, देवदार, चव्य, कड़ुए परवलकी पत्ती, कालमेघ, करंजुए (कंजे) के फलका मगज, लौंग, वंशलोचन, कमल, काकोली (अभावमें शकाकुल मिश्री), तेजपात, जावित्री और तालीसपत्र ये सब सम भाग लेकर सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण करे । पीछे सब चूर्णका जितना प्रमाण हो उससे आधा चिरायतेका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिलाकर बोतलमें भर ले ।

मात्रा—३ से ६ माशा ।

अनुपान—ठंढा या गरम जल ।

उपयोग—इस चूर्णका सब प्रकारके ज्वरमें विशेष करके बात और कफ प्रधान ज्वरोंमें चूर्ण, फांट या हिमके रूपमें उपयोग होता है । सुदर्शन चूर्ण १ तोला, पित्तपापड़ेका चूर्ण ३ माशा, ताजी कुटी हुई गिलोय ६ माशा, शिलाजतुके स्थानमें कलमी सोरा डालकर बनाई हुई चन्द्रप्रभा १॥ माशा इन सबको १६ तोला उबलते हुए जलमें मृत्पात्रमें ६-९ घंटा भिगो, हाथसे मसल, छानकर शीशीमें भरकर ४ भाग करे । इसमेंसे ३-४ घंटेसे एक भाग देनेसे ज्वरका सन्ताप कम होकर ज्वर उतर जाता है । सामान्य (एक दोषज और द्वन्द्वज) ज्वरोंमें ज्वरका वेग कम करनेके लिये यह उत्तम योग है ।

३४—सुदर्शनमिश्रण ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सुदर्शन चूर्ण १० तोला, शुद्ध सज्जीखार या सोडा बाई कार्ब २ तोला, विषमुष्ट्यादि वटीमें कहे हुए प्रकारसे बनाया हुआ कुचलेका चूर्ण १ तोला, आगपर फुलाई हुई लाल फिटकिरी १॥ तोला सबको अच्छी तरह एकत्र मिलाकर रख ले ।

मात्रा—३ माशा ।

अनुपान - जल ।

उपयोग—सर्दीसे होनेवाले ज्वरमें और विषमज्वरमें (मलेरियामें) इस योगसे अच्छा लाभ होता है ।

—*—

अतिसार=प्रवाहिका=ग्रहण्यधिकार २।

१—धान्यपञ्चक क्वाथ।

धान्यवालकबिल्वाब्दनागरैः साधितं जलम्।
धान्यपञ्चकमेतत् स्याद् ग्राहि दीपनपाचनम्॥
इदं धान्यचतुष्कं स्यात् पित्ते शुण्ठीं विना पुनः।

चक्रदत्त-चिकित्सा अतिसाराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

धनिया, खस, कच्चे बेलकी गिरी, नागरमोथा और सोंठ सम भाग ले जौकूट चूर्ण करके रख ले। इसमेंसे एक तोला ले उसको दश तोला जलमें पकावे। जब चार तोला जल बाकी रहे तब ठंढा कर स्वच्छ कपड़ेसे छान कर देवे। ऐसे आवश्यकतानुसार दिनमें २-३ बार देवे। इस क्वाथको **धान्यपञ्चक** कहते हैं। यदि पित्तातिसारमें इसका प्रयोग करना हो तो इसमेंसे सोंठ निकाल देना चाहिये। तब इसको **धान्यचतुष्क** कहते हैं।

गुण और उपयोग—यह क्वाथ उत्तम पाचन, दीपन और ग्राही है। सब प्रकारके अतिसारमें इसका प्रयोग होता है। पित्तातिसार और रक्तातिसारमें इसका प्रयोग करना हो तो इसमें सोंठके स्थान पर सौंफ डालकर इसका प्रयोग करे। इस क्वाथका अकेला या महागन्धक योग आदिके अनुपानरूपमें प्रयोग करे।

२—वत्सकादि कषाय।

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः सोदीच्यमुस्तश्च कृतः कषायः।
सामे सशूले सहशोणिते च चिरप्रवृत्तेऽपि हितोऽतिसारे।

चक्रदत्त-चिकित्सा अतिसाराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुडाकी छाल या इन्द्रयव, अतीस, बेलगिरी, नेत्रबाला और नागरमोथा सब सम भाग लेवे और उसको जौकूट करके रख ले।

मात्रा—इसमेंसे एक तोला क्वाथ १६ तोले जलमें पका, ४ तोला जल बाकी रहे तब स्वच्छ कपड़ेसे छानकर पिलावे।

उपयोग—शूल, आम और रक्तयुक्त नये और पुराने अतिसारमें इससे अच्छा लाभ होता है ।

३—ह्रीवेरादि कषाय ।

ह्रीबेरधातकीलोध्रपाठालज्जालुवत्सकैः ।
धान्यकातिविषामुस्तगुडूचीबिल्वनागरैः॥
कृतः कषायः शमयेदतिसारं चिरोत्थितम् ।
अरोचकामशूलास्रज्वरघ्नः पाचनः स्मृतः ॥

शार्ङ्गधर म० खं० अ० २ ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

खस, धायके फूल, लोध, पाढ़, लाजवन्ती, कुड़ाकी छाल, धनिया, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, बेलगिरी और सोंठ सब समभाग ले । सबको एकत्र जौकूट करके रख ले ।

मात्रा—इसमेंसे १ तोला द्रव्यको १६ तोले जलमें पकाकर जब ४ तोला जल बाकी रहे तब ठण्डा होनेपर स्वच्छ कपड़ेसे छानकर रोगीको देवे ।

उपयोग—इस कषायका अरुचि, आमशूल, रक्त और ज्वरयुक्त सब प्रकारके नये या पुराने अतिसारमें प्रयोग करे ।

४—कुटजघनवटी ।

निर्माण विधि—

कुडाके मूलकी या वृक्षकी ताजी हरी छाल ला, और उसको जलसे धोकर जौकूट कर १६ गुने जलमें पकावे । जब आठवां हिस्सा जल बाकी रहे तब उसको नीचे उतार कर ठंडा होनेपर स्वच्छ मजबूत कपड़ेसे छान ले । फिर उसको प्रारम्भमें मध्यम और पीछे मन्द अग्निपर पकावे और लकड़ीके खोंचेसे हिलाता रहे । जब क्वाथ गाढ़ा होकर खोंचेमें लगने लगे तब नीचे उतार कर सूर्यकी धूपमें गाढ़ा हो तबतक सुखावे । पीछे इसमें अतीसका चूर्ण गोली बनने योग्य मिलाकर ३-३ रत्तीकी गोलियां बनाकर सुखा ले ।

मात्रा—२-४ गोली दिनमें ३-४ बार ठंडे जलके अनुपानसे देवे ।

उपयोग—अतिसार, ग्रहणी और ज्वरमें जब दस्त पतले आते हों तब इसके प्रयोगसे अच्छा लाभ होता है ।

५—बिल्वादि चूर्ण ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कच्चे बेलकी गिरी १ भाग, मोचरस ५ भाग, सोंठ एक भाग, जलसे धोकर सुखाई हुई भांग १ भाग, धायके फूल एक भाग, धनिया २ भाग और सौंफ ४ भाग लेवे । प्रथम बेलकी गिरी, सोंठ और मोचरसको सरौतेसे छोटे छोटे टुकड़े करे । पीछे सब द्रव्योंको एकत्र कर छोटी कड़ाहीमें मन्द आंचपर सौंफकी थोड़ी सुगन्ध आने लगे इतना सेंक, कूटकर कपड़छान चूर्ण करे ।

मात्रा—१-३ माशा ।

अनुपान—ठंडा जल, दाड़िमका रस या छाछ ।

समय—३-४ घंटेसे दिनमें ४-५ बार दे ।

गुण और उपयोग—यह उत्तम पाचन, दीपन और ग्राही है । अतिसारमें केवल या रसपर्पटीके साथ मिलाकर दे । प्रवाहिका (पेचिस-मरोड़के साथ आंव और रक्त मिला हुआ दस्त आना) में समभाग जरासा घी या एरण्ड तेल लगाकर सेंकी हुई छोटी हरड़का चूर्ण समभाग मिलाकर अर्क सौंफ या इसबगोलके लुआबके साथ दे । प्रवाहिकाके लक्षण जैसे जैसे कम होते जावें वैसे छोटी हरड़के चूर्णका प्रमाण कम करना चाहिये । ग्रहणी रोगमें रसपर्पटी, पञ्चामृतपर्पटी, सुवर्णपर्पटी आदि पर्पटीके योगोंके साथ मिलाकर दे । अतिसारमें आरम्भसे रोग अच्छा होने तक किसी भी अवस्थामें इसका प्रयोग कर सकते हैं ।

६—जातीफलादि चूर्ण ।

जातीफल लवङ्गैलापत्रत्वङ्नागकेशरैः ।
कर्पूरचन्दनतिलैस्त्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥
तालीसपिप्पलीपथ्यास्थूलजीरकचित्रकैः ।
शुण्ठीविडङ्गमरिचैः समभागविचूर्णितैः ॥
यावन्त्येतानि सर्वाणि कुर्याद्भङ्गां च तावतीम् ।
सर्वचूर्णसमा देया शर्करा च भिषग्वरैः ॥
शाणमात्रं ततः खादेन्मधुना प्लावितं सुधीः ।
अस्य प्रभावाद् ग्रहणीकासश्वासोदरामयाः ॥

वातश्लेष्मप्रतिश्यायाः प्रशमं यान्ति वेगतः ।
चूर्णं जातीफलाद्यं तु दीपनं रोचनं परम् ॥

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० ६ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जायफल, लौंग, छोटी इलायची, तेजपात, दारचीनी, नागकेशर, कपूर, श्वेत चन्दन, धोये हुए तिल, वंशलोचन, तगर (यूनानी-आसारून), आँवले, तालीसपत्र, छोटी पीपल, हरड़, कलौंजी, चित्रकके मूलकी छाल, सोंठ, बायबिडंग और कालीमिर्च, प्रत्येक एक एक भाग, जलसे धोके सुखाई हुई भाँग २० भाग और मिश्री ४० भाग लेकर सबका कपड़छान चूर्ण करे ।

मात्रा—१-२ माशा । दिनमें ३-४ मात्रा यथावश्यक दे। अनुपान मधु या जल ।

गुण और उपयोग—यह चूर्ण दीपन, पाचन, ग्राही और अन्न पर रुचि उत्पन्न करनेवाला है । अतिसार, ग्रहणीरोग, खाँसी दमा, वातरोग, श्लेष्मरोग और प्रतिश्याय (जुकाम) में इसका उपयोग करे ।

७—बृहन्नायिका चूर्ण ।

चित्रकं त्रिफला व्योषं विड़ङ्गं रजनीद्वयम् ।
बालविल्वं यवानी च हिङ्गुर्लवणपञ्चकम् ॥
गृहधूमो वचा कुष्ठं घनमभ्रकगन्धकम् ।
क्षारत्रयं चाजमोदा पारदः शतपुष्पिका ॥
कलिङ्गातिविषेधान्यं चव्यं जातिफलं समम् ।
अमीषां चूर्णकं यावत्तावच्छक्राशनस्य च ॥
नायिकाचूर्णमेतद्धि संग्रहग्रहणीं जयेत् ।
सर्वातिसारहरणमग्निसन्दीपनं परम् ॥

भैषज्यरत्नावली ग्रहण्यधिकार । किञ्चित् परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

चित्रकके मूलकी छाल, हरड, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, वायबिड़ङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, कच्चे बेलकी गिरी, अजवायन, गायके घीमें भुनी हुई हींग, सैन्धव, सामुद्रलवण, सांभरलवण, नौसादर, सोंचर (कालानमक), गृहधूम,

बच, कूठ, नागरमोथा, अभ्रक भस्म, शुद्ध गन्धक, सज्जीखार, जौखार, अग्निपर फुलाया हुआ सुहागा, अजमोदा, शुद्ध पारद, सौंफ, इन्द्रयव, अतीस, धनिया, चव्य (चाव) और जायफल प्रत्येक एक एक भाग, जलसे धोकर सुखाई हुई भाँग सबके बराबर । प्रथम पारे गन्धककी कज्जली करके पीछे अन्य द्रव्योंका कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला ३ घंटा मर्दन करके बोतलमें भर ले ।

मात्रा—१-३ माशा दिनमें ३-४ बार देवे ।

अनुपान—जल, छाछ या दाड़िमका रस ।

उपयोग—यह चूर्ण जठराग्निका दीपन करनेवाला, पाचन और ग्राही है । अग्निमान्द्य, अतिसार और ग्रहणीमें इससे विशेष लाभ होता है ।

८—हिंगुल योग ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

लोहेकी बड़ी कड़ाहीमें ४० तोले दो टुकड़े किये हुए भिलावे बिछा, ऊपर ४० तोले हिंगुलके ५-५ तोलेके ८ टुकड़े थोड़ी थोड़ी दूरमें रख, उसके ऊपर ४० तोला एरण्ड तेल, ४० तोला गायका घी और ४० तोला शहद डाल कर मन्दाग्निपर पकावे । पकते पकते जब उसमें ज्वाला उठने लगे तब नीचे अग्नि देना बन्द करे । स्वांगशीतल होने पर हिंगुलके टुकड़ोंको निकाल, कपड़ेसे पोंछ कर २-३ दिन खरलमें पीसे । पीछे उसमें जायफल, जावित्री और लौंग प्रत्येकका ४०-४० तोला चूर्ण मिला, ३ दिन मर्दन करके शीशीमें भर ले ।

मात्रा और अनुपान—२-४ रत्ती, कपड़ेमें बाँध कर जल निकाले हुए दहीमें मिलाकर सवेरे-शाम दिनमें दो बार देवे ।

पथ्य—कपड़ेमें बाँध कर जल निकाले हुए दहीपर रोगीको रखे । यदि प्याससे रोगी न रह सके तो बेदाने अनारका रस देवे ।

उपयोग—पुराने अतिसार और ग्रहणीमें इसका उपयोग करे ।

९—महागन्धकयोग ।

रसगन्धकयोः कर्षं ग्राह्यमेकं सुशोधितम् ।
ततः कज्जलिकां कृत्वा मृदुपाकेन साधयेत् ॥
जात्याः फलं तथा कोशो लवङ्गारिष्टपत्रके ।

एतेषां कर्षमात्रं हि तोयेन सह मर्दयेत् ॥
मुक्तागृहे ततः स्थाप्यं पुटपाकेन साधयेत् ।
गुञ्जाषट्कप्रमाणेन तोयेन सह भक्षयेत् ॥
महागन्धकमेतद्धि सर्वातिसारनाशनम् ।
दुर्वारं ग्रहणीरोगं जयेच्चैव प्रवाहिकाम् ॥

भैषज्यरत्नावली अतिसाराधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, जायफल, जावित्री, लौंग और नीमकी ताजी कोमल पत्ती प्रत्येक समभाग लेवे। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली कर उसको घीसे पोती हुई लोहेकी करछीमें रख कोयलेकी मन्द आँच पर कज्जली सब द्रव हो जाय इतनी गरम कर नीचे उतार स्वांग शीतल होनेपर करछीसे निकाल खरलमें पीस कर सूक्ष्म चूर्ण करे। पीछे जलसे धोई हुई नीमकी पत्ती डालकर खूब मर्दन करे। बाद अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण करके उसमें थोड़ा जल देकर ६ घंटा मर्दन करे। पीछे उसका गोला बना दो मोतीकी सीपमें उस गोलेको रखकर विषमज्वरान्तकरसमें लिखी हुई विधिके अनुसार पुटपाक करे। पुटपाक तैयार होनेपर भीतरका गोला निकाल पीस ३-३ रत्तीकी गोली बना छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—जल, मीठे दाड़िमका रस, चावल भिगोया हुआ जल या कोई अतिसारहर क्वाथके अनुपानसे देवे।

गुण और उपयोग—यह उत्तम पाचन, दीपन और ग्राही योग है। अतिसार, प्रवाहिका और ग्रहणीरोगमें इससे अच्छा लाभ होता है।

१०—पीयूषवल्ली रस ।

सूतकं गन्धकं चाभ्रं तारं लौहं सटङ्कणम् ।
रसाञ्जनं माक्षिकं च जातीपत्री यवानिका ॥
लवङ्गं चन्दनं मुस्तं पाठा जीरकधान्यकम् ।
समङ्गाऽतिविषा लोध्रं कुटजेन्द्रयवत्वचम् ॥
जातीफलं बिल्वनिम्बं कनकं दाड़िमच्छदम् ।

अभया धातकी कुष्ठं प्रत्येकं समभागिकम् ॥
भावयेत् सर्वमेकत्र भृङ्गराजरसैः पुनः।
भावना सप्त दातव्याश्चणकाभां वटीं चरेत् ॥
पक्वापक्वमतीसारं नानावर्णं सवेदनम्।
ग्रहणीं चिरजां हन्ति रक्तातीसारमुल्वणम् ॥
रसः पीयूषवल्ल्याख्यः संग्राही पाचनस्तथा।

भैषज्यरत्नावली ग्रहण्यधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, रौप्यभस्य, लोहभस्म, अग्निपर फुलाया हुआ सुहागा, रसौत, माक्षिकभस्म, जावित्री, अजवायन, लौंग, श्वेतचन्दन, नागरमोथा, पाढ, जीरा, धनिया, लाजवन्ती, अतीस, लोध, कुड़ाकी छाल, इन्द्रयव, दालचीनी, जायफल, बेलगिरी, नीमकी पत्ती, शुद्ध धतूरेके बीज, दाड़िमका छिलका, हरड़, धायके फूल और कूठ प्रत्येक समभाग लेवे। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली कर उसमें अन्य भस्में तथा औषधोंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिलाकर भांगरेके रसमें सात दिन मर्दन करके चने बराबर गोलियां बना ले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—ठंडा जल, इसबगोलका लुआब या बेल फलका शरबत।

गुण और उपयोग—यह पीयूषवल्ली रस पाचन और ग्राही है तथा किसी भी प्रकारके अतिसार और ग्रहणीको दूर करता है।

वक्तव्य—महागन्धक और पीयूषवल्ली ये दोनों अफीम रहित उत्तम पाचक और ग्राही योग हैं। जहां विल्वादिचूर्ण आदि भांगयुक्त योगोंसे लाभ न हो वहां इनमेंसे किसीका प्रयोग करे।

११—नृपतिवल्लभ रस।

जातीफललवङ्गाब्दत्वगेलाटङ्करामठम्।
जीरकं तेजपत्रं च यवानीविश्वसैन्धवाः ॥
लौहमभ्रं रसो गन्धस्ताम्रं प्रत्येकशः पलम्।
मरिचं द्विपलं धात्र्याः स्वरसेन विमर्दयेत् ॥

अग्निमान्द्यभवान् रोगान् यकृद्दोषभवांस्तथा।
ग्रहणीं च तथा हन्ति रसो नृपतिवल्लभः॥

भैषज्यरत्नावली ग्रहण्यधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जायफल, लौंग, नागरमोथा, दालचीनी, छोटी इलायची, आगपर फुलाया हुआ सुहागा, घीमें भुनी हुई हींग, जीरा, तेजपात, अजवायन, सोंठ, सेन्धानमक, लोहभस्म, पारद, गन्धक और ताम्रभस्म प्रत्येक ४-४ तोला और कालीमिर्च ८ तोला लेवे। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली बना, उसमें अन्य भस्म और बनस्पतियोंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, आंवलेके स्वरसकी सात भावना दे, ३-३ रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखा ले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—जल या छाछ।

उपयोग—अग्निमान्द्य और उनसे होनेवाले रोग तथा यकृत्के दोषयुक्त ग्रहणी रोगमें यह उत्तम योग है।

१२—कर्पूरादि वटी।

कर्पूरं चाहिफेनं च मुस्तकेन्द्रयवं तथा।
जातीफलं च दरदं टङ्कणं मर्दयेत् समम्॥
जलेन वटिका कार्या द्विगुञ्जाफलमानतः।
कर्पूराद्या वटी देया पक्वातीसाररोगिणे॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपूर, शुद्ध अफीम, नागरमोथा, सेंका हुआ इन्द्रयव, जायफल, शुद्ध हिंगुल और आगपर फुलाया हुआ सुहागा प्रत्येक समभाग लेवे। प्रथम हिंगुल, अफीम और कपूर को जलसे मर्दन करे। उनके अच्छी तरह मिल जाने पर अन्य वस्तुओंका सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिलाकर ३ घण्टा जलसे मर्दन कर, दो दो रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखाले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—जल।

उपयोग—कर्पूरादि बटीका उपयोग अतिसारमें मलके पक्व होनेके लक्षण दीखें और बिल्वादि चूर्ण आदि पाचन-ग्राही योगोंसे लाभ न हो और स्तम्भन औषधकी आवश्यकता पड़े तब केवल अथवा बिल्वादि या जातीफलादि चूर्णके साथ मिलाकर दे।

१३—लवङ्गाभ्रकयोग।

लवङ्गातिविषे मुस्तं पाठा बिल्वं सधान्यकम्।
धातकी मोचकं जीरं लोध्रमिन्द्रयवं तथा॥
बालकं सर्जकं शृङ्गी सैन्धवं नागरं कणा।
वाट्यालकं यवक्षारमहिफेनं रसाञ्जनम्।
प्रत्येकं कर्षमानं स्याद्गगनं पञ्चकार्षिकम्॥
सर्वेषां तुल्यभागानि लवङ्गानि प्रदापयेत्।
मुस्तायाः स्वरसेनैव भावयित्वा विशोषयेत्॥
लवङ्गाभ्रकयोगोऽयं सर्वातीसारनाशनः।
ग्रहणीं चिरजां हन्ति वह्निमान्द्यं प्रवाहिकाम्॥
नाशयत्यम्लपित्तं च ग्राही दीपनपाचनः।

भैषज्य रत्नावली अतीसाराधिकारसे किञ्चित् परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

लौंग, अतीस, मोथ, पाढ, बेलगिरी, धनिया, धायके फूल, मोचरस, जीरा, लोध, इन्द्रयव, खस, राल, काकड़ासिङ्गी, सेन्धानमक, सोंठ, छोटी पीपल, खरैंटीके मूल, जवाखार, शुद्ध अफीम और रसोत सब एक एक भाग, अभ्रक भस्म ५ भाग तथा लौंग सबके बराबर ले। सबका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, नागरमोथाके स्वरस या क्वाथकी ३ भावनाएँ देकर ३–३ रत्तीकी गोलियाँ बना ले या छायामें सुखाकर चूर्णरूपमें रख ले।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—इसकी १-२ गोली या ३-६ रत्ती चूर्ण जलके अनुपानके साथ दिनमें ३-४ बार सब प्रकारके अतिसार, ग्रहणी, प्रवाहिका और अम्लपित्तमें दे। यह योग ग्राही, दीपन, पाचन और स्तम्भन है।

१४—नागकेशरादि चूर्ण ।

नागकेशर तोला ४, बेलगिरी तोला २, अनीसून तोला २, सौंफ तोला २, खसखस तोला १, छोटी इलायची तोला १, धनिया तोला १, मोचरस तोला १, खस तोला १, सफेद चन्दन तोला १, गुलाबके फूल तोला १, कपूरकचरी तोला १, जलसे धोकर सुखाई हुई भाँग तोला ४ और मिसरी तोला ५ ले, सबका एकत्र कपड़छान चूर्ण करके रख ले ।

(स्व० वा० वैद्य हरिप्रसाद गंगाधर आचार्यसे प्राप्त)

मात्रा—२-३ माशा ।

अनुपान—जल ।

उपयोग—पित्तातिसार और रक्तातिसारमें यह उत्तम योग है। यह चूर्ण अकेला या रसपर्पटीके साथ मिलाकर दे ।

१५—संग्राहक चूर्ण ।

बेलगिरी, मोचरस, दाड़िमके फूल, माजूफल, तुख्म, हुमाम्भ, जुफ्त, बलूत, छोटी मांई (गुजराती पड़वास), हब्बूल्लासकी पत्ती तथा आम और जामुनकी गुठली सब समभाग ले, एकत्र कपड़छान चूर्ण करके रख ले ।

मात्रा—१॥-३ माशा ।

अनुपान—कपड़ेमें बांधकर पानी निकाला हुआ दही । यह पक्वातिसार और पक्वप्रवाहिकामें उत्तम ग्राही औषध है ।

(स्व० बा० हकीम रामनारायणजीसे प्राप्त)

१६—रसपर्पटी ।

जयैरण्डभृङ्गराजकाकमाचीरसैः क्रमात् ।
रसं संशोध्य यत्नेन तत्समं शोधयेद् बलिम् ॥
गन्धकं क्षुद्रितं कृत्वा भाव्यं भृङ्गरसेन तु ।
सप्तधा वा त्रिधा वाऽपि पश्चाच्छुष्कं विचूर्णितम् ॥
घृतालिप्ते लौहपात्रे दत्त्वा वह्नौ प्रतापयेत् ।
द्रुतं भृङ्गरसे क्षिप्तं तत उद्धृत्य शोषयेत् ॥
एतं शुद्धं रसं गन्धं योजयेत् पर्पटीरसे ।

रसगन्धौ समौ कृत्वा दृढे खल्वे विमर्दयेत् ॥
नष्टसूतं यदा चूर्णं भवेत् कज्जलसन्निभम्।
घृतालिप्ते लोहपात्रे तदा तं स्थापयेद् बुधः ॥
तं पात्रं स्थापयेदन्ये बालुकास्तीर्णपात्रके।
निर्धूमे बदराङ्गारे द्रवीकुर्यात् प्रयत्नतः ॥
महिषीमलविन्यस्ते तत्र तं कदलीदले।
निक्षिप्य तदुपर्यन्यत् पत्रं दत्त्वा प्रपीड़येत् ॥
शीतलत्वं गते पत्रात् समुद्धृत्य विचूर्णयेत्।
विधिरेष तु विज्ञेयः सर्वासु पर्पटीष्वपि ॥
एवं सिद्धा भवेद् व्याधिघातिनी रसपर्पटी ॥
रक्तिकासंमितां प्रातर्भृष्टजीरकसंयुताम्।
गुञ्जार्धभृष्टहिङ्ग्वाढ्यां भक्षयेद्रसपर्पटीम् ॥
रोगानुरूपभैषज्यैरपि तां योजयेद् बुधः।
अनुपेयं पयस्तक्रं दाडिमादिरसोऽपि वा ॥
प्रत्यहं वर्धयेत्तस्या ह्येकैकां रक्तिकां भिषक्
नाधिकां दशगुञ्जातो भक्षयेत्तां कदाचन ॥
आरोग्यदर्शनं यावद्भक्षयेद्दशरक्तिकाम्।
आरोग्यदर्शनादूर्ध्वं तां तथैवापकर्षयेत् ॥
क्रम एष तु विज्ञेयः सर्वासु पर्पटीष्वपि।
जीर्णज्वरं च ग्रहणीं तथाऽतीसारमेव च ॥
पाण्डुरोगं वह्निमान्द्यं यकृत्प्लीहजलोदरान्।
एवमादीन् गदान् हत्वा हृष्टः पुष्टश्च वीर्यवान् ॥
दीप्ताग्निर्बलवांश्चैव जीवेद् व्याधिविवर्जितः।

द्रव्य और निर्माणविधि—

हिंगुलसे निकाले हुए पारेको क्रमसे जैत, एरण्ड और मकोयके स्वरसमें १-१ दिन मर्दन करके गरम जलसे धो ले। गन्धकका मोटा चूर्ण करके उसको सात दिन भँगरेके स्वरसमें भिगोके रखे। पीछे उसको सुखाकर भीतर घीसे पोती हुई लोहेकी

छोटी कड़ाहीमें अग्निपर गलाकर अन्दर आधे भँगरेके स्वरस भरे हुए और मुँहके ऊपर कपड़ा बांधे हुए पात्रमें गेर दे। बाद उस पात्रसे गन्धकको निकालकर और गरम जलसे धोकर सुखा ले। इस प्रकारसे शुद्ध किया हुआ पारद और गन्धकका पर्पटी बनानेके लिये उपयोग करे। शुद्ध पारद और गन्धक समभाग लेकर उसको अच्छे मजबूत खरलमें मर्दन करे। मर्दन करते समय बीच-बीचमें उसमें जलके छींटे देवे। जब उसमें पारदके कण न दिखें और चूर्ण आँखमें डालनेके सुरमे जैसा सूक्ष्म हो जाय तब उसको भीतर घीसे पोती हुई छोटी लोहेकी कड़ाहीमें डाल, अग्निपर एक लोहेका तवा रख उसपर एक अंगुल मोटा बालू (सूक्ष्म रेती) का स्तर बिछा कर उसपर उस कड़ाहीको रखे। जब कज्जली गरम होने लगे तब उसको बीच-बीचमें लोहेके छुरेसे हिलाता रहे। जब सारी कज्जली अच्छी तरहसे द्रव हो जाय तब उसको जमीनपर गोबर बिछा, उसके उपर केलेका अखण्ड पत्ता रखकर उसपर डाल दे और तुरन्त ही उसपर केलेका दूसरा पत्ता रख उसपर दूसरा गोबर दबा दे। जब पर्पटी ठंडी हो जाय तब निकालकर शीशीमें भरकर रख ले। सब प्रकारकी पर्पटियाँ इसी विधिसे बनानी चाहियें। सेवन करते समय पर्पटीको खूब महीन पीसकर उपयोगमें लेना चाहिये।

मात्रा—एक रत्तीसे प्रारम्भकर, और प्रतिदिन एक-एक रत्तीकी मात्रा बढ़ा कर दस रत्तीतक रोग और रोगीका बलादि देखकर देवे। पीछे रोग अच्छा होनेतक वही मात्रा देता रहे। जब रोग-मुक्त हो जाय तब प्रतिदिन एक एक रत्तीकी मात्रा घटाकर ओषध छुटा दे। मैंने एक दिनमें एक बारमें १० रत्ती तककी मात्रा न देकर दिनमें दो तीन बारमें १ से ३ रत्ती तककी मात्रा देकर प्रयोग कराया है। इससे अच्छा लाभ होता देखा गया है। सामान्यतः पर्पटीका प्रयोग ४० दिन कराया जाता है।

अनुपान—सेंके हुए जीरेका चूर्ण १॥-२ माशा और घीमें सेंकी हुई हींग आधी रत्तीके साथ मिलाकर देवे और ऊपरसे दूध, छाछ या दाड़िम, संतरा, मोसंबी, मीठा नीबू आदि फलोंका रस देवे।

पथ्य—केवल दूध या केवल छाछ रोगीकी प्रकृति आदि देखकर देवे। एक दिनमें १-२ घण्टेके अन्तरसे दूध, छाछ और फलोंका रस तीनोंको दे सकते हैं, जल अकेला जहांतक बने न दिया जाय।

वक्तव्य—अन्न, जल और लवण बन्द करके केवल दूध, छाछ और फलोंके रसपर पर्पटीका प्रयोग करानेसे ही उचित लाभ होता है। जब तक पर्पटीका प्रयोग चले रोगीको पूर्ण विश्रान्ति लेनी चाहिये अर्थात् बिछौने पर लेटे ही रहना चाहिये। पर्पटीका प्रयोग बन्द करनेके बाद भी रोगी ३-४ मास तक आधा लघु अन्न और आधा दूध-छाछ-फलका सेवन करे।

उपयोग—सब प्रकारके पाचनक्रिया (जठराग्नि) के विकारोंमें रसपर्पटी उत्तम औषध है। ग्रहणीरोग, जीर्ण अतिसार, अग्निमान्द्य और पाण्डुरोगमें इसके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है।

१७—स्वर्णपर्पटी।

शुद्धसूतं पलमितं पादांशं स्वर्णपत्रकम्।
मर्दयेन्निम्बुनीरेण यावदेकत्वमागतम्॥
प्रक्षाल्योष्णाम्बुना पश्चात् पलमात्रं सुगन्धकम्।
दत्त्वा प्रमर्दयेत्तावद्यावत् कज्जलतां व्रजेत्॥
ततः पाकविधानज्ञः पर्पटीं कारयेद् बुधः।
देया दुग्धानुपानेन रक्तिकादिक्रमेण हि॥
बलपुष्टिकरी शुक्रवर्धनी वन्हिदीपनी।
ग्रहणीं राजयक्ष्माणं हन्ति पाण्ड्वामयं तथा॥
स्वर्णपर्पटीविख्याता तमकश्वासनाशिनी।

और निर्माणविधि—

अच्छे पत्थरके खरलमें चार तोला शुद्ध पारद डालकर उसमें एक तोला सोनेके वर्क एक एक करके मिलावे और उसमें कागजी नीबूका रस डालकर एक दिन मर्दन करे। पीछे उसको गरम जलसे धोकर उसमें शुद्ध गन्धक चार तोले डालकर कज्जली करे। पीछे रसपर्पटीमें लिखे हुए विधानसे पर्पटी बनाकर शीशीमें भरले।

मात्रा—१-३ रत्ती।

अनुपान—मधुसे चटाकर ऊपरसे दूध देवे। अन्य सब विधि रसपर्पटीमें लिखे अनुसार करे।

क्षयमें स्वर्णपर्पटीके साथ १-४ रत्ती मुक्तापिष्टी मिलाकर देनेसे विशेष लाभ होता

है। कई वैद्य पारदके स्थानमें रससिन्दूर देकर रक्त वर्णकी स्वर्णपर्पटी बनाते हैं।

गुण और उपयोग—स्वर्णपर्पटी जठराग्निको दीपन करनेवाली, बलकारक और शरीरको पुष्ट करने वाली है। ग्रहणीरोग, सर्व प्रकारके क्षय, पाण्डुरोग और पुराने दमेके रोगमें इससे विशेष लाभ होता है।

१८—लौहपर्पटी ।

रसभागो भवेदेको द्विगुणः शुद्धगन्धकः।
रसतुल्यं तीक्ष्णभस्म कज्जलीं कारयेच्छुभाम् ॥
रसपर्पटिकाप्रोक्तविधानेन प्रयत्नतः।
ततः पर्पटिका कार्या, देया योग्यानुपानतः ॥
सूतिकाया ज्वरे जीर्णे ग्रहण्यां पाण्डुरोगके।
प्लीहरोगेऽग्निमान्द्ये च यकृद्वृद्धौ तथैव च ॥
अम्लपित्ते तथा शूले लोहपर्पटिका हिता।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ भाग, तीक्ष्णलोह (पोलाद) भस्म एक भाग और शुद्ध गन्धक २ भाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर उसमें लोहभस्म मिलाकर एक दिन मर्दन करे। पीछे रसपर्पटीमें कही हुई विधिके अनुसार पर्पटी बनाले।

मात्रा—१-३ रत्ती दिनमें २-३ बार दे।

अनुपान—जीरेका चूर्ण और छाछ, दूध या फलोंका रस।

उपयोग—सूतिकाके जीर्णज्वर, ग्रहणीरोग, पाण्डुरोग, प्लीहाके रोग, [अग्नि]मान्द्य, यकृत्की वृद्धि, अम्लपित्त और उदरशूल इन रोगोंमें लोहपर्पटीका प्रयोग [होता] है।

१९—मण्डूरपर्पटी ।

मण्डूरभस्म भागैकं तत्समं पारदं तथा।
तयोः समं शुद्धगन्धं दत्वा कुर्यात्तु कज्जलीम् ॥
रसपर्पटिकाप्रोक्तविधिना पर्पटी शुभा।
कार्या, पाण्डुं यकृच्छोथं प्लीहानं श्वयथुं तथा ॥
मन्दाग्निं ग्रहणीरोगं हन्ति मण्डूरपर्पटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ भाग, मण्डूरभस्म १ भाग और शुद्ध गन्धक २ भाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर उसमें मण्डूरभस्म मिलाकर एक दिन मर्दन करे। पीछे रसपर्पटीमें कही हुई विधिके अनुसार पर्पटी बना ले।

मात्रा—१-३ रत्ती दिनमें २-३ बार दे।

अनुपान—जीरेका चूर्ण और छाछ, दूध या फलोंका रस।

उपयोग—पाण्डुरोग, प्लीहाके रोग, शोथ, मन्दाग्नि तथा ग्रहणीरोगमें मण्डूर-पर्पटीका उपयोग करे।

२०—गगनपर्पटी।

रसभागो भवेदेकस्तत्समं व्योमभस्म च।
तयोः समं शुद्धगन्धं दत्त्वा कुर्यात्तु कज्जलीम्॥
रसपर्पटिकाप्रोक्तविधिना पर्पटी शुभा।
कार्या, पाण्डुं क्षयं कासं श्वासं मन्दानलं तथा॥
ग्रहणीं चिरजां हन्ति ह्येषा गगनपर्पटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ भाग, अभ्रकभस्म १ भाग और शुद्ध गन्धक २ भाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर उसमें अभ्रकभस्म मिलाकर एक दिन मर्दन करे। पीछे रसपर्पटीमें कहे हुए विधानानुसार पर्पटी बनावे।

मात्रा—१-३ रत्ती दिनमें २-३ बार देवे।

अनुपान—शहद, दूध, छाछ या मीठे दाड़िमका रस।

उपयोग—गगनपर्पटी मन्दाग्नि, पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, खाँसी, श्वास (दमा) और पुराने ग्रहणीरोगमें विशेष गुण देनेवाली है।

२१—विजयपर्पटी।

शुद्धगन्धं पलं चैकं गन्धार्धं शुद्धपारदम्।
सूतार्धं भस्म रौप्यं च तदर्धं स्वर्णभस्मकम्॥
तदर्धं मृतवैक्रान्तं मौक्तिकं च विनिक्षिपेत्।
कृत्वा कज्जलिकां पश्चात् कुर्यात् पर्पटिकां शुभाम्॥
दुःसाध्यां ग्रहणीं हन्ति यक्ष्मणं सपरिग्रहम्।

शोथातिसारो पाण्डुं च प्लीहानं च जलोदरम् ॥
पक्तिशूलं चाम्लपित्तं हृद्रोगं विषमज्वरान् ।
कफवातोद्भवान् रोगान् हन्याद्विजयपर्पटी ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध गन्धक ४ तोला, शुद्ध पारद २ तोला, रौप्यभस्म १ तोला, सुवर्णभस्म आधा तोला, वैक्रान्त-भस्म तथा मुक्ताविष्टि दोनों पाव पाव तोला लेवे। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली कर उसमें अन्य भस्में मिलाकर एक दिन मर्दन करे। पीछे रस-पर्पटीमें लिखे हुए विधानके अनुसार पर्पटी बनावे।

मात्रा—१-३ रत्ती २-३ बार देवे।

अनुपान—शहद, दूध, छाछ या मीठे दाड़िम, मोसंबी और मीठे अंगूर इनमेंसे किसीका रस।

उपयोग—कृच्छ्रसाध्य ग्रहणीरोग, उपद्रवयुक्त राजयक्ष्मा, शोथ, पुराना अतिसार, पाण्डुरोग, प्लीहाके रोग, जलोदर, परिणाम शूल, अम्लपित्त, हृद्रोग, पुराने विषमज्वर और दूसरे कफ और वातसे होनेवाले रोगोंमें विजयपर्पटी उत्तम औषध है। इसके प्रयोगसे शरीर पुष्ट और बलवान होता है। जहां पर्पटीके अन्य योगोंसे लाभ न हो, वहां इसका प्रयोग करे।

२२—पञ्चामृतपर्पटी।

रसलोहाभ्रताम्राणि समभागानि कारयेत्।
गन्धकं सर्वतुल्यं तु दत्वा कुर्याद्धि कज्जलीम् ॥
ततः पर्पटिकां कृत्वा दद्याद्योग्यानुपानतः।
पञ्चामृता पर्पटिका स्मृता वह्निप्रदीपनी ॥
ग्रहणीमतिसारं च पाण्डुरोगमथारुचिम्।
श्वासं मन्दानलं हन्ति शूलं चैवाम्लपित्तकम् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, लोहभस्म, अभ्रकभस्म और ताम्र-भस्म एक एक भाग तथा शुद्ध गन्धक सबके समान (चार-भाग) लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर पीछे अन्य भस्में मिला, एक दिन मर्दन करके रसपर्पटीमें लिखे हुए विधानके अनुसार पर्पटी बना ले।

मात्रा—१-३ रत्ती दिनमें २-३ बार देवे।

अनुपान— सेंके हुए जीरेका चूर्ण और शहदके साथ चटाकर उपरसे दूध, छाछ या दाड़िम आदि फलोंका रस पिलावे।

उपयोग—अतिसार, ग्रहणी, पाण्डुरोग, अरुचि, दमा, मन्दाग्नि और शूल-रोगमें इसका प्रयोग करे। पञ्चामृतपर्पटीके प्रयोगसे भूख बढ़ती है। अम्लपित्तमें शतपत्र्यादि चूर्ण या द्राक्षादि चूर्णके साथ मिलाकर इसका प्रयोग करे।

वक्तव्य—मैंने पञ्चामृतपर्पटीमें १-१ भाग वंगभस्म और यशद (जस्ते) की भस्म मिलाके सप्तामृतपर्पटी बनाई है। पञ्चामृतपर्पटीसे यह अधिक गुणकारक है। अन्त्रक्षयमें सप्तामृतपर्पटी केवल या स्वर्णपर्पटीके साथ मिलाकर देनेसे विशेष लाभ होता देखा गया है।

२३—ताम्रपर्पटी।

मृतं ताम्रं त्रिभागं च रसं गन्धं तयोः समम्।
भागमेकं वत्सनाभं दत्त्वा कुर्यात्तु कज्जलीम्॥
ततः पाकविधानज्ञः पर्पटीं कारयेद् बुधः।
गुञ्जाद्वयं त्रयं वाऽपि ह्येलाजीरकसंयुता॥
त्रिसप्तरात्रयोगेन चिरजां ग्रहणीं जयेत्।
त्रिफलामधुसंयुक्ता मेहपाण्डुविनाशिनी॥
वातारितैलसंयुक्ता सर्वशूलनिवारिणी।
बाकुचीबीजसंयुक्ता दद्रुश्वित्रविनाशिनी॥
ताम्रपर्पटिका ह्येषा यकृत्प्लीहोदरापहा।

योगरत्नाकर।

द्रव्य और निर्माणविधि—

ताम्रभस्म ३ भाग, शुद्ध पारद ३ भाग, शुद्ध गन्धक ६ भाग और शुद्ध बछनागका चूर्ण १ भाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर पीछे अन्य द्रव्य मिलाकर १ दिन मर्दन करे। बाद रसपर्पटीमें लिखे हुए विधानके अनुसार पर्पटी बनाले।

मात्रा—१-३ रत्ती।

अनुपान और उपयोग—ताम्रपर्पटी छोटी इलायची और सेंके हुए जीरेके चूर्णके साथ सेवन करनेसे पुराने ग्रहणीरोगको, त्रिफलाका चूर्ण और मधुके साथ लेनेसे प्रमेह और पाण्डुरोगको, एरण्डतैलके साथ लेनेसे सर्व प्रकारके शूलोंको, बावचीके बीजके चूर्णके साथ सेवन करनेसे दाद और श्वित्र (कुष्ट) को दूर करती है। ताम्रपर्पटी यकृत्के रोग, प्लीहाकी वृद्धि और उदर रोगके लिये उत्तम औषध है ।

वक्तव्य—पर्पटीके योगोंका उपयोग प्रायः पुराने अतिसार, ग्रहणी, पाण्डुरोग और अग्निमान्द्यमें होता है । अतिसार और ग्रहणीमें इसको बिल्वादि चूर्णके साथ दे । ग्रहणी और पाण्डुरोगमें यदि मुखपाक भी हो तो शतपत्र्यादि चूर्णके साथ इसका प्रयोग करे । यदि साथमें रोगीको अर्श-बवासीर भी हो तो नागकेशरके चूर्णके साथ मिलाकर दे । यदि रोगीको अम्लपित्त भी हो तो रसादि वटी और जहरमोहरापिष्टीके साथ अथवा द्राक्षादि चूर्णके साथ पर्पटी दे । सामान्यतः छोटी इलायचीका चूर्ण ३ रत्ती, सेंके हुए जीरेका चूर्ण ५ रत्ती और शुद्ध भांगका चूर्ण १-२ रत्ती इनके साथ पर्पटी मिलाकर देना अच्छा है । पर्पटीका प्रयोग चलता हो तब उसके अनुपानोंके सिवाय अन्य योगोंका उपयोग अत्यन्त आवश्यकताके बिना नहीं करना चाहिये ।

अग्निमान्द्य-अजीर्णाधिकार ३ ।

१—हिङ्ग्वष्टकचूर्ण ।

हिङ्गुव्योषाजमोदाद्विजरणलवणं प्राग्भजेत् साज्यभक्तं
कुर्याज्जाज्वल्यमानं ज्वलनमनिलजं गुल्ममेतन्निहन्ति ।

वैद्यजीवन ४ उल्लास ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

घीमें सेकी हुई हींग, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, अजमोद, स्याह जीरा, सफेद जीरा और संधानमक सब समभाग ले, उनका कपड़छान चूर्ण करके शीशीमें भरले ।

मात्रा—१॥-३ माशा।

अनुपान और उपयोग—यह चूर्ण घी और भातके साथ मिलाकर भोजनके प्रारम्भमें खानेसे जठराग्नि प्रदीप्त होता है और वायुका अनुलोमन होता है। अजीर्ण और पेटके दर्दमें जल या छाछके अनुपानसे भी दिनमें २-३ बार इसको दे सकते हैं।

२—लवणभास्करचूर्ण।

सामुद्रलवणं कार्यमष्टकर्षमितं बुधैः।
पञ्च सौवर्चलं ग्राह्यं विडं सैन्धवधान्यके॥
पिप्पली पिप्पलीमूलं कृष्णजीरकपत्रकम्।
नागकेशरतालीसमम्लवेतसकं तथा॥
द्विकर्षमात्राण्येतानि प्रत्येकं कारयेद् बुधः।
मरिचं जीरकं विश्वमेकैकं कर्षमात्रकम्॥
दाड़िमं स्याच्चतुष्कर्षं त्वगेला चार्धकार्षिकी।
एतच्चूर्णीकृतं सर्वं लवणं भास्कराभिधम्॥
शाणप्रमाणं देयं तु मस्तुतक्रसुरासवैः।
वातश्लेष्मभवं शूलं प्लीहानं च विबन्धकम्॥
मन्दाग्निं नाशयेदेतद्दीपनं पाचनं परम्।

(शार्ङ्गधर संहिता, मध्यमखण्ड, ६ अध्याय)

द्रव्य और निर्माणविधि—

सामुद्र लवण ८ तोला, काला नमक (सोंचर) ५ तोला, नौसादर, सेंधानमक, धनिया, छोटी पीपल, पीपलामूल, स्याह जीरा, तेजपात, नागकेसर, तालीसपत्र, अमलबेत-प्रत्येक २-२ तोला, कालीमिर्च, सफेद जीरा, सोंठ प्रत्येक १-१ तोला, अनारदाना ४ तोला, दालचीनी और छोटी इलायची प्रत्येक आधा तोला, इनका कपड़छान चूर्ण करके रखले।

मात्रा—१॥-३ माशा।

अनुपान—जल या छाछ।

उपयोग—यह चूर्ण उत्तम दीपन, पाचन और अपानवायु तथा मलका अनुलोमन करनेवाला है । मन्दाग्नि तथा वायु और कफसे हुए पेटके दर्दको दूर करता है ।

३—शतपत्र्यादि चूर्ण ।

गुलाबके फूल २० भाग, मोथा, जीरा, श्वेत चन्दन, छोटी इलायची, कबाबचीनी, गिलोयका सत्व, खस, वंशलोचन, खसखस, इसबगोलकी भूसी, गोखरू, दालचीनी, तमालपत्र, नागकेसर, सारिवा (अनन्तमूल), कमलगट्टा, नीलोफर कमल और तीखुर प्रत्येक १ भाग, मिसरी ४० भाग लेकर इनका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण करे ।

स्वानुभूत ।

मात्रा—१॥ से ३ माशा ।

अनुपान—जल ।

उपयोग—विदग्धाजीर्ण, अम्लपित्त और पेटकी खराबीसे होने वाले मुखपाकमें यह चूर्ण दिया जाता है ।

४—रसोनादिवटी ।

लशुनजीरकगन्धकसैन्धवत्रिकटुरामठचूर्णमिदं समम् ।
सपदि निम्बुरसेन विसूचिकां हरति भो रतिभोगविचक्षणे ॥

वैद्यजीवन ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिलका निकाला हुआ लहसुन २ भाग, स्याह जीरा, सफेद जीरा, शुद्ध गन्धक, सेंधानमक, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल और घीमें सेकी हुई हींग १-१ भाग, प्रथम लसुनको पत्थरकी खरलमें कागजी नीबूके रसमें अच्छी तरह पीसे । पीछे अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिला नीबूके रसमें ३ दिन मर्दन करके ३-३ रत्तीकी गोलियां बनाकर सुखाले ।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली जलके अनुपानसे यथावश्यक दिनमें ३-४ बार अथवा खानेके बाद देवे ।

उपयोग—अजीर्ण, विसूचिका और पेटके दर्दमें इसका प्रयोग करे । यह गोली उत्तम पाचन, दीपन और वायुका अनुलोमन करनेवाली है ।

५—बिड़लवणादिवटी ।

काला नमक २० तोला, सेन्धा नमक २० तोला, अजवायन, कालीमिर्च, छोटी पीपल, चित्रकके मूलकी छाल, अजमोद, धनिया, डांसरिया (यूनानी-गिर्दसमाक), सूखा पोदीना, घीमें सेंकी हुई हींग, पीपलामूल, नौसादर प्रत्येक १० तोला। सब द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्णकर, नीबूके रसकी ३ भावनाएँ देकर चनेके बराबर गोलियां बना ले।

स्व० वा० आ० मा० स्वामी लक्ष्मीरामजीसे प्राप्त।

मात्रा—२ गोली भोजन करनेके पीछे पानीसे ले। पेटके दर्दमें यथावश्यक दिनमें ३-४ बार देवे।

गुण और उपयोग—यह बिडलवणादि वटी पाचन, दीपन तथा पेटके दर्द और अजीर्णको दूर करनेवाली है।

६—चित्रकादिवटी ।

चित्रकं पिप्पलीमूलं द्वौ क्षारौ लवणानि च।
व्योषं हिङ्ग्वजमोदां च चव्यं चैकत्र चूर्णयेत्॥
गुटिका मातुलुङ्गस्य दाड़िमस्य रसेन वा।
कृता विपाचयत्यामं दीपयत्याशु चानलम्॥

चरक संहिता० चि० अ० १५।

द्रव्य और निर्माणविधि—

चित्रकके मूलकी छाल, पीपलामूल, सज्जीखार, जौखार, सेंधानमक, सोंचर (कालानमक), सामुद्रलवण, सांभरलवण, नौसादर, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, घीमें सेंकी हुई हींग, अजमोद और चव्य प्रत्येक समभाग लेवे। सबका एकत्र चूर्ण करके कागजी नीबू, बिजोरा या खट्टे दाड़िम (अनार) के रसमें ३ दिन मर्दन कर चने बराबर गोलियाँ बना और सुखाकर रखले।

मात्रा—२-४ गोली जलके साथ भोजनके बाद या यथावश्यक दिनमें ३-४ बार देवें।

उपयोग—चित्रकादिवटी उत्तम पाचन और दीपन है। अजीर्ण, अरुचि और पेटके दर्दमें इसका उपयोग करे।

७—अग्नितुण्डीवटी ।

शुद्धसूतं विषं गन्धमजमोदां फलत्रिकम् ।
सर्जिक्षारं यवक्षारं वह्निसैन्धवजीरकम् ॥
सौवर्चलं विडङ्गानि सामुद्रं त्र्यूषणं तथा ।
विषमुष्टिं सर्वसमां जम्बीराम्लेन मर्दयेत् ॥
मरिचाभां वटीं खादेद्वह्निमान्द्यप्रशान्तये ।

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० १२ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध बछनाग, शुद्ध गन्धक, अजमोद, हड़का दल, बहेड़ादल, आँवला, सज्जीखार, जवाखार, चित्रकके मूलकी छाल, सेन्धानमक, जीरा, सोंचर, (कालानमक), वायविड़ङ्ग, सामुद्रलवण, सोंठ, छोटी पीपल, कालीमिर्च सब समभाग और शुद्ध कुचला सबके समान लेवे । प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर पीछे अन्य द्रव्योंका कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, जम्भीरी नीबूके रसमें ३ दिन मर्दन कर २-२ रत्तीकी गोलियाँ बना, सुखाकर रखले ।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—मन्दाग्नि, अजीर्ण और पेटके दर्दमें १-२ गोली जलके अनुपानसे भोजनके बाद या यथावश्यक दिनमें ३-४ बार देवे ।

८—महाशङ्खवटी ।

पटुपञ्चकहिङ्गुशङ्खचिञ्चाभसितव्योषबलीश्वरामृतानि ।
शिखिशैखरिकाम्लवर्गवारा भृशभाव्यानि यथाऽम्लतां व्रजन्ति ॥
महाशङ्खवटी ख्याता भोजनान्ते प्रभक्षिता ।
दीपनी परमा हन्ति मन्दाग्निग्रहणीमुखान् ॥

भैषज्यरत्नावली अग्निमान्द्याधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सेंधानमक, काला नमक (सोंचर), सामुद्र लवण, सांभर लवण, नौसादर, घीमें सेंकी हुई हींग, शङ्खभस्म, इमलीका क्षार, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, शुद्ध बछनाग सब समभाग । प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर उसमें अन्य द्रव्योंका कपड़छान किया हुआ चर्ण मिलाकर चित्रकके मूलका क्काथ और अपामार्गके

पत्तोंके स्वरसकी १-१ भावना दे । पीछे बिजोरा, खट्टे दाड़िम (अनार), कागजी नीबू आदि अम्ल फलोंके रसकी ७ भावना दे २-२ रत्तीकी गोलियां बना सुखाकर रखले ।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—भोजनके बाद २ गोली जलके साथ सेवन करे । इसके सेवन ... अग्नि-
मान्द्य, अजीर्ण, ... गुरु
भोजनके उपर इस...

सिद्धस्त्व...
संपाचयत...
आहारं ...
दापाकं ...

द्रव्य और निम...

शुद्ध पारद ... १२
तोला, छोटी पी... लमें
धोकर सुखाई हु... पीछे
अन्य द्रव्योंका ... २-२
रत्तीकी गोलियां ...

मात्रा—...

उपयोग—... न्नका
पाचन होता है और दस्त भी साफ होता है । क्षुधामान्द्य और अजीर्णमें इसका प्रयोग करना चाहिए ।

७—अग्नितुण्डीवटी ।

शुद्धसूतं विषं गन्धमजमोदां फलत्रिकम् ।
...कम् ॥
...तथा ।
...र्दयेत् ॥
...न्तये ।
...ा ग० खं० अ० १२ ।

...ड़का दल, बहेड़ादल,
...नमक, जीरा, सोंचर,
...कालीमिर्च सब समभाग
...ज्जली कर पीछे अन्य
...ं ३ दिन मर्दन कर

...र पेटके दर्दमें १-२
...बार देवे ।

...ानि ।
...लतां व्रजन्ति ॥

...अग्निमान्द्याधिकार ।

संधानमक, काला नमक (सोंचर), सामुद्र लवण, सांभर लवण, नौसादर, घीमें सेंकी हुई हींग, शङ्खभस्म, इमलीका क्षार, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, शुद्ध बछनाग सब समभाग । प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर उसमें अन्य द्रव्योंका कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिलाकर चित्रकके मूलका क्वाथ और अपामार्गके

पत्तोंके स्वरसकी १-१ भावना दे। पीछे बिजोरा, खट्टे दाड़िम (अनार), कागजी नीबू आदि अम्ल फलोंके रसकी ७ भावना दे २-२ रत्तीकी गोलियां बना सुखाकर रखले।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—भोजनके बाद २ गोली जलके साथ सेवन करे। इसके सेवनसे अन्नका पाचन होता है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है और अग्निमान्द्य, अजीर्ण, पेटका दर्द, वात-कफ प्रधान ग्रहणीरोग आदि दूर होते हैं। गुरु भोजनके उपर इसको लेनेसे भोजन अच्छी तरहसे पच जाता है।

६—अजीर्णारि रस।

शुद्धं सूतं गन्धकं च पलमानं पृथक् पृथक्।
हरीतकी च द्विपला नागरं त्रिपलं स्मृतम्॥
कृष्णा च मरिचं तद्वत् सिन्धूत्थं त्रिपलं पृथक्।
चतुष्पला च विजया मर्दयेन्निम्बुकद्रवैः॥
भावयेत् सप्तवारांस्तद्घर्ममध्ये पुनः पुनः।
सिद्धस्त्वजीर्णारिरियं प्रसिद्धो भुक्तस्तथा स्वाग्निबलं निरीक्ष्य।
संपाचयत्याशु करोति वह्निमजीर्णदोषं परिहृत्य पूर्वम्॥
आहारं द्विगुणं विधाय नितरां पुष्टिं परां सन्दिशे-
दापाकं जठरस्थितस्तु बहुधा संपाच्य संरेचयेत्।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद ४ तोला, शुद्ध गन्धक ४ तोला, हड़का दल ८ तोला, सोंठ १२ तोला, छोटी पीपल १२ तोला, कालीमिर्च १२ तोला, सेंधा नमक १२ तोला, जलमें धोकर सुखाई हुई भांग १६ तोला लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर पीछे अन्य द्रव्योंका कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला सात दिन नीबूके रसमें घोटकर २-२ रत्तीकी गोलियां बनाले।

मात्रा—१-२ गोली भोजनके पीछे जलसे सेवन करे।

उपयोग—अजीर्णारि रसके सेवन करनेसे अच्छी क्षुधा लगती है, अन्नका पाचन होता है और दस्त भी साफ होता है। क्षुधामान्द्य और अजीर्णमें इसका प्रयोग करना चाहिए।

१०—अग्निकुमार रस ।

रसेन्द्रगन्धौ सहटङ्कणेन समं विषं योज्यमिह त्रिभागम् ।
कपर्दशङ्खाविह नेत्रभागौ मरीचमत्राष्टगुणं प्रदेयम् ॥
सुपक्वजम्बीररसेन घस्त्रं सिद्धो भवेदग्निकुमार एषः ।
विसूचीशूलवातादिवह्निमान्द्ये द्विगुञ्जकः ॥
अजीर्णे संग्रहण्यां च प्रयोज्योऽयं निजौषधैः ।

भैषज्यरत्नावली अग्निमान्द्याधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अग्निपर फुलाया हुआ सुहागा १-१ भाग; शुद्ध बछनाग ३ भाग; कौड़ी और शंखकी भस्म २-२ भाग और कालीमिर्च ८ भाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर उसमें भस्में और अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला नीबूके रसमें ३ दिन मर्दन कर २-२ रत्तीकी गोलियाँ बना सुखाकर रखले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान और उपयोग—अग्निमान्द्य, अजीर्ण और पेटके दर्दमें जल, छाछ अथवा नीबू और अदरकके रसके साथ इसका सेवन करे।

११—सर्वतोभद्र रस ।

निश्चन्द्रं गगनं ग्राह्यं द्विकर्षं शुद्धगन्धकम् ।
तोलकं तोलकार्धं च हिङ्गुलोत्थरसं तथा ॥
कर्पूरं केशरं मांसी तेजपत्रं लवङ्गकम् ।
जातीकोषफले चैव सूक्ष्मैला करिपिप्पली ॥
कुष्ठं तालीसपत्रं च धातकी चोचमुस्तकम् ।
हरीतकी मरीचं च शृङ्गवेरबिभीतकम् ॥
पिप्पल्यामलकं चैव शाणभागं विचूर्णितम् ।
नागवल्लीरसैः पिष्ट्वा वटीं कुर्याद् द्विगुञ्जिकाम् ॥
भक्षयेत् पर्णखण्डेन मधुना सितयाऽपि वा ।
हन्त्यजीर्णं विदग्धं च तृष्णामामं विसूचिकाम् ॥

अरुचिं मूत्रकृच्छ्रं च मूर्च्छां च ग्रहणीं वमिम्।
अम्लपित्तं शीतपित्तं रक्तपित्तं विशेषतः॥
सर्वतोभद्रनामाऽयं रसो दीपनपाचनः।

रसेन्द्रसारसंग्रह ज्वराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अभ्रक भस्म २ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, हिंगुलसे निकाला हुआ पारद आधा तोला, कपूर, केशर, जटामाँसी, तेजपात, लौंग, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची, मोटी पीपल, कूठ, तालीसपत्र, धायके फूल, दालचीनी, नागरमोथा, हड़का-दल, कालीमिर्च, सोंठ, बहेड़ादल, छोटी पीपल और आंवले प्रत्येक पाव पाव तोला। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर उसमें अभ्रकभस्म और केशर डालकर, नागरपानके रसमें केशर अच्छी तरह मिल जाय, इतना घोंटे। पीछे अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला नागरपानके रसमें एक दिन मर्दन कर ३-३ रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखाकर रख ले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—जल, कच्चे नारियलका जल, मीठे दाड़िमका रस या चन्दनादि अर्क।

उपयोग—विदग्धाजीर्ण, तृषा, आमदोष, विसूचिका, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, मूर्च्छा, ग्रहणीरोग, वमन, अम्लपित्त, शीतपित्त, और रक्तपित्त इन रोगोंमें सर्वतोभद्र रसका प्रयोग करे। पित्तप्रकृतिवालोंके पाचनके विकारोंमें इसके प्रयोगसे अच्छा लाभ होता है।

१२—जम्बीरलवणवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जँबीरी या कागजी नीबूका रस १२० तोला, सेंधानमक १२ तोला, सोंठ २॥ तोला, अजवायन २॥ तोला, सज्जीखार २॥ तोला, छोटी पीपल २॥ तोला, घीमें सेंकी हुई हींग २॥ तोला, करंजुवे (सं० कण्टकीकरञ्ज) के फलको थोड़ा सेंककर निकाला हुआ मगज २॥ तोला, कालीमिर्च २॥ तोला, छिला हुआ लहसुन २॥ तोला, श्वेत पुनर्नवा (गदहपुरना-सांठी) के मूल २॥ तोला, सफेद (पीली) सरसों २॥ तोला, जरा सेंका हुआ सफेद जीरा २॥ तोला, अतीस २॥ तोला,

सामुद्रलवण २॥ तोला । स्वच्छ सफेद कपड़ेसे छाने हुए जँबीरी या कागजी नीबूके रस को कांचके बरतनमें डाल, उसमें सेंधानमकका चूर्ण मिला, बरतनके मुँहपर सफेद कपड़ा बांधकर उसको ४ दिन तक दिनमें कड़ी धूपमें रखे और रातको घरमें रखे। पांचवें दिन उस रसको मिट्टीके मजबूत बरतनमें डालकर मन्दी आंचपर पकावे और लकड़ीके खोंचेसे हिलाता रहे। जब रस गाढ़ा हो जाय, तब उसमें अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला नीचे उतार कर ठंडा होने पर ३-३ रत्तीकी गोलियां बनाकर सुखाले।

मात्रा और अनुपान—दो गोली ठंडे जलके अनुपानसे भोजनके बाद या यथावश्यक दिनमें ३-४ बार देवे।

उपयोग—ये गोलियां उत्तम पाचन-दीपन हैं। मन्दाग्नि, अरुचि, पेटका दर्द, अजीण और अफरामें इनसे अच्छा लाभ होता है।

वमनाधिकार ४।

१—रसादिचूर्ण।

रसबलिघनसारकोलमज्जामरकुसुमाम्बुधरप्रियङ्गुलाजाः।
मलयजमगधात्वगेलपत्रं दलितमिदं परिभाव्य चन्दाद्भिः॥
मधुमरिचयुत्तं रजोऽस्य माषं जयति वमिं प्रबलां विलिह्य मर्त्यः।

योगरत्नाकर वमनाधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, कपूर, बेरकी गुठलीका मग्ज, लौंग, नागरमोथा, प्रियङ्गु (गुजराती-घंउला), धानका लावा (खील), सफेद चन्दन, छोटी पीपल, दालचीनी, छोटी इलायची और तेजपात प्रत्येक समभाग। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिलाकर चन्दनके अर्कमें या चन्दनका चूर्ण (१ भाग), जल (२ भाग) में १२ घंटा भिगोकर कपड़ेसे छानकर उस जलमें एक दिन मर्दन करके छायामें सुखाले।

मात्रा—२-६ रत्ती। २-३ घंटेसे या यथावश्यक दिनमें कई बार दे।

अनुपान—मधु-शहद,ठण्डा जल, लाजमण्ड, चन्दनादि अर्क या पोदीनेका रस।

उपयोग—वमन (उलटी-कै), अम्लपित्त, हिचकी और विदग्धाजीर्णमें यह उत्तम योग है। इसका केवल या इसके साथ २ रत्ती जहरमोहरा-पिष्टी मिलाकर उपयोग करे।

२—मयूरपिच्छभस्मयोग।

मयूरपक्षं निर्दह्य तद्भस्म मधुमिश्रितम्।
लीढ्वा निवारत्याशु छर्दिं सोपद्रवामपि॥

योगरत्नाकर वमनाधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मोरके पंख (पर) को दियासलाई या घीकी बत्तीसे जलाकर उसकी भस्म करे। पीछे उसको पीस कपड़छान करके रख ले। परका जो पिछला चन्द्रिकावाला भाग होता है, उसमें अधिक गुण होता है। अतः उतने अंशकी भस्म करे तो अच्छी होगी।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—२ रत्ती भस्म पाव तोला मधु-शहद में मिलाकर देवे। इस योगसे वमन और हिचकीमें अच्छा लाभ होता है।

३—रसादिवटी।

द्रव्य, निर्माणविधि, मात्रा, अनुपान और उपयोग—

पृ० ३ पर देखें। रसादि वटी २-४ रत्ती मधु, चन्दनादि अर्क, लाजमण्ड अथवा पोदीनेके रस या अर्कके साथ देनेसे वमन और हिचकीमें अच्छा लाभ होता है। इसके साथ २ रत्ती जहरमोहरा-पिष्टी मिलाकर देनेसे विशेष गुण होता है।

४—लाजमण्ड।

द्रव्य और निर्माणविधि—

धानका लावा (खील) १ तोला, छोटी इलायची २-४ नग, लौंग २-४ नग, मिश्री पावसे आधा तोलाभर और जल २ तोले, सबको एकत्र अग्निपर ५-७ उफान आवे, इतना पकाकर ठंढा होनेपर कपड़ेसे छान ले।

मात्रा और उपयोग—इसमेंसे १-२ चम्मच पानी थोड़ी थोड़ी देरसे रोगी को पिलावे। यदि वमन हरा, पीला और कडुआ (तीता) होता हो तो इसमें थोड़ा कागजी नीबूका रस मिलाकर देवे। इसको बरफसे ठंढा करके भी दे

सकते हैं । उलटी, हिचकी और अधिक प्यास लगनेमें यह उत्तम औषधि और पथ्य है ।

सेव, मीठा बेदाना, अनार (दाड़िम) और गन्ना (ईख) भी वमन और हिचकी में उत्तम पथ्य है ।

५—छर्दिरिपु ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपूरकचरीका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, उसको ३ घंटा चन्दनादि अर्कमें मर्दन कर २-२ रत्तीकी गोलियां बना, छायामें सुखाकर रख लेवे ।

स्व० वा० वैद्य तिलकचन्द ताराचन्द ।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—छर्दिरिपुकी २-३ गोली केवल या इनके साथ मयूरपिच्छभस्म २ रत्ती और जहरमोहरापिष्टी २ रत्ती मिलाकर जल, लाजमण्ड, चन्दनादि अर्क या पोदीनेके अर्कके अनुपानसे देवे । वमन बन्द करनेके लिये यह उत्तम योग है ।

अम्लपित्ताधिकार ५ ।

१—अविपत्तिकर चूर्ण ।

त्रिकटु त्रिफला मुस्तं विडं चैव विडङ्गकम् ।
एला पत्रं च चूर्णानि समभागानि कारयेत् ॥
सर्वमेकीकृतं यावल्लवङ्गं तत्समं भवेत् ।
सर्वचूर्णाद्द्विगुणितं त्रिवृच्चूर्णं प्रदापयेत् ॥
सर्वमेकीकृतं यावत्तावच्छर्करयाऽन्वितम् ।
अविपत्तिकरं चूर्णमम्लपित्तविनाशनम् ॥

भैषज्यरत्नावली ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, हरड़का दल, बहेड़ादल, आंवला, नागरमोथ, नौसादर, बायबिडङ्ग, छोटी इलायची और तेजपात प्रत्येक १-१ तोला, लौंग ११

तोला, निशोथका मूल २२ और मिश्री ४४ तोले ले सबका कपड़छान चूर्ण करके रख ले।

मात्रा और अनुपान—आधा तोला ठंडे जल या कच्चे नारियलके जलके साथ सवेरमें या रातको सोते समय दे।

उपयोग—अम्लपित्त और शूलमें प्रथम इस चूर्णसे विरेचन कराके पीछे अन्य योग देनेसे विशेष गुण होता है।

२—सूतशेखर रस।

शुद्धं सूतं मृतं स्वर्णं टङ्कणं रौप्यभस्मकम्।
व्योषमुन्मत्तबीजं च गन्धकं ताम्रभस्मकम्॥
चातुर्जातं शङ्खभस्म बिल्वमज्जा कचोरकम्।
भृङ्गराजरसैर्मर्द्यं त्रिसप्तदिवसावधि।
गुञ्जामात्रां वटीं कृत्वा दद्याद्योग्यानुपानतः।
हृद्दाहभ्रममूर्च्छाघ्नो वान्तिशूलामयापहः।
अम्लपित्तहरश्चापि रसोऽयं सूतशेखरः॥

योगरत्नाकरसे किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, सुवर्णभस्म, शुद्ध सुहागा, रौप्यभस्म, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, शुद्ध धतूरेके बीज, शुद्ध गन्धक, ताम्रभस्म, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेसर, शंखभस्म, बेलगिरी और कचूर प्रत्येक समभाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली करे। पीछे उसमें भस्में तथा अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिला २१ दिन भंगरेके स्वरसमें मर्दन कर २-२ रत्तीकी गोलियां बना, छायामें सुखाकर रख ले।

मात्रा—१ गोली। ३-४ घंटेसे दे।

अनुपान—१॥ माशा शहद और ३ माशा गायका घी, मीठे बेदाने, दाड़िमका रस या शर्बत, अथवा लाजमण्ड।

उपयोग—अम्लपित्त, छातीकी जलन, चक्कर आना, मूर्च्छा, वमन, पेटका शूल आदि पित्तविकृतिप्रधान रोगोंमें इससे अच्छा गुण होता है।

३—द्राक्षादिचूर्ण ।

द्राक्षा लाजसितोपलं समधुकं खर्जूरगोपीतुगा-
ह्रीवेरामलकाब्दचन्दननतं कङ्कोलजातीफलम् ।
चातुर्जातकणं सधान्यकमिदं चूर्णं समां शर्करां
दत्त्वा भक्षितमम्भसाऽतिसरणं पित्तं सदाहं जयेत् ॥
मूर्च्छां छर्दिमरोचकं मदभ्रमौ हृत्कण्ठदाहं तृषां
रक्तार्शोरुधिरप्रमेहहरणं द्राक्षादिचूर्णोत्तमम् ।

योगरत्नाकर राजयक्ष्माधिकारसे किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुनक्का, धानका लावा (खील), श्वेतकमल, मुलेठी, गुठली निकाला हुआ छुहारा, अनन्तमूल, वंशलोचन, खस, आंवला, नागरमोथा, सफेद चन्दन, तगर, कवाबचीनी (शीतलमिर्च), जायफल, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, छोटी पीपल और धनियां सब समभाग तथा मिश्री सबके बराबर लेकर कपड़छान चूर्ण करे ।

मात्रा—१-३ माशा ।

अनुपान—ठंडा जल । ३-४ घण्टेसे दिनमें ३-४ बार दे ।

उपयोग—अन्नके विदाहसे होनेवाली छाती और कण्ठकी जलन, पैत्तिक अतिसार, मूर्च्छा, वमन, अन्नपर अरुचि, मद (नशासा रहना), चक्कर आना, अधिक प्यास लगना, रक्तार्श और पेशाबमें रक्त आना इत्यादि पैत्तिक व्याधियोंके लिये यह उत्तम योग है । इस चूर्णको पैत्तिक ग्रहणीरोगमें पर्पटीयोगोंके, रक्तपित्तमें चन्द्रकलारसके और अम्लपित्तमें अभ्रकभस्म या सूतशेखरके साथ मिलाकर देनेसे विशेष लाभ होता है । रक्तार्श, रक्तप्रदर और रक्तपित्तमें इसके साथ १ माशा खूनखराबे (यूनानी-दम्म उल अखवेन) का चूर्ण मिलाकर इसका प्रयोग करे ।

४—द्राक्षादिगुटिका ।

द्राक्षापथ्ये समे कृत्वा तयोस्तुल्यां सितां क्षिपेत् ।
संकुट्याक्षद्वयमितां तत्पिण्डीं कारयेद्भिषक् ॥
तां खादेदम्लपित्तार्तो हृत्कण्ठदहनापहाम् ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

धोकर बीज निकाला हुआ मुनक्का १ भाग, गुठली निकाली हुई बड़ी हरें १ भाग और मिश्री २ भाग। प्रथम मुनक्काको खूब महीन पीसे। पीछे उसमें हरें और मिश्रीका कपड़छान चूर्ण मिलाकर १ तोलेके गोले बना ले।

मात्रा और अनुपान—इसमेंसे १ गोला सोते समय कुनकुने जलसे खावे।

उपयोग—इसके सेवनसे छाती और कण्ठकी जलन, अम्लपित्त और दस्तकी कब्जियत दूर होती है।

पथ्य—अम्लपित्तमें गेहूं या जौकी रोटी; मूँगकी दाल या साबुत मूँगका जूस (रसा) परवल, लौकी, तोरई, नेनुवा, चौलाई, बथुआ इनका शाक (साग) अनार (दाड़िम) सेव, नारियल, केला, आम आदि मीठे फल, मसालेमें धनिया, जीरा, हल्दी, सेन्धानमक और थाड़े प्रमाणमें कच्चा अदरख; इतनेपर रोगो को रखना चाहिये। गोरसमें दूध, ताजा मक्खन और घी दे सकते हैं। अम्ल, कटु और तिक्त रसवाले द्रव्य प्रायः अपथ्य हैं। रोगी खटाई खाना चाहे तो आंवलेकी खटाई दाल सागमें दिलावे। तेल या घीमें तली हुई पूड़ी, पकौड़ी आदि अपथ्य हैं।

शूलाधिकार ६।

१—धात्रीलौह।

धात्रीचूर्णस्याष्टौ पलानि चत्वारि लोहचूर्णस्य।
यष्टीमधुकरंजश्च द्विपलं दद्यात् पटे घृष्टम्॥
अमृताक्काथेन तच्चूर्णं भाव्यं च सप्ताहम्।
चण्डातपेषु शुष्कं भूयः पिष्ट्वा घटे स्थाप्यम्॥
घृतमधुना संयुक्तं भक्तादौ मध्यतस्तथाऽन्ते च।
भुक्तस्यादौ शमयति रोगान् पित्तानिलोद्भूतान्॥
मध्येऽन्ने विष्टम्भं जयति नृणां विदह्यते नान्नम्।
शूलं परिणामभवं भक्तान्ते शीलितं जयति॥

भैषज्यरत्नावली।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छे पके हुए आंवलेको पत्थरसे तोड़कर उसकी गुठली निकाल दे। पीछे उसको छायामें सुखाकर उसका कपड़छान चूर्ण करे। इस प्रकार तैयार किया हुआ आँवलेका चूर्ण ३२ तोला, लोहभस्म १६ तोला और चक्कूसे थोड़ा ऊपरका हिस्सा छीलकर पीछे कपड़छान किया हुआ मुलेठी का चूर्ण ८ तोला ले। सबको एकत्र करके ताजी गिलोयके स्वरसमें सात दिन मर्दन कर कड़ी धूपमें सुखा, कपड़छान करके शीशी में भर ले।

मात्रा—५ से १० रत्ती।

अनुपान—मधु और घृत।

उपयोग—भोजनके पहले सेवन करनेसे पित्त और वायुके रोग शान्त होते हैं, भोजनके मध्यमें सेवन करनेसे मलका विष्टम्भ (कब्ज) और अन्नका विदाह दूर होता है। और भोजनके अन्तमें सेवन करनेसे परिणामशूल दूर होता है। परिणामशूल और अम्लपित्तके लिये यह उत्तम योग है।

२—शूलवर्जिनीवटी।

रसगन्धकलोहानां पलार्धं शङ्खभस्मतः।
टङ्कणं रामठं शुण्ठी त्रिकटु त्रिफला शटी॥
त्वगेलापत्रतालीशं जातीफललवङ्गकम्।
यवानी जीरकं धान्यं प्रत्येकं तोलकं शुभम्॥
चतुर्गुञ्जामिता वट्यो धात्रीस्वरसपेषिताः।
शीततोयानुपानेन छागीदुग्धेन वा पुनः॥
शूलमष्टविधं हन्ति भक्षिता शूलवर्जिनी।

भैषज्यरत्नावलीसे किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद २ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, लोहभस्म २ तोला, शंखभस्म २ तोला, शुद्ध सुहागा १ तोला, घीमें सेंकी हुई हींग १ तोला, सोंठ १ तोला, काली मिर्च १ तोला, छोटी पीपल १ तोला, हरड़का दल १ तोला, बहेड़ादल १ तोला, आँवला १ तोला, कचूर १ तोला, दालचीनी १ तोला, छोटी इलायची १ तोला,

तेजपात १ तोला, तालीसपत्र १ तोला, जायफल १ तोला, लौंग १ तोला, अजवायन १ तोला, जीरा १ तोला और धनिया एक तोला ले। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर उसमें अन्य भस्में तथा वनस्पतियोंका कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला ३ दिन आँवलेके स्वरसमें मर्दन कर ४-४ रत्तीकी गोलियां बना छायामें सुखाकर रख ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सवेरे-शाम बकरीके दूधसे अथवा १-२ गोली भोजनके पीछे ठंडे जलसे दे।

उपयोग—सर्व प्रकारके शूलमें, विशेषतः परिणामशूलमें इसका उपयोग करे।

३—विषाणभस्मयोग।

रससिन्दूर १ भाग और सांभर या हिरणके सींगकी भस्म ८ भाग। दोनोंको एक साथ एक दिन मर्दन करके रख छोड़े।

मात्रा और अनुपान—१ माशा गायके घी या मधुके साथ देवे।

उपयोग—पार्श्वशूल (पसलीके दर्दमें) और छातीके दर्दमें इस योगसे अच्छा लाभ होता है।

शीतपित्ताधिकार ७।

१—हरिद्राखण्ड।

निशाभयात्रिवृतानां प्रत्येकं कुडवं भवेत्।
दार्वी मुस्ता यवान्यौ द्वे चित्रकं कटुरोहिणी॥
अजाजी पिप्पली शुण्ठी त्रिजातं च विडङ्गकम्।
अमृता वासकं कुष्ठं त्रिफला चव्यधान्यकम्॥
मृतलोहं मृतं चाभ्रं प्रत्येकं कोलसंमितम्।
सार्धप्रस्थद्वयं ग्राह्यं सितायाः मृन्मये नवे॥
पचेन्मृद्वग्निना वैद्यस्ततश्चूर्णं विनिक्षिपेत्।
कर्षार्धं च ततः खादेदुष्णतोयानुपानतः॥
शीतपित्तं निहन्त्येष हरिद्राखण्डसंज्ञकः।

भैषज्यरत्नावलीसे किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

हल्दी, निशोथ और हड़का दल प्रत्येक १६ तोला, दारुहल्दी, नागरमोथ, अजवायन, अजमोद, चित्रकके मूलकी छाल, कुटकी, जीरा, छोटी पीपल, सोंठ, छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात, वायबिडंग, गिलोय, अड़ूसा, कूठ, हड़का दल, बहेड़ा-दल, आंवला, चव्य (चाब), धनिया, लोहभस्म और अभ्रकभस्म प्रत्येक आधा तोला तथा चीनी १६० तोला लेवे। प्रथम मिट्टीके नये बरतनमें चीनीमें थोड़ा जल मिलाकर चाशनी करे। चासनी जब बूरा बनने योग्य हो जाय तब उसको अग्निपरसे नीचे उतार उसमें भस्में तथा अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिलाकर रख ले।

मात्रा और अनुपान—आधा तोला दिनमें दो-तीन बार ठंडे जलसे देवे।

उपयोग—शीतपित्त (पित्ती) के लिये यह उत्तम योग है। अम्लपित्तके लिये जो पथ्यापथ्य लिखा है, वह शीतपित्तके लिये भी समझना चाहिए।

शुद्ध सज्जीखार या सोडा बाई कार्ब एक तोला २० तोला गरम जलमें मिला उसमें महीन कपड़ा भिगोकर शीतपित्तके ददोरे-ग्राफड पर फिरानेसे ददोरे शीघ्र बैठ जाते हैं।

आनाह (कब्ज=मलावष्टम्भ) धिकार ८

१—पञ्चसकारचूर्ण।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सनाय ४ भाग, घी लगाकर सेंकी हुई जौहड (छोटी हरड़) २ भाग, सोंठ १ भाग, सौंफ १ भाग और सेन्धानमक १ भाग ले। सबको एक साथ कूट और कपड़छान करके रख ले।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—यह चूर्ण ४-६ माशा अकेला या इसमें ¼ लवणभास्कर चूर्ण मिलाकर प्रातःकालमें या रातको सोते समय गुनगुने जलके साथ लेनेसे बिना कष्ट (पेटकी ऐंठन) के १-२ दस्त साफ हो जाते हैं। कफ-वात-प्रकृति तथा कफ और वातके विकारोंमें इसका प्रयोग करना चाहिए।

२—यष्ठ्यादिचूर्ण ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुलेठी २ भाग, सनाय २ भाग, सौंफ १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग और मिश्री ६ भाग ले। सबको एकसाथ कूट कपड़छान चूर्ण करके रख ले। इस चूर्णका कई वैद्योंने **मधुकादिचूर्ण** नाम रक्खा है। कई फार्मेसीवाले इसको **स्वादिष्ट-विरेचनके** नामसे बेचते हैं। डाक्टरी मेटिरिया मेडिकामें इसका **पल्विस ग्लिस-हाईभ्भा कम्पाउन्ड** नाम दिया है।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—४-६ माशा सबेरे या रातको सोते समय गुनगुने जलके साथ खानेसे बिना कष्टके १-२ दस्त इससे साफ हो जाते हैं। अर्श (बवासीर) वालेको कब्ज दूर करनेके लिये इसका प्रयोग करना अच्छा है।

३—मञ्जिष्ठादिचूर्ण ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मजीठ १ भाग, छोटी इलायची १ भाग, सौंफ १ भाग, सोनागेरु २ भाग, पाखाणभेद १ भाग, कलमीसोरा १ भाग, गोखरू १ भाग, रेवन्दचीनी १ भाग, घी लगाकर सेंकी हुई छोटी हरड़ २ भाग, बड़ी हरेंका दल २ भाग, बहेड़ादल २ भाग, आंवला २ भाग, गुलाबके फूल २ भाग और सनाय ४ भाग ले। सबको एक साथ कूट कपड़छान चूर्ण करके रख ले।

मात्रा और अनुपान—यह चूर्ण ४-६ माशे प्रातःकाल या रातको सोते समय ठंडे या गुनगुने जलके साथ लेनेसे १-२ दस्त बिना कष्टके साफ होते हैं।

गुण और उपयोग—यह चूर्ण दस्त और पेशाब साफ लानेवाला और रक्त-शोधक है। मल और मूत्रकी रुकावट (कब्ज), अर्श-बवासीर और रक्तविकारमें इसके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है। पित्तप्रकृत्ति और रक्त तथा पित्तके विकारोंमें इसका प्रयोग करना चाहिये।

४—सुखविरेचनी वटी ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जमालगोटेके बीजको फोड़कर उसके मगज (मींगी) की दो दाल कर ले। ऐसी २६ दालको रातको एक कलईदार पात्रमें उबलते हुए पानीमें डालकर रातभर ढांक-

कर रख दे। सबेरे दालको हाथसे मसलकर जलसे धो ले। पीछे खरलमें डालकर उनको खूब घोंटे। दाल अच्छी तरह पीस जानेपर उसमें दो तोला सोंठका कपड़छान चूर्ण मिला, जलसे ३ घंटा मर्दन करके २-२ रत्तीकी गोलियां बना सुखाकर रख ले।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—रातको सोते समय १ गोली ठंडे जलसे निगलनेसे सवेरे एक दस्त साफ हो जाता है।

वै० भू० पं० गोवर्धन शर्मा छांगाणीजीसे प्राप्त।

५—त्रिवृतादिलेह।

सक्षौद्रां शर्करां पक्त्वा कुर्यान्मृद्भाजने नवे।
क्षिपेच्छीते त्रिवृच्चूर्णं त्वक्पत्रमरिचैः सह॥
मात्रया लेहयेदेतदीश्वराणां विरेचनम्।

चरकसंहिता क० स्था० अ० ७।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शक्कर (चीनी) १६ तोला और शहद (मधु) १६ तोलाको कलईदार बरतनमें थोड़ा जल देकर पकावे। जब अवलेह बनने योग्य चाशनी हो जाय तब उसको नये मिट्टीके बरतनमें छोड़ दे। पीछे उसमें निशोथ १२ तोला, दालचीनी १ तोला, तेजपात १ तोला और कालीमिर्च १ तोला इनका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिलाकर लेह बना ले।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—आधेसे एक तोला गरम जलके साथ प्रातःकालमें लेनेसे २-३ दस्त बिना कष्टके हो जाते हैं।

६—इसबगोलकी भूसीका योग।

द्रव्य और निर्माणविधि—

नयी साफ की हुई इसबगोलकी भूसो आधा तोला रातको सोते समय गरम जल या गरम दूधके साथ लेनेसे सबेरे एक मलफूला हुआ दस्त साफ हो जाता है।

७—तरुण्यादिकषाय।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलाबके फूल १ तोला, सनाय १ तोला, सौंफ १ तोला और मुनक्का २ तोला लेकर सबको बिना कुटे ही रातको २० तोला जलमें भिगोदे। सबेरे पकाकर पांच

तोला जल बाकी रहे, तब उसमें १ तोला यासशकरा (यूनानी तुरंजबीन) या आधा तोला मिश्री मिला कपड़ेसे छानकर पिलावे। इससे २-३ दस्त बिना कष्टके साफ हो जाते हैं।

८—सनायकी फलीका योग।

द्रव्य निर्माणविधि मात्रा और उपयोग—

सनायकी फली (सेम) १० से २० बिना कुटी हुई रातको ५-७ तोले उबलते हुए जलमें मिट्टी या कांचके बरतनमें भिगोके रख दे। सबेरे हाथसे मसलकर कपड़े से छान ले। इसमें ३ माशा चीनी या शहद मिलाकर पीनेसे १-२ दस्त खुलासा होजाते हैं।

अन्य योग—ज्वराधिकारमें कहे हुए विश्वतापहरण और अश्वकञ्चुकी इन दो योगोंका भी विरेचनके लिये अच्छा उपयोग होता है।

अर्शोऽधिकार ६।

१—अर्शोघ्नीवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

निबोली (नीमके फलकी मींगी) २ तोला, बकायनके फलकी मींगी २ तोला, खूनखराबा (यूनानी-दम उल अखवेन) २ तोला, तृणकान्त (यूनानी-करुवा) की अर्कगुलाब या चन्दनादि अर्कसे बनाई हुई पिष्टी १ भाग और शुद्ध रसौत (दारुहल्दीका घन) ६ भाग ले। प्रथम निबौली और बकायनकी मींगीको खूब महीन पीसे। पीछे अन्य द्रव्य मिला घोटकर ३-३ रत्तीकी गोलियां बना ले।

मात्रा और अनुपान—२-२ गोली दिनमें ३-४ बार ठंडे जलसे दे।

उपयोग—इससे सूखे और खूनी (रक्तार्श) दोनों प्रकारके अर्शमें अच्छा लाभ होता है।

२—नागकेशरयोग।

द्रव्य और निर्माणविधि—

असली नागकेशर १ भाग और खूनखराबा (यूनानी-दम उल अखवेन) १ भाग दोनोंका कपड़छान चूर्ण करके रख ले।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—यह योग ३ माशा दिनमें ३-४ बार यथावश्यक मोसम्बी, मीठा अनार या हरे धनियेकी पत्ती इनमेंसे किसीके रसके साथ देनेसे अर्शका रक्त बन्द होता है ।

३—सूरणवटक ।

सूरणो वृद्धदारुश्च भागैः षोडशभिः पृथक् ।
मुशलीचित्रकौ ज्ञेयावष्टभागमितौ पृथक् ॥
शिवा विभीतको धात्री विडङ्गं नागरं कणा ।
भल्लातः पिप्पलीमूलं तालीशं च पृथक् पृथक् ॥
चतुर्भागप्रमाणानि, त्वगेला केशरं तथा ।
द्विभागमात्राणि पृथक् ततस्त्वेकत्र चूर्णयेत् ॥
द्विगुणेन गुडेनाथ वटकान् कारयेद् बुधः ।
प्रबलाग्निकरा ह्येते तथाऽर्शोनाशनाः परम् ॥

शार्ङ्गधर संहिता म० खं० अ० ७ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सुखाया हुआ सूरण (जमीकन्द) १६ तोला, बिधारा १६ तोला, काली मुसली ८ तोला, चित्रकके मूलकी छाल ८ तोला, हरड़का दल, बहेड़ा दल, आँवला, बायबिडंग, सोंठ, छोटी पीपल, शुद्ध भिलावा, पीपलामूल और तालीसपत्र प्रत्येक ४-४ तोला; दालचीनी, छोटी इलायची और नागकेशर प्रत्येक २-२ तोला लेवे । इन सबका कपड़छान चूर्ण कर, सब चूर्णसे दो गुने (२०४ तोले) १ सालके पुराने गुड़में अच्छी तरह कूट मिला, ३-३ माशेके वटक बनाकर रख छोड़े ।

मात्रा—१-२ वटक ।

अनुपान—जल या दूध ।

उपयोग—शुष्कार्शमें इसका उपयोग करे । विशेषतः रोगीकी जठराग्नि मन्द हो, तब इसके सेवनसे अग्नि प्रदीप्त होकर अर्शमें लाभ होता है ।

वक्तव्य—अर्शवालेका प्रायः कब्जियत रहती है, अतः उसको रातको सोते समय यष्ट्यादि चूर्ण, मंजिष्ठादि चूर्ण या बड़ी हरेंके दलका चूर्ण यथावश्यक देना चाहिए ।

४—अभयारिष्ट।

हरीतकीनां प्रस्थार्धं प्रस्थमामलकस्य च।
स्यात् कपित्थाद्दशपलं ततोऽर्धा चेन्द्रवारुणी।
विडङ्गं पिप्पली लौध्रं मरिचं शतपुष्पिका।
द्विपलांशं जलस्यैतच्चतुर्द्रोणे विपाचयेत्।
द्रोणशेषे रसे तस्मिन् धातक्याः कुडवं क्षिपेत्
चातुर्जातस्य कुडवं मृद्विकाप्रस्थमेव च॥
गुडस्य द्वितुलां तिष्ठेत्तत् पक्षं घृतभाजने
पक्षादूर्ध्वं भवेत् पेया ततो मात्रा यथाबलम्॥
अस्याभ्यास्यादरिष्टस्य गुदजा यान्ति संक्षयम्।
शोफारुचिकृमिप्लीहयकृद्गुल्मोदरापहः॥
सिद्धोऽयमभयारिष्टो बलवर्णाग्निवर्धनः।

चरक चि० अ०। १४ किञ्चित्परिवर्तित

द्रव्य और निर्माण विधि—

बड़ी हरें गुठली निकाली हुई ३२ तोला, आँवला ६४ तोला, पके कैथका गूदा ४० तोला, इन्द्रायनके ताजे फल या मूल २० तोला, बायबिडङ्ग, छोटी पीपल, लोध, कालीमिर्च और सौंफ प्रत्येक ८-८ तोला। सबको जवकूट कर ४०९६ तोले जलमें पकावे, जब चौथा हिस्सा १०२४ तोला जल बाकी रहे तब ठंढा करके कपड़ेसे छान ले। पीछे उसमें ८०० तोला गुड़, ६४ तोला धोकर कुटी हुई मुनक्का, धायके फूल १६ तोला, दालचीनी ४ तोला, तेजपात ४ तोला, छोटी इलायची ४ तोला और नागकेशर ४ तोला, इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर पेचदार ढक्कनकी चीनी मिट्टीकी बरनीमें या सागौनकी लकड़ीके पीपेमें डाल बन्द करके १५ दिन रहने दे। १५ दिन के बाद छान फिर उसी बरतनको जलसे स्वच्छ धोकर उसमें भर दे।

मात्रा और अनुपान—२ से ४ तोला तक, उतनाही जल मिलाकर प्रातःकाल या सबेरे शाम देवे।

उपयोग—अर्श (बवासीर), शोथ, अरुचि, पेटके कृमि, प्लीहा और यकृत्की वृद्धि, गुल्म तथा उदर रोगमें इसके सेवनसे अच्छा लाभ होता है।

अन्ययोग—रालका मलहम और गुलाबी मलहम अर्शपर लगानेसे जलन और पीड़ा शान्त होती है। ताजी मेंहदी पीसकर उसका कल्क या भांग जलमें पीसकर उसका कल्क लगानेसे मस्सेकी जलन और पीड़ा शान्त होती है। दशांग लेप ६ माशा, गेहूका आटा २-४ तोला, घी ६ माशा और शहद ६ माशा, इनको जलमें पकाकर उसकी पुलटिस बांधनेसे मस्सेकी सूजन और पीड़ा कम होती है।

कृमिरोगाधिकार १० ।

१—मुस्तादियोग ।

द्रव्य और निर्माण विधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, नागरमोथा, पलास (ढाक-टेसू) के बीज सेंके हुए, बायबिडङ्ग छिलका निकाला हुआ, दाड़िमके मूल या वृक्षकी छाल, करञ्जुए (कंजे) का मगज (मींगी) सेंका हुआ, इन्द्रजव सेंका हुआ, कमीला और किरमानी अजवायन प्रत्येक १-१ भाग; अजवायनका सत्व और सेंकी हुई हींग प्रत्येक ½ भाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर, उसमें अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिलावे। अनन्नाशके पत्तोंके रसमें एक दिन मर्दन करके ४-४ रत्तीकी गोलियां बना छायामें सुखाकर रख ले।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—इस योगकी १-२ गोली खिलाकर ऊपरसे नागरमोथा, मूसाकानी, पलासके बीज, बायविडङ्ग, दाड़िमके वृक्षकी छाल, अजवायन, किरमानी अजवायन, सुपारी, देवदार, सहिंजनके बीज, हरड़दल, बहेड़ादल, आंवला, खैरकी लकड़ीका बुरादा, नीमकी अन्तरछाल और इन्द्रजव समभाग ले, उसको जवकूट कर, उसमेंसे एक तोला द्रव्यको १६ तोला जलमें पकाकर ४ तोला जल बाकी रहे, तब छानकर पिलावे।

उपयोग—मुस्तादियोगके सेवनसे पेटके कृमि और कृमियोंसे होनेवाले उपद्रव दूर होते हैं। ७ दिनसे २१ दिनतक इसका सेवन कराना चाहिये।

पाण्डुरोगाधिकार ११ ।

१—योगराज ।

त्रिफलायास्त्रयो भागास्त्रयस्त्रिकटुकस्य च ।
भागाश्चित्रकमूलस्य विडङ्गानां तथैव च ॥
पञ्चाश्मजतुनो भागास्तथा रूप्यमलस्य च ।
माक्षिकस्य च शुद्धस्य लौहस्य रजसस्तथा ॥
अष्टौ भागाः सितायाश्च तत् सर्वं सूक्ष्मचूर्णितम् ।
माक्षिकेणाप्लुतं स्थाप्यमायसे भाजने शुभे ॥
माषत्रयमितां मात्रां ततः खादेद्यथाग्नि ना ।
योगराज इति ख्यातो योगोऽमृतोपमः ॥
रसायनमिदं श्रेष्ठं सर्वरोगहरं शिवम् ।
पाण्डुरोगं विषं कासं यक्ष्माणं विषमज्वरम् ॥
कुष्ठान्यजरकं मेहं शोषं श्वासमरोचकम् ।
विशेषाद्धन्त्यपस्मारं कामलां गुदजानि च ॥

चरक चि० अ० १६ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

हड़का दल १ भाग, बहेड़ादल १ भाग, आंवला १ भाग, सोंठ १ भाग, काली मिर्च १ भाग, छोटी पीपल १ भाग, चित्रकके मूलकी छाल १ भाग, बायविडङ्ग १ भाग, शिलाजीत ५ भाग, रौप्यशिलाजतु ५ भाग, माक्षिकभस्म ५ भाग, लोह-भस्म ५ भाग और मिश्री ८ भाग लेवे। भस्में और शिलाजीत छोड़कर अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण करे। पीछे उसमें भस्में तथा शिलाजीत मिला, ६-६ रत्तीकी गोलियां बनाकर रख छोड़े। यदि रौप्यशिलाजतु न मिले तो शिलाजीत १० तोला लेवे।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सवेरे-शाम दूधसे देवे।

उपयोग—पांडुरोग, खांसी, राजयक्ष्मा, मन्दाग्नि, प्रमेह, शोष, श्वास, अरुचि, अपस्मार कामला और अर्शमें इसका प्रयोग करे। अपस्मारमें इस योगसे लाभ होता देखा गया है।

५

२—नवायसचूर्ण (नवायसलोह)।

त्र्यूषणत्रिफलामुस्तविडङ्गदहनाः समाः।
नवायोरजसो भागास्तच्चूर्णं मधुसर्पिषा॥
भक्षयेत् पाण्डुहृद्रोगकुष्ठार्शःकामलापहम्।
नवायसमिदं चूर्णं कृष्णात्रेयेण भाषितम्॥

चरकसंहिता चि० अ० १६।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, हड़का दल, बहेड़ादल, आँवला, नागरमोथा, वायबिडंग और चित्रकके मूलकी छाल प्रत्येकका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण १-१ भाग और लोहभस्म या मंडूरभस्म ९ भाग ले, सबको ३ दिन मर्दन करके रख ले।

मात्रा—२-४ रत्ती।

अनुपान—दूध या छाँछके साथ देवे।

उपयोग—ज्वरके पीछे जो पाण्डुरोग होता है उसमें तथा जीर्ण विषमज्वरमें इससे अच्छा लाभ होता है।

३—कालमेघनवायस।

कालमेघरजोभागैर्नवभिः संप्रयोजितम्।
सप्ताहं कालमेघस्य रसेनाथ शृतेन वा॥
भावितं जायते तत्तु कालमेघनवायसम्।
रक्तित्रयमतो दद्याद्यकृत्पाण्डुनिवृत्तये॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

यदि पूर्वोक्त नवायस चूर्णमें ९ भाग कालमेघके पंचांगका चूर्ण मिला, उसको कालमेघके स्वरस वा क्वाथकी ७ भावना देकर तैयार करे तो यह **कालमेघनवायस** तैयार होता है।

मात्रा—३ रत्ती।

अनुपान—जल।

उपयोग—जीर्ण विषमज्वर, ज्वरान्तदौर्बल्य, पाण्डुरोग और यकृत्की वृद्धिमें इससे विशेष लाभ होता है।

४—रोहितकलौह ।

रोहीतकसमायुक्तं त्रिकत्रययुतं त्वयः ।
यकृत्प्लीहभवं शोथं पाण्डुरोगं च नाशयेत् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

हड़का दल, बहेड़ादल, आंवला, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, चित्रकके मूलकी छाल, नागरमोथा और बायबिडङ्ग प्रत्येक १-१ भाग, रोहीडाके वृक्षकी अन्तर्छाल ९ भाग, इन सबका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, उसमें लोहभस्म या मंडूरभस्म ९ भाग मिला, रोहीडाके वृक्षकी अन्तर्छालके क्वाथकी ७ भावनायें दे, छायामें सुखाके पीसकर रख ले।

मात्रा—३ रत्ती।

अनुपान—दूध या छाछ।

उपयोग—यकृत् और प्लीहाकी वृद्धि-शोथ, पाण्डुरोग और जीर्णविषमज्वरमें यह अच्छा लाभ देनेवाला योग है।

अन्य योग—सर्वप्रकारके पपटीके योग, वसन्तमालती, संशमनी वटी, अभ्रक-भस्म, मुक्तापिष्टी, आरोग्यवर्धनी और पुनर्नवामण्डूर इन योगोंसे पाण्डुरोगमें अच्छा लाभ होता है।

वक्तव्य—पांडुरोगवालेको पूर्ण विश्रान्ति लेनी चाहिये अर्थात् सब प्रकारके शारीरिक और मानसिक परिश्रम छोड़कर दिन रात बिछौनेपर लेटे रहना चाहिये। भोजन में दूध, छाछ, मोसम्बी—माल्टा, सेव, दाड़िम-अनार, खरबूजा, मीठा नीबू, ऊख (ईख-गन्ना) और आम आदि फल, इतने पथ्यपर रहकर औषधका प्रयोग करनेसे रोगी शीघ्र अच्छा होता है। मीठा अच्छा आम पांडुरोगीके लिये अमृतके तुल्य है। अन्न प्रारम्भमें पुराने चावलका भात, मूंगकी दाल और हल्के साग देना चाहिये। बादमें गेहूंकी रोटी, दलिया भी दे। ब्रह्मचय अत्यन्त आवश्यक है। औषध छोड़नेके पीछे भी दूध, छाछ और फलोंका सेवन छ मास तक जारी रखना चाहिये। अन्न सहसा न बढ़ाना चाहिये।

५—कामलाहररस ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद ४ तोला, शुद्धगन्धक ४ तोला, त्रिफलाका चूर्ण १६ तोला, यवक्षार

८ तोला, शुद्ध सज्जीखार ८ तोला और डमरूयन्त्रमें ऊर्ध्वपातन किया हुआ नौसादर ८ तोला लेवे । प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्य मिला, ३ घंटा मर्दन करके शीशीमें भर लेवे ।

मात्रा और अनुपान—३ माशा दिनमें तीन बार मक्खन निकाली हुई छाछके साथ देवे ।

उपयोग—कामलामें इस योगसे अच्छा लाभ होता है ।

पथ्य—रोगीको केवल मक्खन निकाली हुई छाछ और भातके पथ्य पर रखे तथा गन्ना, मोसम्बी, संतरेका रस और कच्चे नारियलका जल पिलावे ।

अन्य योग—पृष्ठ ४४ पर लिखा हुआ शतपत्र्यादि चूर्ण १-२ माशा और शुद्ध सज्जीखार (या सोडा बाई कार्ब) १-२ माशा एकत्र मिलाकर जलके साथ देवे । ऐसे दिनमें ४ बार देनेसे कामलामें अच्छा लाभ होता है ।

यकृत्-प्लीह-उदर-शोथरोगाधिकार १२।

१—आरोग्यवर्धनी गुटिका ।

रसगन्धकलोहाभ्रशुल्वभस्म समांशकम् ।
त्रिफला द्विगुणा प्रोक्ता त्रिगुणं च शिलाजतु ॥
चतुर्गुणं पुरं शुद्धं चित्रमूलं च तत्समम् ।
तिक्ता सर्वसमा ज्ञेया सर्वं संचूर्ण्य यत्नतः ॥
निम्बवृक्षदलाम्भोभिर्मर्दयेद्दिवसत्रयम् ।
ततश्च वटिका कार्या त्रिगुञ्जाफलमानतः ॥
मण्डलं सेविता सैषा हन्ति शोथानशेषतः ।
जीर्णज्वरं यकृद्वृद्धिं प्लीहवृद्धिं जलोदरम् ॥
पाचनी दीपनी पथ्या हृद्या मेदोविनाशिनी ।
मलशुद्धिकरी नित्यं दुर्धर्षं क्षुत्प्रवर्तिनी ॥
आरोग्यवर्धनी नाम्ना गुटिकेयं प्रकीर्तिता ।

रसरत्नसमुच्चय कुष्ठाधिकारसे किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, लोहभस्म १ भाग, अभ्रकभस्म १ भाग, ताम्रभस्म १ भाग, बड़ी हर्रका दल २ भाग, बहेड़ादल २ भाग, आंवला २ भाग, शिलाजतु ३ भाग, शुद्ध गूगल ४ भाग, चित्रकके मूलकी छाल ४ भाग और कुटकी २२ भाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर, उसमें अन्य भस्में, शिलाजतु और शेष द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिलावे। पीछे गूगलको नीमकी ताजी पत्तीके स्वरसमें ६ घण्टा भिगो, हाथसे मसल, कपड़ेसे छान, उसमें अन्य द्रव्य मिलाकर मर्दन करे। नीमकी ताजी पत्तीके रसमें ३ दिन मर्दन कर ३-३ रत्तीकी गोलियाँ बना, छायामें सुखाकर रख लेवे।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—रोगानुसार जल, दूध, पुनर्नवादि क्वाथ, केवल पुनर्नवाका क्वाथ, दशमूलक्वाथ, मूत्रलकषाय आदि।

गुण और उपयोग—आरोग्यवर्धनी उत्तम पाचन, दीपन, शरीरके स्रोतोंका शोधन करनेवाली, हृदयको बल देनेवाली, मेदको कम करनेवाली और मलोंकी शुद्धि करनेवाली है। यकृत्, प्लीहा, बस्ति-वृक्क, गर्भाशय, अन्त्र, हृदय आदि शरीरके किसी भी अन्तरवयवके शोथमें, जलोदरमें, जीर्णज्वर और पाण्डुरोगमें इस योगसे अधिक लाभ होता है। पाण्डुरोगमें यदि दस्त पतले और अधिक होते हों तो इसका प्रयोग न करके पर्पटीयोगोंका प्रयोग करना चाहिये। सर्वाङ्ग (सर्वसर) शोथमें और उदर-रोगोंमें विशेषतः जलोदरमें रोगीको केवल गायके दूधके पथ्य पर रखकर इसका प्रयोग करना चाहिये। यकृत्की वृद्धिके कारण शोथ हो तो पुनर्नवाष्टक क्वाथमें रोहीडाकी छाल और शरपुंखामूल १-१ भाग अधिक मिलाकर उसके अनुपानसे इसका प्रयोग करे। यदि हृद्रोगजन्यशोथ हो तो आरोग्यवर्धनीके साथ डिजिटेलिसपत्रचूर्ण ½ से १ रत्ती और जङ्गली प्याज (वन्यपलाण्डु) का चूर्ण १-२ रत्ती मिलाकर पुनर्नवादि या दशमूलके क्वाथके साथ इसका प्रयोग करे। जीर्णफुप्फुसधराकलाशोथमें इसके साथ शृङ्गभस्म ४-८ रत्ती मिलाकर भारंगमूल, पुनर्नवा, देवदार और अडूसाके क्वाथके साथ इसका प्रयोग करे। मेद कम करनेके लिये रोगीको केवल गायके दूधपर रखकर शार्ङ्ग-धरोक्त महामंजिष्ठादि क्वाथके अनुपानसे इसका सेवन करावे।

वक्तव्य—गुजरात-काठियावाड़के कई वैद्य और फार्मसीवाले इस योगमें द्रव्योंका

प्रमाण इस प्रकार लेते हैं—पारद १, गन्धक १, लोहभस्म १, अभ्रकभस्म १, ताम्र-भस्म १, त्रिफला मिलकर १०, शिलाजीत १५, गूगल २०, चित्रकमूल २० और कुटकी ७० भाग ।

२—पुनर्नवामण्डूर।

पुनर्नवात्रिवृद्व्योषविडङ्गं दारु चित्रकम् ।
कुष्ठं हरिद्रे त्रिफला दन्ती चव्यं कलिङ्गकाः ॥
कटुका पिप्पलीमूलं मुस्तं चेति पलोन्मितम् ।
मण्डूरं तु समं चूर्णाद्गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत् ॥
कोलवद्गुटिकाः कृत्वा तक्रेणालोड्य ना पिबेत्।
ताः पाण्डुरोगान् प्लीहानमर्शांसि विषमज्वरम् ॥
यकृद्विकारं श्वयथुं हन्युः कुष्ठं कृमींस्तथा ।

चरकसंहिता चि० अ० १६ से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

पुनर्नवाके मूल, निसोथ, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, वायबिडङ्ग, देवदार, चित्रकके मूलकी छाल, कूठ, हल्दी, दारुहल्दी, हर्रेका दल, बहेड़ादल, आंवला, दन्ती-मूल, चवक (चाव), इन्द्रजव, कुटकी, पीपलामूल और नागरमोथा प्रत्येकका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण ४-४ तोला और मण्डूरभस्म सबके बराबर (८० तोला) लेवे । प्रथम मण्डूरभस्मको अठगुने (१२८० तोले) गोमूत्रमें पकावे । जब वह गाढ़ा होने लगे तब नीचे उतार, उसमें अन्य द्रव्योंका चूर्ण मिलाकर ४-४ रत्तीकी गोलियाँ बना ले ।

मात्रा—१-२ गोली ।

अनुपान और उपयोग—पाण्डुरोग, मन्दाग्नि और अर्श (बवासीर) में छाछके साथ देवे । प्लीहा और यकृत्की वृद्धि तथा शोथमें इसको पुनर्नवादिक्वाथके अनुपानसे देवे । कृमिविकारमें मुस्तादिक्वाथके अनुपानसे देवे ।

३—पुनर्नवादि (पुनर्नवाष्टक) कषाय ।

पुनर्नवाभयानिम्बदार्वीतिक्तापटोलकैः ।
गुडूचीनागरयुतैः क्वाथो गोमूत्रसंयुतः ॥
पाण्डुप्लीहोदरश्वासयकृत्सर्वाङ्गशोथहा ।

शार्ङ्गधर म० खं० अ० २ ।

द्रव्य, निर्माणविधि और मात्रा—

पुनर्नवाके मूल, हरड़, नीमके वृक्षकी अन्तर्छाल, दारुहल्दी, कुटकी, पटोल (कडुए परवलका पञ्चाङ्ग), गिलोय और सोंठ सबको समभाग लेकर और जौकुट-दरदरा करके रख ले। इसमेंसे एक तोला लेकर उसको १६ तोले पानीमें पकावे। जब ४ तोला जल बाकी रहे तब उसे कपड़ेसे छान, उसमें १-२ तोला गोमूत्र मिलाकर पिलावे। ऐसी दो तीन मात्रा दिनमें २-३ बार यथावश्यक दे।

उपयोग—यकृत् और प्लीहाकी वृद्धि—शोथ, उदररोग, सर्वाङ्गशोथ और सन्धिवातमें इसका प्रयोग करे। इससे दस्त और पेशाब साफ होकर शोथ उतर जाता है। इसमें पुनर्नवा और कुटकी दो भाग ले और रोहीडाके वृक्षकी अन्तर्छाल तथा शरपुंखा (सरफोका) के मूल १-१ भाग मिलावे तो अधिक गुण होता है। इस क्वाथका केवल या आरोग्यवर्धनी और पुनर्नवादिमण्डूरके अनुपानरूपमें प्रयोग करना चाहिये। सन्धिवात और आमवातमें इस क्वाथमें चोपचीनी, असगन्ध, बिधारा, उशबा, सुरंजान, एरण्डमूल, सोनापाठाकी छाल, हरमल और रास्ना एक एक भाग और मिला कर शृङ्गभस्म (१-२ माशा) के साथ इसका प्रयोग करे।

४—मूत्रलकषाय।

द्रव्य और निर्माणविधि—

पुनर्नवाके मूल, गन्नेके मूल, कुश-डाभके मूल, कांसके मूल, छोटे गोखरू, खुरासानी अजवायन, रक्त चन्दन, अनंतमूल, देवदार, सौंफ, धनिया, सागौन (शाकवृक्ष) के फल, मकोय, कासनीके बीज, ककड़ी या खीराके बीज, गिलोय, पारवानभेद, काकनज और कमलके फूल सब समभाग ले, जौकुट-दरदरा करके रख ले। इसमेंसे दो तोला लेकर उसको १६ तोले जलमें पकावे। जब ४ तोला जल बाकी रहे तब छान, इसमें अच्छा शिलाजीत ५-१० रत्ती या क्षारपर्पटी ५-१० रत्ती मिलाकर पिलावे। ऐसी एक-एक मात्रा दिनमें २-३ बार यथावश्यक देवे।

उपयोग—इस क्वाथका गुर्देके शोथसे जो सर्वाङ्गशोथ होता है उसमें अच्छा उपयोग होता है। यह अच्छा मूत्रल (पेशाब बढ़ाने और साफ लानेवाला) है। अश्मरीनिमित्त जो कमर और पेटमें शूल-दर्द होता है, उसमें इस क्वाथमें जटामांसी २ भाग और खुरासानी अजवायनके बीज या पत्ती १ भाग और मिलाकर इसका प्रयोग करे। साथमें हजरुलयहुदकी भस्म ४-८ रत्ती तक दे तो विशेष गुण होता है।

५—-दशमूलकषाय ।

ज्वराधिकारोक्त दशमूलकषाय केवल या पुनर्नवादिकषाय और मूत्रलकषायके साथ मिलाकर देनेसे शोथमें उत्तम लाभ होता है ।

वक्तव्य—इन क्वाथोंके साथ आरोग्यवर्धनी या पुनर्नवामण्डूर दिया जावे तो विशेष और शीघ्र लाभ होता है ।

६—दोषघ्नलेप ।

पुनर्नवां दारुशुण्ठीं सिद्धार्थं शिग्रुमेव च ।
काकमाचीरसैः पिष्ट्वा प्रलेपः सर्वशोथजित् ॥

शार्ङ्गधर उ० खं० अ० ११ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—-

पुनर्नवा (गदहपूरना-सांठी) के मूल, देवदार, सोंठ, सफेद सरसों और सहिजनाकी छाल इनका कपड़छान चूर्ण बना, मकोयके रसमें पीसकर लेप करे ।

उपयोग—बात और कफसे होनेवाले शोथमें इस लेपसे विशेष लाभ होता है ।

७—दशाङ्गलेप ।

शिरीषं मधुयष्टी च तगरं रक्तचन्दनम् ।
एला मांसी निशायुग्मं कुष्ठं बालकमेव च॥
इति सञ्चूर्ण्य लेपोऽयं पञ्चमांशघृतप्लुतः ।
जलेन क्रियते सुज्ञैर्दशाङ्ग इति संज्ञितः ॥
विसर्पान् विषविस्फोटान् शोथान् दुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सिरसकी छाल, मुलेठी, तगर, लालचन्दन, छोटी इलायची, जटामांसी (बालछड़), हल्दी, दारुहल्दी, कूठ और नेत्रवाला इनको एकत्र कूट कपड़छान चूर्ण करके रख ले ।

उपयोगविधि और उपयोग—इस लेपको ठण्डे जलमें पीस, उसमें पाँचवा हिस्सा गौका घी मिलाकर या बिना घी मिलाये ही लेप करे । इस लेपसे विसर्प, विष, विस्फोटक, शोथ (सर्वाङ्ग-सर्बसर और व्रणशोथ दोनों), सिरका दर्द और दुष्टव्रण अच्छे होते हैं । पैत्तिक और रक्तज शोथमें यह उत्तम योग है । वृषणके शोथमें दशांगलेप और संभालूकी ताजी पत्ती दोनोंके साथ पीसकर लेप करनेसे अच्छा लाभ होता है । ज्वरमें १ तोला दशाङ्गलेप १०-१५ तोले ठंडे जलमें मिला,

उसमें कपड़ा भिगोकर उसकी पट्टी सिरपर चढ़ानेसे सिरकी पीड़ा और ज्वरका वेग कम होता है। यू-डी-कोलनके बदले इसका उपयोग करना अच्छा है। फोड़े-फुन्सियों पर भी दशाङ्गलेप लगानेसे लाभ होता है।

८—कुमार्यासव।

सुपक्करससंशुद्धं कुमार्याः पत्रमाहरेत्।
यत्नेन रसमादाय पात्रे पाषाणमृन्मये॥
द्रोणे गुडतुलां दत्त्वा घृतभाण्डे निधापयेत्।
माक्षिकं लोहचूर्णं च तस्मिन्नर्धतुलां क्षिपेत्॥
कटुत्रिकं लवङ्गं च चातुर्जातकमेव च।
चित्रकं पिप्पलीमूलं विडङ्गं गजपिप्पली॥
चविकं हपुषा धान्यं कटुका गिरिकर्णिका।
मुस्ता फलत्रयं रास्ना देवदारु निशाद्वयम्॥
शतपुष्पाहिङ्गुपत्री आकल्लकमुटिङ्गणम्।
पुनर्नवाद्वयं दन्तीमूलं पुष्करसंभवम्॥
मूलं तु शरपुङ्खायास्तथा रोहीतकत्वचम्।
एषामर्धपलं दत्त्वा धातक्यास्तु पलाष्टकम्॥
मासाज्जातरसं ज्ञात्वा पलमर्धं प्रयोजयेत्।
अष्टावुदरजान् रोगान् गुल्मं शूलं कृमींस्तथा॥
कामलां पाण्डुरोगं च शोथमानाहमेव च।
कुमार्यासवसंज्ञोऽयं नाशयेन्नात्र संशयः॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छा पका हुआ और रसभरा कडुआ ग्वारपाठा ला, उसे जलसे धो, छोटे छोटे टुकड़े कर, लोहेकी बड़ी कड़ाहीमें डाल, आगपर चढ़ा, पाँच-दश उफान आवे इतना गरम कर नीचे उतार कर रख छोड़े। ठंढा होनेपर हाथसे मसल कर कपड़ेसे छान लेवे। इसप्रकार निकाला हुआ रस १०२४ तोला, गुड़ ४०० तोला, शुद्ध फौलादका चूर्ण २०० तोला, शहद २०० तोला और सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, लौंग, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, चित्रकमूल, पीपलामूल, बायबिड़ंग, बड़ी

पीपल, चाब, हाउवेर, धनिया, कुटकी, कोयलके बीज, नागरमोथा, हरड़ बहेड़ा, आँवला, रास्ना, देवदार, हल्दी, दारुहल्दी, सौंफ, ड़ीकामाली, अकरकरा, उटिंगणके बीज, श्वेतपुनर्नवा, रक्तपुनर्नवा, दन्तीमूल, पुष्करमूल, सरफोकाका मूल तथा रोहीडेकी छाल प्रत्येक २-२ तोला और धायके फूल ३२ तोलेका कपड़छान चूर्ण सबको एकत्र मिला, चीनी मिट्टीकी पेचदार ढक्कनकी बरनी या लकड़ीके पीपेमें डालकर रख छोड़े। आसव तैयार होनेपर कपड़ेसे छान, उसी बरतनको जलसे धोकर उसमें भर दे।

मात्रा—२ तोला, उतना ही जल मिलाकर देवे।

उपयोग—सब प्रकारके उदर रोग, शूल, गुल्म, कृमिविकार, कामला, पाण्डुरोग, शोथ और कब्जियतमें कुमार्यासवका प्रयोग करे।

वक्तव्य—आसव छाननेके बाद निकले हुए कल्कको धोकर उसमेंसे लोह अलग कर लेवे। उसको सुखाकर लोहभस्म बनानेके काममें लेवे।

कास-श्वासाधिकार १३।

१—भागोत्तरगुटिका।

रसभागो भवेदेको, गन्धको द्विगुणो भवेत्।
त्रिभागा पिप्पली, पथ्या चतुर्भागा, बिभीतकः॥
पञ्चभागस्तथा वासा षड्भागा, सप्तभागकम्।
भार्गीमूलं, तथा यष्टीमधुकं चाष्टभागकम्॥
ततः सर्वमिदं चूर्णं भाव्यं बब्बुलजैर्द्रवैः।
एकविंशतिवारांस्तु मधुना गुटिका कृता॥
चतुर्गुञ्जाप्रमाणा तां दद्याद्योग्यानुपानतः।
कासं श्वासं निहन्त्येषा भागोत्तरवटी शुभा॥

भैषज्यरत्नावलीसे किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, छोटी पीपल ३ भाग, हरडका दल ४ भाग, बहेड़ादल ५ भाग, अडूसाके मूलकी छाल या छायामें सुखाये हुए फूल ६ भाग, भारंगमूल ७ भाग और मुलेठी ८ भाग लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली

कर, पीछे उसमें अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिला, बबूल (कीकर) की अन्तर्छालके क्वाथकी २१ भावना दे, सुखा, कपड़ेसे छानकर रख ले।

मात्रा—२-४ रत्ती।

अनुपान—मधु (शहद) के साथ चटाकर ऊपरसे गोजिह्वादिक्वाथ, द्राक्षारिष्ट या शर्बतजूफा दे।

उपयोग—सब प्रकारकी खाँसीमें यह उत्तम योग है। यदि खाँसीके साथ श्वास भी हो तो इसके साथ ५-७ रत्ती सोमचूर्ण मिलाकर इसका प्रयोग करे।

२—चन्द्रामृतरस।

त्रिकटु त्रिफला चव्यं धान्यजीरकसैन्धवम्।
रसगन्धकलोहाभ्रं प्रत्येकं कार्षिकं शुभम्॥
टंकणाद् द्विपलं दत्त्वा वासानीरेण मर्दयेत्।
गुञ्जात्रयप्रमाणेन वटिकां चैव कारयेत्॥
कासं पञ्चविधं चापि श्वासं ज्वरसमन्वितम्।
अनुपानविशेषेण हन्ति चन्द्रामृतो रसः॥
कासे सरक्ते दातव्यो रक्तोत्पलरसाप्लुतः।

भैषज्यरत्नावलीसे किञ्चित्परिवर्तित।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, हर्रेका दल, बहेड़ादल, आँवला, चवक (चाव), धनिया, जीरा, सेन्धानमक, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म और अभ्रकभस्म प्रत्येक १-१ तोला और शुद्ध सुहागा ८ तोला लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर, पीछे उसमें अन्य भस्में तथा वनस्पतियोंका कपड़छान चूर्ण मिला, अडूसेके पत्तोंके स्वरसकी ३ भावनायें दे, ३-३ रत्तीकी गोलियाँ बना, छायामें सुखाकर रख छोड़े।

मात्रा और अनुपान—१ गोली शहदमें मिलाकर चटावे और ऊपरसे गोजिह्वादिक्वाथ, द्राक्षारिष्ट या शर्बतजूफा पिलावे। यदि खांसीमें कफके साथ रक्त आता हो तो एक गोली ५ रत्ती नागकेशरका चूर्ण और ५ रत्ती खूनखराबेके चूर्णके साथ मिलाकर १ तोला लाल-कमलके स्वरसके अनुपानसे देवे। खांसीके साथ श्वास भी हो तो एक गोलीके साथ ५-७ रत्ती सोमचूर्ण मिलाकर शहदके साथ देवे।

उपयोग—सब प्रकारकी खांसी, दमा और उसके साथ हलका ज्वर भी रहता हो तो इस योगसे अच्छा गुण होता है।

३—द्राक्षारिष्ट ।

मृद्वीकायाः पलशतं चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ।
द्रोणशेषे सुशीते च पूते तस्मिन् प्रदापयेत् ॥
द्वे तुले क्षौद्रखण्डाभ्यां धातक्याः प्रस्थमेव च ।
कङ्कोलकं लवङ्गं च जात्याः पत्रफले तथा ॥
पलांशकं च मरिचत्वगेलापत्रकेशरम् ।
पिप्पली चित्रकं चव्यं विडङ्गं ग्रन्थिकं तथा ॥
घृतभाण्डे विनिक्षिप्य मासाज्जातरसं पिबेत् ।
उरःक्षतं क्षयं हन्ति कासश्वासगलामयान् ॥
द्राक्षारिष्टाह्वयः प्रोक्तो बलकृन्मलशोधनः ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुनक्का ४०० तोला ले, उसको जलसे धो, कल्क जैसा कूटकर ४०९६ तोला जलमें पकावे। जब १०२४ तोला बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, उसमें ४०० तोला शहद और ४०० तोला चीनी (शक्कर) मिलावे। पीछे उसमें धायके फूल ६४ तोला तथा शीतल मिर्च (कबावचीनी), लौंग, जायफल, जावित्री, काली मिर्च, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, छोटी पीपल, चित्रकमूल, चवक, वायबिडंग और पीपलामूल ये प्रत्येक ४-४ तोला लेकर और कपड़छान चूर्ण करके मिलावे। पीछे उसको पेचदार ढक्कनकी चीनी मिट्टीकी बरनीमें या सागौनकी लकड़ीके पीपे (ढोल) में डालकर एक मास रख छोड़े। बाद कपड़ेसे छान, उसी बरतनको जलसे धो, उसमें उसको डाल, पात्रके मुखको अच्छी तरहसे बन्द करके रख छोड़े।

मात्रा और अनुपान—२-४ तोला उतना ही जल मिलाकर दिनमें २-३ वार यथावश्यक दे।

गुण और उपयोग—द्राक्षारिष्ट भूख बढ़ानेवाला, दस्त साफ लानेवाला और बलकारक है। उरःक्षत, खाँसी, श्वास, राजयक्ष्मा आदिमें इसका प्रयोग करे।

४—शर्बतजूफा

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुनक्का ३० तोला, उन्नाब २० तोला, सपिस्तान (लिसोड़ेके पके और सूखे फल) २० तोला, सूखे अंजीर २० तोला, सोसनके मूल (बेख सोसन) २० तोला,

मुलेठी २० तोला, सौंफके मूल १० तोला, कर्फसके मूल (बेख कर्फस) १० तोला जूफा १० तोला, हंसराज १० तोला, बिहीदाना ५ तोला अनीसून ५, तोला सौंफ ५ तोला, जौ छिले हुए ३ तोला, अलसी ३ तोला, जटामांसी ३ तोला और खतमीके बीज ३ तोला ले सबको जौकुट करके ३ गुने जलमें रातको भिगोदे। सवेरमें मन्दी आँच पर पकावे। जब एक तिहाई जल रह जाय तब ठंढा करके कपड़ेसे छान ले। पीछे उसमें ६ सेर(४८०)तोला चीनी मिलाकर पकावे। जब शहद जैसी चाशनी हो जाय तब नीचे उतारकर ठंढा होने दे। जब ठंढा हो जाय तब कपड़ेसे छानकर बोतलोंमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—एकसे दो तोला शर्बत उतना ही जल मिलाकर दिनमें २-३ बार यथावश्यक दे।

उपयोग—वात और पित्तप्रधान खाँसीमें इसका उपयोग करे। इससे कफ ढीला होकर खांसनेके साथ तुरन्त गिर जाता है।

५—वासाहरीतक्यवलेह।

तुलामादाय वासायाः संक्वाथ्याष्टगुणे जले।
तेन पादावशेषेण पाचयेदाढकं भिषक् ॥
गुरूणामभयानां तु खण्डाच्छुद्धात् पलं शतम्।
शीतीभूते निदध्यात्तु क्षौद्रस्याष्टौ पलानि तु ॥
वंशोद्भवायाश्चत्वारि पिप्पल्यर्धपलं तथा।
चातुर्जातपलं शृङ्ग्याः पलं हन्ति निषेवितः ॥
कासं क्षयं तथा श्वासं रक्तपित्तं सपीनसम्।
कर्षार्धं भक्षयेदस्य गव्यं दुग्धं पिबेदनु ॥

गदनिग्रह लेहाधिकारसे किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अडूसेके मूल या ताजो पत्ती ४०० तोला ले उसको जलसे धोकर कूट ले। पीछे उसको अठगुने जलमें डालकर कलईदार बरतनमें पकावे। जब चौथाई जल बाकी रहे तब ठंढा करके कपड़ेसे छान ले। बाद उसमें गुठली निकाली हुई बड़ी हर्रेका चूर्ण २५६ तोला और चीनी-शक्कर ४०० तोला डालकर पकावे। पकाते समय लकड़ीके खोंचेसे हिलाता रहे। जब लेह्य जैसा हो तब नीचे उतारे। ठण्डा होनेपर

उसमें ३२ तोला शहद तथा वंशलोचन १६ तोला, छोटी पीपल २ तोला, दालचीनी १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, तेजपात १ तोला, नागकेशर १ तोला और काकड़ासींग ४ तोला, इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर काँच या चीनीके बरतनमें भर ले ।

मात्रा और अनुपान—आधा तोला लेह चटाकर ऊपरसे गौका गरम किया हुआ दूध पिलावे ।

उपयोग—खांसी, क्षय, श्वास, रक्तपित्त और जुकाममें इसका प्रयोग करे ।

६—सितोपलादिचूर्ण ।

सितोपलां तुगाक्षीरीं पिप्पलीं बहुलां त्वचम् ।
अन्त्यादूर्ध्वं द्विगुणितं लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥
चूर्णितं प्राशयेद्वा तच्छ्वासकासकफातुरम् ।
सुप्तजिह्वारोचकिनमल्पाग्निं पार्श्वशूलिनम् ॥

चरक चि० अ० ११ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मिश्री १६ तोला, वंशलोचन ८ तोला, छोटी पीपल ४ तोला, छोटी इलायची २ तोला और दालचीनी १ तोला ले, सबको कूट, कपड़छान चूर्ण करके रख ले ।

मात्रा और अनुपान—४-१२ रत्ती शहद और गायके घीके साथ मिलाकर देवे । यदि वात और पित्तप्रधान रोगमें तथा वात और पित्त प्रकृतिवालेको देना हो तो अनुपानमें शहद एक भाग और घी दो भाग लेवे । यदि कफप्रधान रोगमें और कफप्रकृतिवालेको देना हो तो शहद दो भाग और घी एक भाग लेवे । सूखी खाँसीमें घीके साथ और कफ अधिक तथा सरलतासे निकलता हो ऐसी खांसीमें शहदके साथ देवे ।

७—एलादिगुटिका ।

एलापत्रत्वचोऽर्धाक्षाः पिप्पल्यर्धपलं तथा ।
सितामधुकखर्जूरमृद्वीकाश्च पलोन्मिताः ॥
संचूर्ण्य मधुना युक्ता गुटिकाः संप्रकल्पयेत् ।
अक्षमात्रां ततश्चैतां भक्षयेन्ना दिने दिने ॥

कासं श्वासं क्षयं हिक्कां स्वरभेदमुरःक्षतम् ।
गुटिका तर्पणी वृष्या रक्तपित्तं च नाशयेत् ॥

चरक चि० अ० ११ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

छोटी इलायची आधा तोला, तेजपात आधा तोला, दालचीनी आधा तोला, छोटी पीपल २ तोला, मिश्री ४ तोला, धोकर बीज निकाले हुये मुनक्का ४ तोला और गुठली निकाला हुआ पिण्डखजूर ४ तोला लेवे । प्रथम मुनक्का और पिण्डखजूरको खूब महीन पीसे । पीछे उसमें अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिलाकर १॥ माशेकी गोलियाँ बनाले । यदि गोली बनानेमें आवश्यकता पड़े तो थोड़ा शहद मिलावे ।

मात्रा और उपयोग—२-२ घंटेसे १-१ गोली मुंहमें रखकर रस उतारे । दिन भरमें १ तोला देवे । खांसी, श्वास, क्षय, हिचकी, उरःक्षत और स्वरभंग (आवाज बैठ जाने) में इसका उपयोग करे ।

८—लवङ्गादिवटी ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

लौंग ८ तोला, बहेड़ादल ४ तोला, छोटी पीपल ४ तोला, शक्करतिगाल ३ तोला, काकड़ासींग २ तोला, अनारका सूखा छिलका १ तोला, दालचीनी २ तोला, खेरसार या कत्था १० तोला, मुलेठीका सत २० तोला मुनक्का १० तोला, आकके फूल ५ तोला, नौशादर २ तोला, कपूर १ तोला और सुहागा आगपर फुलाया हुआ १ तोला लेवे । प्रथम मुनक्का और आकके फूलको कूटकर चौगुने जलमें क्वाथ करे । जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छानकर उसमें मुलेठीका सत्त्व, नौशादर, कपूर, और सुहागेकी लाई (खील) मिलावे । पीछे अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, मटर बराबर गोलियां बनाकर छायामें सुखा ले ।

उपयोग—जब खाँसी जोरकी आती हो और कफ न निकलता हो तब इस गोलीको मुँहमें रखकर रस निगलनेसे खांसीका वेग कम होता है, कफ आसानी से निकलता है और गला साफ होता है ।

६—सोमयोग ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

रससिन्दूर १ भाग और सोमचूर्ण २० भाग लेवे । प्रथम रससिन्दूरको खूब

महीन पीसे । पीछे उसमें सोमका कपड़छान चूर्ण मिला, एक दिन मर्दन करके शीशीमें भर ले ।

मात्रा—५-१० रत्ती अकेला या अभ्रकभस्म, भागोत्तरवटी अथवा चन्द्रामृत-रसके साथ मिलाकर देवे ।

अनुपान—जल, या मधु (शहद) के साथ दे ।

उपयोग—इसके प्रयोगसे दमेमें तात्कालिक और अच्छा लाभ होता है ।

१०—धूमयोग

द्रव्य और निर्माणविधि—

छायामें सुखाई हुई अडूसेकी पत्ती ४ भाग, छायामें सुखाई हुई धतूरेकी पत्ती २ भाग, भांग २ भाग, काली चाय २ भाग और खुरासानी अजवायनकी पत्ती २ भाग ले, सबका मोटा चूर्ण कर कलमीशोरेके तृप्तद्रवमें * भिगो, छायामें सुखाकर रख ले। आवश्यकता पड़ने पर इसकी मोटे कागजमें बीड़ी बनाकर धूम्रपान करनेके लिये देवे ।

उपयोग—इस धूमपानसे दमेमें तत्काल लाभ होता है । यदि रोगीको खुश्की मालूम हो तो धूमपान करानेके थोड़ी देरके बाद गौका दूध देना चाहिये ।

अन्य योग—वसन्तमालती, अभ्रकभस्म, सितोपलादि चूर्ण—भागोत्तर रस या चन्द्रामृत रसके साथ मिलाकर, स्वर्णवंग भागोत्तर रसके साथ मिलाकर गोजिह्वादि क्वाथके अनुपानसे और चयवनप्राशावलेह इनका भी खांसीमें उपयोग कर सकते हैं ।

११—तालीशादि चूर्ण ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

तालीशसोमयष्ट्याह्ववासापुष्पैः सपुष्करैः ।
समभागैः कृतं चूर्णं श्वासकासनिवर्हणम् ॥

तालीसपत्र, सोम, मुलेठी, अड़ूसेके फूल और पुष्करमूल सम भाग ले, कपड़छान चूर्ण कर, ४-६ रत्तीकी मात्रामें दिनमें ३-४ वार शहदके साथ देवे। इस चूर्णसे श्वास, खांसी और जुकाममें लाभ होता है ।

पं० जियालालजी वैद्य, श्रीनगर(काश्मीर)से प्राप्त

* कलमी सोरेको जलमें मिलाकर उसका घोल बनावे । जब उसमें अधिक सोरा न घुल सके तब उस घोलको **तृप्तद्रव** कहते हैं ।

राजयक्ष्मा-उरःक्षताधिकार १४।

१—अमृतप्राशावलेह।

जीवकर्षभकौ वीरां जीवन्तीं नागरं शटीम्।
चतस्रः पर्णिनीर्मेदे काकोल्यौ द्वे निदिग्धिके॥
पुनर्नवे द्वे मधुकमात्मगुप्तां शतावरीम्।
ऋद्धिं परूषकं भार्गीं मृद्वीकां गोक्षुरं कणाम्॥
शृङ्गाटकं तामलकीं पयस्यां पद्मकं बले।
बदराक्षोटखर्जूरवातामाभिषुकाण्यपि॥
फलानि चैवमादीनि कल्कान् कुर्वीतकार्षिकान्।
धात्रीवरीविदारीक्षुच्छागमांसरसं पयः॥
कुर्यात् प्रस्थोन्मितं तेन घृतप्रस्थौ विपाचयेत्।
प्रस्थार्धं मधुनः शीते शर्कराप्रस्थमेव च॥
द्विकार्षिकाणि पत्रैलाहेमत्वङ्मरिचानि च।
कुडवं तु तुगाक्षीर्याश्चूर्णितं प्रक्षिपेत्तथा॥
अमृतप्राशमित्येतन्नराणाममृतं घृतम्।
कासहिक्काक्षयश्वासदाहतृष्णास्रपित्तनुत्॥
नष्टशुक्रक्षतक्षीणदुर्बलव्याधिकर्षितान्।
स्त्रीप्रसक्तान् कृशान् वर्णस्वरहीनांश्च बृंहयेत्॥

चरक चि० अ० १५ से किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जीवक, ऋषभक विदारीकन्द, जीवन्ती, सोंठ, कचूर, सरिवन, पिठवन, जंगली उड़द (मषवन), जंगली मूंग, (मुगवन), मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, कटेरी (छोटी कटाई-भटकटैया), बड़ी कटाई, सफेद पुनर्नवा (गदहपूरना-सांठी), लाल पुनर्नवा, मुलेठी, कवाँच, शतावर, ऋद्धि, फालसा, भारंगमूल, मुनक्का, छोटे गोखरू, छोटी पीपल, सिंघाड़ा, भुइं आंवला, दुधिया-दुद्धी, पद्माख, बरियारा, गुलशकरी, उन्नाव, अखरोट, पिण्डखजूर, बादाम, पिस्ता, चिलगोझा-नेजा, खुरमानी, चिरोंजी प्रत्येक एक एक तोला ले, उनका कपड़छान चूर्ण कर, जलमें पीसकर कल्क करे। पीछे उसमें ताजे

आँवलेका रस ६४ तोला, ताजी शतावरका रस ६४ तोला, विदारीकन्दका स्वरस ६४ तोला, बकरेके मांसका रस ६४ तोला, बकरीका या गायका दूध ६४ तोला और गौका घी १२८ तोला मिलाकर घृतपाककी विधिसे घृत तैयार करे। घृत सिद्ध होनेपर कपड़ेसे छानकर उसमें ३२ तोला शहद, मिश्री ६४ तोला, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, दालचीनी और काली मिर्च इन प्रत्येकका चूर्ण २-२ तोला तथा वंशलोचनका चूर्ण १६ तोला मिलाकर काँचके बरतनमें भरले।

मात्रा—आधासे एक तोला।

अनुपान—गौ या बकरीका दूध।

गुण और उपयोग—यह घृत उत्तम पौष्टिक है। खाँसी, क्षय, दमा, दाह, तृषा, रक्तपित्त और शुक्रक्षयमें इसका प्रयोग करे। कृश और जिनका शरीरका वर्ण और स्वर क्षीण हो गया हो उनको, विशेष स्त्रीसंग करनेवालोंको, दुर्बल और रोगोंसे कृश हुओंको यह पुष्ट करता है। राजयक्ष्मामें और बालकोंके सूखा रोगमें इसके सेवनसे विशेष लाभ होता है।

वक्तव्य—जो रोगी मांसवाली दवा न लेना चाहता हो उसके लिये मांस-रसके स्थानमें उतना उड़दका क्वाथ डालकर यह योग तैयार करे।

२—एलादिरसायन।

एलाजमोदात्रिफलासौराष्ट्रीव्योषचित्रकान्।
सारानरिष्टगायत्रीसालवीजकसंभवान्॥
भल्लातकं विडङ्गं च वचां मुस्तां चतुष्पलम्।
पचेदष्टगुणे तोये पादांशमवशेषयेत्॥
पुनस्तेन घृतप्रस्थं सिद्धे चास्मिन् पलानि षट्।
तुगाक्षीर्याः क्षिपेत्त्रिंशत् सिताया द्विगुणं मधु॥
घृतात्, त्रिजातात्त्रिपलं ततो लीढं खजाहतम्।
पयोनुपानं तत् प्राह्रे रसायनमयन्त्रणम्॥
मेध्यं चक्षुष्यमायुष्यं दीपनं हन्ति चाचिरात्।
कार्श्यं कासं सयक्ष्माणं स्वरभेदमुरःक्षतम्॥

अष्टाङ्गसंग्रहसे किञ्चित्परिवर्तित

द्रव्य और निर्माणविधि—

छोटी इलायची, अजमोद, हरड़का दल, बहेड़ादल, आँवला, फिटकिरी, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, चित्रकके मूलकी छाल, नीम-खेर-साल और विजयसार इनके सार (बीचकी ठोस लकड़ी-राँच) का बुरादा, भिलावा, बायबिडंग, बच और नागरमोथा प्रत्येक १६-१६ तोला ले, जौकुट-दरदरा करके अठगुने जलमें पकावे। जब चौथाई जल बाकी रहे तब ठंढा करके कपड़ेसे छान ले। पीछे उसमें ६४ तोला गायका घी डाल कर पकावे। जब घृत सिद्ध-तैयार हो जाय तब कपड़ेसे छान, उसमें २४ तोला वंशलोचनका कपड़छान चूर्ण, १२० तोला मिश्रीका कपड़छान चूर्ण, जितना घृत हो उससे दूना शहद और छोटी इलायची ४ तोला, दालचीनी ४ तोला और तेजपात ४ तोला इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर और सबको मथानीसे खूब मथकर काँचकी शीशोमें भर ले। कई वैद्य घृत सिद्ध होनेपर उसको कपड़ेसे छान कर कल्क निकाल नहीं देते, परन्तु कल्क (सिट्ठी) समेत घृतमें वंशलोचनका चूर्ण आदि मिलाकर और मथकर रख लेते हैं।

मात्रा और अनुपान—१-२ तोला सबेर-शाम भोजनसे ३ घंटा पहले गौके या बकरीके दूधके अनुपानसे देवे।

उपयोग—राजयक्ष्मा, उरःक्षत, खांसी, कार्श्य, बालकोंका फक्करोग-सूखा इन रोगोंमें इसका उपयोग करे। इसके सेवनसे बल, मांस और स्मरणशक्ति बढ़ती है। यह उत्तम रसायन है।

३—च्यवनप्राशावलेह।

पाटलारणिकाश्मर्यबिल्वारलुकगोक्षुराः।
पर्ण्यौ बृहत्यौ पिप्पल्यः शृङ्गी द्राक्षामृताभयाः॥
बला भूम्यामली वासा ऋद्धिर्जीवन्तिका शटी।
जीवकर्षभकौ मुस्तं पौष्करं काकनासिका॥
मुद्गपर्णी माषपर्णी विदारी च पुनर्नवा।
काकोल्यौ कमलं मेदे वर्यैलागुरुचन्दनम्॥
एकैकं पलसंमानं स्थूलचूर्णितमौषधम्।
एकीकृत्य महत्पात्रे पञ्चामलशतानि च॥

पचेद् द्रोणजले क्षिप्त्वा ग्राह्यं पादावशेषितम्।
तान्यामलानि पश्चात्तु निष्कुलीकृत्य वाससा॥
दृढहस्तेन संपीड्य क्षिप्त्वा तत्र ततो घृतम्।
पलसप्तमितं तानि सम्यग्भृष्ट्वाऽल्पवह्निना॥
ततस्तत्र क्षिपेत् क्वाथे खण्डं पादतुलोन्मितम्।
लेहवत् साधयित्वा च भृष्टान् धात्रीफलान् क्षिपेत्॥
पुनर्लेहत्वसापन्ने चूर्णानीमानि दापयेत्।
पिप्पली द्विपला देया तुगाक्षीरी चतुष्पला॥
प्रत्येकं पलमात्रं च त्वगेलापत्रकेशरम्।
ततस्त्वेकीकृतं सर्वं क्षिपेत् क्षौद्रं च षट्पलम्॥
इत्येतच्च्यवनप्रोक्तं च्यवनप्राशसंज्ञितम्।
लेहं वह्निबलं दृष्ट्वा खादेत् क्षीणो रसायनम्॥
बालवृद्धक्षतक्षीणा नारीक्षीणाश्च शोषिणः।
हृद्रोगिणः स्वरक्षीणा ये नरास्तेषु युज्यते॥
कासं श्वासं पिपासां च वातास्रमुरसो ग्रहम्।
वातपित्तं शुक्रदोषं मूत्रदोषं च नाशयेत्॥
मेधां स्मृतिं स्त्रीषु हर्षं कान्ति वर्णप्रसन्नताम्।
अस्य प्रयोगादाप्नोति नरो जीर्णत्ववर्जितः॥

शार्ङ्गधर संहिता म० खं० अ० ४ से किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि —

पाडरका मूल, अरणी (गनियार—अँगेथु) का मूल, गँभारीका मूल, बेलका मूल, सोनापाठाका मूल, छोटे गोखरू, सरिवन, पिठवन, छोटी कटेरी (कटाई), बड़ी कटेरी, छोटी पीपल, काकड़ासींगी, मुनक्का, गिलोय, हर्रेका दल, बरियारका मूल, भुइँआँवला, अडूसाका मूल, ऋद्धि, जीवन्ती, कचूर, जीवक, ऋषभक, नागरमोथा, पुष्करमूल, कौवाठोंठी, जङ्गली मूंग, जंगली उड़द, विदारीकन्द, गदहपूरना-सांठी, काकोली, क्षीरकाकोली, कमलके फूल, मेदा, महामेदा, शतावर, छोटी इलायची, अगर और सफेद चन्दन प्रत्येक ४-४ तोला ले, उनको जौकुट-दरदरा कर, एक बड़े कलईदार बरतनमें

डाल, उसमें १०२४ जल और ५०० * तोले ताजे आँवले जलसे धोकर और कपड़ेमें बाँध पोटली बनाकर डाले । पीछे उसको अग्निपर पकावे । जब चौथा हिस्सा जल बाकी रहे तब नीचे उतारकर आँवले अलग करले और क्वाथको कपड़ेसे छान ले । आँवलोंकी गुठली अलग करके उसको एक अच्छे कलईदार बरतनके मुँहपर पाट (सन) का कपड़ा बाँध, उसपर थोड़े थोड़े आँवले रख हाथसे दबाकर (मसलकर) छान ले । पीछे उसमें २८ तोले गायका घी डाल कर मंद आँचपर पकावे और लकड़ीके खोंचेसे हिलाता रहे । जब आँवलोंसे घी अलग होने लगे इतने गाढ़े हो जांय तब नीचे उतार कर रख दे । फिर क्वाथमें ५०० तोले हाथसे बनी हुई देशी खाँड-चीनी डाल कर पकावे । जब चाशनी ठंडी होनेपर अवलेह जैसी गाढ़ी बन जाय ऐसी हो तब उसमें आँवले अच्छी तरह मिलाकर थोड़ी देर अग्निपर रख कर हिलाता रहे । बाद नीचे उतार, ठंडा होनेपर उसमें २४ तोला शहद और छोटी पीपल ८ तोला, वंशलोचन १६ तोला, दालचीनी ४ तोला, छोटी इलायची ४ तोला, तेजपात ४ तोला और नागकेशर ४ तोला इनका कपड़छान चूर्ण मिला, चीनी मिट्टीके बरतनमें भर कर रख दे ।

मात्रा—१ से २ तोला ।

अनुपान—गाय या बकरीका दूध ।

गुण और उपयोग—च्यवनप्राश उत्तम रसायन और पौष्टिक है । खांसी, पुराना दमा, राजयक्ष्मा, शुक्रदोष, मूत्रदोष, हृद्रोग, स्वरभंग, स्मरणशक्तिका कम होना आदिमें इसका उपयोग करे ।

४—चतुर्मुखरस ।

रसगन्धकलोहाभ्रं समं सूतांघ्रि हेम च ।
सर्वं खल्ले विनिक्षिप्य कन्याम्भोभिर्विमर्दयेत् ॥
ततोऽमृतावरामुस्तब्राह्मीमांसीलवङ्गजैः ।

* आँवले जंगली छोटे और बगीचेके कलमी बड़े होते हैं । सब फलोंका वजन एकसा नहीं होता, अतः सूखे आँवलेका वजन आधा तोला और गीले आंवलेका वजन १ तोला मान कर व्यवहार करनेका नियम टीकाकारोंने लिखा है ।

देखो शा० सं० अ० ६ श्लोक ४ की आढमल्ली टीका ।

पुनर्नवाचित्रकजै रसैर्गाढं विमर्दयेत् ॥
ततो गोलं विधायाथ रवितापे विशोषयेत् ।
एरण्डपत्रैरावेष्ट्य धान्यराशौ दिनत्रयम् ॥
संस्थाप्य तत उद्धृत्य सर्वरोगेषु योजयेत् ।
एतद्रसायनवरं त्रिफलामधुयोजितम् ॥
क्षयमेकादशविधं पाण्डुं चैवाम्लपित्तकम् ।
अपस्मारं तथोन्मादं भ्रमं मूर्छां प्रमेहकम् ॥
क्रमेण शीलितं हन्ति वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ।

योगरत्नाकर ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, लोहभस्म १ भाग, अभ्रकभस्म १ भाग और सुवर्णभस्म $\frac{1}{8}$ भाग लेवे। प्रथम पारे-गंधककी कज्जली करके उसमें अन्य भस्में मिलावे। पीछे उसको ग्वारपाठा, ताजी गिलोय, त्रिफला, नागरमोथा, ब्राह्मी, जटामांसी, लौंग, पुनर्नवा और चित्रकके मूलकी छाल इनके यथालाभ स्वरस या क्वाथमें १-१ दिन मर्दनकर, एक गोला बनाकर उसको धूपमें सुखावे। जब गोला सूख जाय तब उसपर एरंडकी हरी पत्ती लपेटकर सूतसे बांध ले। पीछे उसको बड़ी धान्यकी कोठीमें ३ दिन रहने दे। ३ दिनके बाद उसको निकाल, ऊपरका एरंडपत्र हटा, खरलमें अच्छी तरह पीसकर शीशीमें भर ले।

मात्रा—१-२ रत्ती।

अनुपान—त्रिफलाका चूर्ण १॥ से ३ माशा और शहद आधासे १ तोलामें मिलाकर दिनमें दो बार सवेर-शाम दे।

उपयोग—राजयक्ष्मा, पाण्डुरोग, अम्लपित्त, अपस्मार, उन्माद, भ्रम (चक्कर आना), मूर्छा, प्रमेह, वातरोग, दिमागकी कमजोरी आदिमें इस योगका अच्छा उपयोग होता है।

५—हेमगर्भरस।

रसस्य भागाश्चत्वारस्तावन्तः कनकस्य च।
तयोश्च पिष्टिकां कृत्वा गन्धो द्वादशभागिकः ॥

कुर्यात् कज्जलिकां तेषां मुक्ताभागास्तु षोडश।
चतुर्विंशच्च शङ्खस्य भागैकं टङ्कणस्य च॥
एकत्र मर्दयेत् सर्वं पक्वनिम्बूकजै रसैः।
मुद्रां दत्त्वा ततो वैद्यः पचेल्लवणयन्त्रके॥
पिष्ट्वा गुञ्जाद्वयोन्मानं दद्याद्व्याज्यसंयुतम्।
कासे श्वासे क्षये जीर्णज्वरे ग्रहणिकागदे॥
अपच्यां च प्रयोक्तव्यो रसोऽयं हेमगर्भकः।

योगरत्नाकर राजयक्ष्माधिकारसे किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

चार तोला शुद्ध पारद लेकर उसमें ४ तोला सोनेके वरक एक-एक करके मिलावे और मर्दन करता रहे। जब सब वरक मिल जावें तब उसमें १२ तोला शुद्ध गन्धक मिलाकर कज्जली करे। पीछे उसमें १६ तोले अच्छे बसराई मोतीका कपड़छान चूर्ण, २४ तोला शंखका कपड़छान चूर्ण तथा १ तोला शुद्ध सुहागा मिला, एक दिन पक्के नीबूके रसमें मर्दन करके चिपटा गोला बनावे। गोला जब सूख जाय तब उसको दो मिट्टीके सकोरोंमें रख, उसकी सन्धिपर सात कपड़मिट्टी करके सुखा ले। अच्छी तरह सूखनेपर एक मिट्टीके घड़ेमें नीचे दो अंगुल पीसे हुए सामुद्र या सेन्धा नमकका चूर्ण बिछा, उसपर संपुटको रख, घड़ेके बाकी हिस्सेको नमकके चूर्णसे भर, घड़ेके मुंहपर उलटा सकोरा रख, दोनोंकी सन्धि कपड़मिट्टी करके बन्द कर दे। पीछे उस घड़ेको चूल्हे पर चढ़ाकर ३ दिन-रात मध्यम आँच दे। जब घड़ा स्वांगशीतल हो जाय तब उसके भीतरसे संपुटको निकाल, कपड़मिट्टी हटाकर गोलेको निकाले। जब गोला पककर कुछ गुलाबी रंग लिये श्वेतवर्णका हो गया हो तो उसको खरलमें १ दिन पीसकर शीशीमें भर ले। गोला यदि श्यामवर्णका हो तो पूर्वोक्त विधिसे एक दिन फिर पकावे।

मात्रा और अनुपान—१-२ रत्ती, ¼ तोला गायके घीमें मिलाकर चटावे।

उपयोग—खांसी, दमा, क्षय, जीर्णज्वर, ग्रहणी और अपचीमें इसका प्रयोग करे। मृगांकरसमें शंखके सिवाय यही द्रव्य हैं। मृगांकरससे यह कुछ विशेष गुणप्रद है, अतः इसका प्रयोग करना अच्छा है।

६—मुक्तापञ्चामृतरस ।

मुक्ताप्रवालखुरवङ्गककम्बुशुक्तिभूतिं वसूदधिद्विगिन्दुसुधांशुभागाम् ।
इक्षो रसेन सुरभेः पयसा विदारीकन्यावरीसुरसहंसपदीरसैश्च ॥
संमर्द्य यामयुगलं च वनोपलाभिर्दद्यात् पुटानि मृदुलानि तु पञ्च वैद्यः ।
पञ्चामृतं रसविभुं भिषजा प्रयुक्तं गुञ्जाचतुष्टयमितं चपलारजश्च ॥
पात्रे निधाय चिरसूतपयस्विनीनां दुग्धेन च प्रपिबतः खलु चाल्पभोक्तुः ।
जीर्णज्वरःक्षयमियादथ राजयक्ष्मा कासादिलिङ्गसहितश्च क्षयं प्रयाति ॥

योगरत्नाकर ज्वराधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मोतीका चूर्ण ८ भाग, प्रवालका चूर्ण ४ भाग, वङ्गभस्म २ भाग, शङ्खका चूर्ण १ भाग और मोतीकी सीपका चूर्ण १ भाग ले, सबको मजबूत पत्थरके खरलमें ईख (गन्ने) का रस, गायका दूध, विदारीकन्द, ग्वारपाठा (घीकुआर), शतावर, तुलसी और हंसराज इन प्रत्येकके स्वरसमें ६-६ घण्टे मर्दन कर, गोला बना, सुखा, शराव-संपुटमें बन्द कर, दो सेर जंगली कंडोंकी आँच दे। इस प्रकार पाँच बार भावनाएँ और पुट दे, पीस, शीशीमें भरकर रख ले।

मात्रा और अनुपान—इसकी २ रत्ती, ४ रत्ती छोटी पीपलके चूर्णके साथ मिलाकर ३-४ मासकी व्यायी (प्रसूता) गायके धारोष्ण दूधके साथ देवे।

उपयोग—जीर्णज्वर और राजयक्ष्मामें इससे लाभ होता है। यदि इसके साथ $\frac{१}{४}$ रत्ती सुवर्णभस्म मिलाकर इसका उपयोग करे तो अधिक गुण होता है।

७—रसोनक्षीरयोग ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

एक कलीका अच्छा लहसुन लाकर उसका छिलका निकाल दे। दो सौ दाने अच्छे वायविडंगके लेकर उनको थोड़ा दरदरासा कूट ले। पीछे दोनोंको २० तोला गायका दूध और २० तोला जलमें डालकर मन्द आँचपर पकावे। जब सारा जल जल जाय और दूध बाकी रहे तब नीचे उतार, कपड़ेसे छान, उसमें चीनी और छोटी इलायचीके बीजका चूर्ण यथारुचि डालकर पीनेको दे। रोगी इस प्रयोगको जैसे-जैसे सहन करता जाय वैसे वैसे लहसुनकी कली और वायविडंगकी मात्रा बढ़ाता जावे। १५ कली लहसुन और ५०० दाने वायविडंगकी मात्रा तक बढ़ाना चाहिये।

उपयोग—राजयक्ष्मा, कण्ठमाला और अपचीके लिये यह उत्तम प्रयोग है। *

८—कुर्स कहरुबा।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गिले अरमनी, निशास्ता (गेहूंका सत्व) और गुलाबके फूल प्रत्येक १। तोला; कहरुबाकी पिष्टी और हब्बुलास प्रत्येक १॥। तोला; केंकड़ा मीठे पानीका अन्तर्धूम जलाया हुआ, कुलफेके बीज, सफेद चन्दन, लौकी (कद्दू) के बीजका मग्ज और ककड़ी (खीरा) के बीजका मग्ज प्रत्येक ३-३-तोला, गिले मखतुम १ तोला; प्रवालकी पिष्टी, कतीरा, बंशलोचन और सादनजका चूर्ण धोया हुआ—प्रत्येक १॥ तोला; बबूल (कींकर) का गोंद और मुलेठीका सत प्रत्येक २-२ तोला तथा कपूर १॥ माशा ले, सबका बारीक कपड़छान चूर्ण कर बिहीदानेके लुआबमें पीस ५-५ रत्तीकी टिकिया बना, सुखाकर रख ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ टिकिया पेठेके ताजे निकाले हुए १० तोला रसके अनुपानसे देवे।

उपयोग—यह योग उरःक्षतके रक्तको बन्द करनेके लिये उत्तम है। इसके प्रयोगसे कफके साथ मिलकर आता हुआ या अकेला खांसनेसे आता हुआ रक्त बन्द होता है।

९—गुडूच्यादिमोदक।

गुडूचीं खण्डशः कृत्वा कुट्टयित्वा सुमर्दयेत्।
वस्त्रेण गालितं तोयं रात्रिं संस्थापयेद् बुधः॥
उपरिस्थं जलं त्यक्त्वा सत्त्वं ग्राह्यमधःस्थितम्।
उशीरं वासकं पत्रं कुष्ठं धात्रीं च मौसलीम्॥
एलां नागबलां द्राक्षां कुङ्कुमं नागकेशरम्।
पद्मकन्दं च कर्पूरं चन्दनं मधुकं बलाम्॥
गोपीं तुगां कणां लाजामश्वगन्धां शतावरीम्।

* रसोनयोगं विधिवत् क्षयार्तः क्षीरेण वा नागबलाप्रयोगम्।
सेवेत वा मागधिकाविधानं तथोपयोगं जतुनोऽश्मजस्य॥
सुश्रुत उत्तरतन्त्र अ० ४१।

गोक्षुरं मर्कटीबीजं जातीकङ्कोलचोरकम् ॥
रसाभ्रवङ्गलोहैश्च संमिश्रं कारयेद् बुधः ।
सर्वेभ्यस्तु समं दद्यात् सत्त्वं छिन्नरुहोद्भवम् ॥
मत्स्याण्ड्याज्यमधूपेतं भक्षयेत् प्रातरुत्थितः ।
जयेत् क्षयं रक्तपित्तं पाददाहमसृग्दरम् ॥
मूत्रकृच्छ्रं प्रमेहांश्च ज्वरं जीर्णमथापि च ।

योगरत्नाकर राजयक्ष्माधिकारसे किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अंगूठे जितनी मोटी ताजी-हरी गिलोय ला, उसको जलसे धोकर उसके छोटे छोटे टुकड़े करे । पीछे उनको लकड़ीकी उखलीमें डाल, लकड़ीके मूसलसे खूब कूट, कलईदार बरतनमें चौगुने जलमें डाल, हाथोंसे खूब मसल, दूसरे कलईदार बरतनमें स्वच्छ कपड़ेसे छान ले और रात भर बरतनको ढाँककर रहने दे । सवेरे ऊपरका सब जल धीरे धीरे एक बरतनमें निथार ले और बरतनके ऊपर पतला महीन कपड़ा बांधकर उसको खुले स्थलमें रखकर सुखा ले । इसको **गिलोयका सत्त्व** कहते हैं । (निथारे हुए जलको मन्द आँचपर पका, उसका घन बना कर **संशमनीवटी** बना ले) । खस, अडूसेके मूलकी छाल, तेजपात, कूठ, आँवले, सफेद मूसली, छोटी इलायची, गुलशकरी, मुनक्का, केशर, नागकेशर, कमलका कन्द, कपूर, श्वेत चन्दन, मुलेठी, खरियारके मूल या बीज, अनन्तमूल, बंशलोचन, छोटी पीपल, धानका लावा (खील), असगंध, शतावर, छोटे गोखरू, कवांचके बीज, जायफल, कबाबचीनी (शीतल मिर्च), चोरा, रससिन्दूर, अभ्रकभस्म, वंगभस्म और लौहभस्म सब १-१ भाग तथा ऊपर लिखे हुए विधानसे बनाया हुआ गिलोयका सत्त्व सबके बराबर ले । प्रथम पत्थरके खरलमें रससिन्दूरको खूब महीन पीस उसमें भस्में और अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिला, एक दिन मर्दन करके शीशीमें भर ले ।

मात्रा और अनुपान—१॥ से ३ माशा तक चूर्ण मिश्री, गायका घी और शहदके साथ मिलाकर देवे ।

उपयोग—क्षय, रक्तपित्त, हाथ-पांवकी जलन, प्रदर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और जीर्णज्वरमें इसका प्रयोग करे ।

१०—ताप्यादियोग।

ताप्यलौहविडङ्गाश्मजतुपथ्याज्यमाक्षिकम्।
हन्ति यक्ष्माणमत्युग्रं सेव्यमानं हिताशिना॥

द्रव्य, निर्माणविधि, मात्रा, अनुपान और उपयोग—

सुवर्णमाक्षिकभस्म १ भाग, लौहभस्म १ भाग, बायबिडंग १ भाग, शिलाजीत १ भाग और बड़ी हर्रेके दलका कपड़छान चूर्ण १ भाग ले, सबको एकसाथ १ दिन पीसकर शीशीमें भर ले। इसमेंसे ५ रत्ती चूर्ण १॥ माशा शहद और पाव तोले गायके घीके साथ मिलाकर दे। इस योगसे क्षय और पांडुरोगमें अच्छा लाभ होता है।

अन्य योग—संशमनीवटी, वसन्तमालती, सितोपलादिचूर्ण, एलादिवटी, द्राक्षारिष्ट, वासाहरीतक्यवलेह, सुवर्णपर्पटी, अभ्रकभस्म, मुक्तापिष्टी, मृगशृङ्गभस्म इन योगों का भी राजयक्ष्मामें अवस्थानुसार उपयोग होता है।

———

रक्तपित्ताधिकार १५।

१—उशीरासव।

उशीरं बालकं पद्मं काश्मरीं नीलमुत्पलम्।
प्रियङ्गुं पद्मकं लोध्रं मञ्जिष्ठां धन्वयासकम्॥
पाठां किराततिक्तं च न्यग्रोधोदुम्बरं शटीम्।
पर्पटं कुङ्कुमं दार्वीं पटोलं काञ्चनारकम्॥
जम्बूं शाल्मलिनिर्यासं प्रत्येकं पलसंमितम्।
भागं सुचूर्णितं कृत्वा द्राक्षायाः पलविंशतिम्॥
धातकीं षोडशपलां जलद्रोणद्वये क्षिपेत्।
शर्करायास्तुलां दत्त्वा क्षौद्रस्यार्धतुलां तथा॥
मासैकं स्थापयेद्भाण्डे मांसीचन्दनधूपिते।
उशीरासव इत्येष रक्तपित्तविनाशनः॥
असृग्दरं प्रमेहं च रक्तार्शांसि च नाशयेत्।

शार्ङ्गधर संहिता म० खं० अ० १०।

द्रव्य और निर्माणविधि—

खस, नेत्रबाला, सफेद कमल, गम्भारीका मूल या वृक्षकी अन्तर्छाल, नील कमल, प्रियंगु, पद्माख, लोध, मजीठ, धमासा, पाढ़के मूल, चिरायता, बड़की अन्तर्छाल, गूलरके वृक्षकी अन्तर्छाल, कचूर, पित्तपापड़ा, केशर, दारुहल्दी, पटोल, कचनारकी छाल, जामुनकी छाल और मोचरस—प्रत्येक ४-४ तोला लेकर उसका कपड़छान चूर्ण करे। पीछे २०४८ तोला जलमें वह चूर्ण, जलसे धोकर थोड़ा कूटा हुआ मुनक्का ८० तोले, धायके फूलका चूर्ण ६४ तोले, शक्कर (चीनी) ४०० तोले और शहद २०० तोले मिला, सागौनकी लकड़ीके पीपेमें या पेचदार ढक्कनी चीनी मिट्टीकी बरनीमें भर, उसका मुंह बन्द करके १ मास रख छोड़े। १ मासके बाद उसको कपड़ेसे छान, उसी पात्रको जलसे धो, उसमें भर उसका मुंह ठीकसे बन्द करके रख दे।

मात्रा और अनुपान—२ तोला, उतना ही जल मिलाकर दे।

उपयोग—रक्तपित्त, रक्तप्रदर, प्रमेह और रक्तार्शमें इसका प्रयोग करे। सब प्रकारके पित्त और रक्तविकृतिप्रधान रोगोंमें इससे अच्छा लाभ होता है।

२—चन्द्रकलारस।

प्रत्येकं कर्षमानं स्यात् सूतं ताम्रं तथाऽभ्रकम्।
द्विगुणं गन्धकं मुक्तां दत्त्वा कुर्यात्तु कज्जलीम्॥
तिक्तां गुडूचिकासत्त्वं पर्पटोशीरमागधीः।
चन्दनं सारिवां चैव दद्यात् कर्षं सुचूर्णितम्॥
मुस्तादाडिमदूर्वोत्थैः केतकीकमलद्रवैः।
सहदेव्याः शतावर्याः पर्पटस्य च वारिणा॥
भावयित्वा प्रयत्नेन दिनमेकं पृथक् पृथक्।
द्राक्षाफलकषायेण सप्तधा परिभावयेत्॥
रोचनाचूर्णयोगेन वट्यः कार्याश्चणोपमाः।
अयं चन्द्रकला नाम रसेन्द्रः परिकीर्त्तितः॥
अन्तर्बाह्यमहादाहविध्वंसनमहाघनः।
भ्रमं मूर्च्छां रक्तकासं रक्तवान्तिं विशेषतः॥

ऊर्ध्वाधोरक्तपित्तं च जीर्णज्वरमसृग्दरम् ।
मूत्रकृच्छ्राणि सर्वाणि नाशयेन्नात्र संशयः ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ तोला, ताम्रभस्म १ तोला, अभ्रकभस्म १ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, मोतीकी पिष्टी २ तोला ; कुटकी, गिलोयका सत्व, पित्तपापड़ा, खस, छोटी पीपल, श्वेतचन्दन और अनन्तमूल प्रत्येकका कपड़छान चूर्ण १-१ तोला लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली करे। पीछे उसमें भस्में तथा अन्य द्रव्योंका चूर्ण मिला, नागरमोथा, मीठा दाड़िम (अनार), दूब, केवड़ा, कमल, सहदेई, शतावर और पित्तपापड़ा इनके यथालाभ स्वरस, अर्क या क्वाथकी १-१ भावना, और मुनक्काके क्वाथकी ७ भावनाएँ देवे। प्रत्येक भावनामें १-१ दिन मर्दन करे और छायामें सुखा करके दूसरी भावना देवे। पीछे वंशलोचनका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण अंगुलियोंपर लगाकर चने बराबर गोलियाँ बना, छायामें सुखाकर रख ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली, ठंडा जल, उशीरासव, अशोकारिष्ट या पेठेके स्वरससे दिनमें २-३ बार दे।

उपयोग—शरीरका दाह, चक्कर आना, मूर्च्छा, खाँसीमें रक्त आना, रक्तका वमन, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, रक्तार्श, जीर्णज्वर और मूत्रकृच्छ्रमें इससे अच्छा लाभ होता है।

३—दूर्वादिघृत।

दूर्वा दाडिमपुष्पं च मञ्जिष्ठोत्पलकेशरम् ।
औदुम्बरमुशीरं च मुस्तं चन्दनपद्मकम् ॥
वृषपुष्पं कुङ्कुमं च गैरिकं नागकेशरम् ।
विपचेत् कार्षिकैरेतैः सर्पिराजं चतुर्गुणैः ॥
अजाक्षीरेण कूष्माण्डस्वरसैस्तण्डुलाम्बुभिः ।
तथैवास्त्रहरानीरैः समभागनियोजितैः ॥
तत्पानं वमतो रक्तं नावनं नासिकागते ।
कर्णाभ्यां यस्य गच्छेत्तु तस्य कर्णौ प्रपूरयेत् ॥
चक्षुःस्राविणि रक्ते तु पूरयेत्तेन चक्षुषी ।
मेढ्रपायुप्रवृत्ते तु वस्तिकर्मणि तद्धितम् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

दूब, अनारके फूल, मजीठ, कमलका केशर, गूलरका फल, खस, नागरमोथा, सफेद चन्दन, पद्माख, अडूसेके फूल, केशर, गेरु और नागकेशर प्रत्येक १-१ तोला ले, उनका कपड़छान चूर्ण बना, जलमें पीसकर चटनी जैसा बनावे । पीछे उसमें बकरीका घी ६४ तोला, बकरीका दूध, पेठेका स्वरस, आयापानका स्वरस और चावल भिगोया हुआ जल प्रत्येक ६४-६४ तोला मिलाकर मंद आँचपर पकावे । जब घृत सिद्ध हो जाय तब नीचे उतार, कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले ।

मात्रा और अनुपान—आधा तोलासे एक तोलातक उतना ही मिश्रीका चूर्ण मिलाकर देवे ।

उपयोग—यह घृत मुखसे रक्त आता हो तो पीनेको देना, नाकसे रक्त आता हो तो इसका नस्य देना, कान या आँखसे रक्त आता हो तो कान या आँखमें डालना और शिश्न, योनि अथवा गुदासे रक्त आता हो तो उत्तरबस्ति या अनुवासन बस्तिसे देना ।

अन्य योग—नागकेशरयोग, अशोकारिष्ट, मुक्तापिष्टी, प्रवालपिष्टी, कहरुबापिष्टी, पेठेका स्वरस और ताजे कमलका स्वरस इनका भी रक्तपित्तमें अच्छा उपयोग होता है ।

हृद्रोगाधिकार १६ ।

१—चिन्तामणिरस ।

पारदं गन्धकं चाभ्रं लौहं वङ्गं शिलाजतु ।
अग्निजारं समं सर्वं स्वर्णं सूताङ्घ्रिसंमितम् ॥
सूतार्धं मौक्तिकं रौप्यं सर्वमेकत्र मर्दयेत् ।
चित्रकस्य द्रवेणापि भृङ्गराजाम्भसा ततः ॥
पार्थस्य च कषायेण सप्तकृत्वा विभावयेत् ।
ततो गुञ्जामिताः कुर्याद्वटीश्छायाप्रशोषिताः ॥

बलामूलकषायेण वटीमेकां प्रदापयेत् ।
हृद्रोगान्निखिलान् हन्ति चिन्तामणिरसो ह्ययम् ॥

भैषज्यरत्नावलीसे किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, वंगभस्म, शिलाजीत और अम्बर प्रत्येक १-१ भाग; स्वर्णभस्म ¼ भाग; मोतीकी पिष्टी और रौप्यभस्म प्रत्येक ½ भाग लेवे। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली कर उसमें अम्बर, शिलाजीत तथा अन्य भस्में मिला, चित्रकके मूलके क्वाथमें तथा भंगरेके स्वरसमें १-१ दिन मर्दन करे, पीछे अर्जुन वृक्षकी छालके क्राथमें सात दिन मर्दन करके १-१ गुञ्जाकी गोलियां बना, छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सबेर-शाम शहदमें चटाकर ऊपरसे बरियार (बला) के मूलका क्वाथ पिलावे।

उपयोग—सर्व प्रकारके हृदयके रोगोंमें, हृदयके शूलमें और हृद्द्रव (हृदयके स्पन्दनाधिक्य) में इसके प्रयोगसे अच्छा लाभ होता है। हृद्रोगके साथ यकृत्का शोथ और उदर रोग हो तो इसके साथ आरोग्यवर्धनी मिलाकर इसका प्रयोग करे।

२—अर्जुनक्षीर ।

अर्जुनस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं योज्यं हृदामये ।

भैषज्यरत्नावली ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अर्जुनके वृक्षकी छाल एक तोला ले उसको जलसे धोकर कूट ले। पीछे उसमें १६ तोला गायका दूध तथा १६ तोला जल मिलाकर मन्द आंचपर पकावे। जब जल सब जलकर दूध बाकी रहे तब छान, उसमें गुड़ या मिश्री आधा तोला तथा ५ छोटी इलायचीके बीजका चूर्ण मिलाकर पिलावे।

३—बलादिघृत

घृतं बलानागबलार्जुनाम्बुसिद्धं मधूकार्जुनकल्कपादम् ।
हृद्रोगशूलक्षतरक्तपित्तकासानिलासृक् शमयत्युदीर्णम् ॥

भैषज्यरत्नावली ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

बला (बरियार—खरेंटी) के मूल, गंगेरन (गुलशकरी) के मूल और अर्जुन की छाल प्रत्येक ६४ तोला, जवकुट-दरदरा करके १०२४ तोला जलमें पकावे, जब चौथाई (२५६ तोला) जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, उसमें गायका घी ६४ तोला तथा मुलेठी ८ तोला और अर्जुनकी छाल ८ तोला दोनोंको जलमें चटनी जैसा महीन पीसकर डाले और मन्द आँचपर कलईदार बरतनमें पकावे तथा लकड़ीके खोंचेसे हिलाता रहे। जब घृत सिद्ध हो जाय तब नीचे उतार, कपड़ेसे छानकर ठंडा होनेपर शीशीमें भर ले।

मात्रा—१ तोला।

अनुपान—दूध।

उपयोग—हृद्रोग, शूल, उरःक्षत, रक्तपित्त, खांसी और वातरक्तमें इसका प्रयोग करे।

४—जवाहर मोहरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

माणिक्यपिष्टी २ तोला, पन्नाकी पिष्टी २ तोला, मुक्तापिष्टी २ तोला, प्रवाल-पिष्टी ४ तोला, संगे यशबकी पिष्टी ४ तोला, कहरुबाकी पिष्टी २ तोला, चांदीके वरक १ तोला, सोनेके वरक १ तोला, दरियाई नारियलका चूर्ण ४ तोला, अब रेशम कतरा हुआ २ तोला, मृगश्रृङ्ग भस्म ४ तोला, जदवार (निर्विषी) का चूर्ण २ तोला, कस्तूरी १ तोला और अम्बर २ तोला लेवे। अच्छे न घिसनेवाले पत्थरके खरलमें प्रथम सब पिष्टियां और चूर्ण डाल, उसमें सोने और चांदीके वरक एक-एक करके मिलावे और मर्दन करता रहे। जब सब वरक मिल जायँ तब उसमें उत्तम अर्क गुलाब थोड़ा थोड़ा डालकर १४ दिन मर्दन करे। १५ वें दिन उसमें कस्तूरी और अम्बर मिला, एक दिन गुलाबके अर्कमें मर्दन कर, १-१ रत्तीकी गोलियां बना, छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली दिनमें २-३ बार शहद या खमीरे गावज़बानमें मिलाकर दे और ऊपरसे दूध या केवड़ेका, बेदमुश्कका अथवा गावज़बानके फूलोंका अर्क देवे।

उपयोग—यह हृदयको बल देनेवाला उत्तम योग है। दिलकी घबराहट,

हृदयका धड़कना, हृदयकी दुर्बलतासे थोड़ासा चलनेपर दम भरजाना और दिल धड़कना—इन लक्षणोंमें इससे अच्छा लाभ होता है।

५—खमीरे गावज़बान।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलाबके फूल, श्वेत चन्दन, बालछड़ (जटामांसी) धनिया, उस्तखुद्दुस, अबरेशम, नीलोफर और छड़ीला प्रत्येक १-१ तोला, बादरंजबोया १॥ तोला, गावज़बानके फूल ३ तोला और गावजबानकी पत्ती ५ तोला ले, सबको ४० तोला गुलाबके अर्क और ४० तोला बेदमुश्कके अर्कमें रातको भिगो दे। सवेरमें मन्दी आँचपर पकावे। जब एक तृतीयांश द्रव बाकी रहे तब नीचे उतार, ठण्डा होनेपर हाथसे मसलकर कपड़ेसे छान ले। पीछे उसमें ४० तोला चीनी डालकर मन्दी आँचपर अवलेह जैसा पकावे। जब अवलेह ठण्डा हो जाय तब उसमें-कपूर १॥ माशा, अंबर १॥ माशा और केशर ३ माशा गुलाबके अर्कमें पीसकर, करछीसे खूब हिलाकर मिला दे।

मात्रा—३-६ माशा।

उपयोग—यह योग हृदय और मस्तिष्क (दिमाग) को बल देनेवाला है। अकेला या जवाहरमोहरेके अनुपानरूपमें इसका प्रयोग करे।

६—याकूती।

द्रव्य और निर्माणविधि—

माणिक्यपिष्टी, पन्नापिष्टी, मुक्तापिष्टी, प्रवालपिष्टी, कहरुबापिष्टी, चन्द्रोदय, सोनेके वरक, अम्बर, कस्तूरी, अबरेशम-कतरा हुआ और केशर प्रत्येक २-२ तोला; बेहमन सफेद, बेहमन लाल, जायफल, लौंग और सफेद मिर्च प्रत्येकका चूर्ण १-१ तोला। प्रथम चन्द्रोदयको खूब महीन पीसे, पीछे उसमें अन्य द्रव्य तथा सोनेके वरक मिला, उत्तम गुलाबके अर्कमें २१ दिन मर्दन कर, १-१ रत्तीकी गोलियां बना, छायामें सुखा कर शीशीमें भर ले।

स्व० वा० वैद्य तिलकचन्द ताराचन्दसे प्राप्त।

मात्रा और अनुपान—१ गोली पोदीनेके स्वरसमें मिलाकर देवे।

उपयोग—हृदयकी दुर्बलता, सन्निपातज्वर आदिमें नाड़ीकी क्षीणता और शरीर ठंढा पड़ना, स्वेदाधिक्य, हृदयकी दुर्बलतासे थोड़ासा चलनेसे दम भर

जाना और हृदयका स्पन्दन बढ़ना आदि लक्षणोंमें इसका प्रयोग करनेसे अच्छा लाभ होता है।

७ हृद्यचूर्ण।

द्रव्य और निर्माणविधि—

डिजिटेलिसपत्रचूर्ण १ भाग और सांभरके शृङ्गकी भस्म २ भाग ३ घण्टा मर्दन करके रख ले।

मात्रा—१ रत्ती।

अनुपान— शहद।

उपयोग—हृदयकी दुर्बलता, हृद्द्रव (हृदयकी धड़कन), नाड़ीका वेगाधिक्य—इन लक्षणोंमें इसका प्रयोग करे। हृद्रोगमें उपद्रवरूप जब सर्वाङ्ग-शोथ होता है तब आरोग्यवर्धनीके साथ मिलाकर इसका प्रयोग करनेसे विशेष लाभ होता है। पुरानी खांसीमें जब कफ ज्यादा और चिकना पड़ता हो और साथमें हृदयकी दुर्बलता हो तो इसमें जंगली प्याजको सुखाकर उसका कपड़छान किया हुआ चूर्ण १ भाग मिलाकर इसका प्रयोग करे। यदि रोगीको हृल्लास और वमन हो तो इसका प्रयोग कुछ दिनके लिये बन्द कर दे।

वक्तव्य—डिजिटेलिस भारतवर्षके काश्मीर आदि प्रदेशोंमें होता है। बम्बईकी झंडु फार्मास्युटिकल कम्पनी डिजिटेलिसके पत्रका चूर्ण बेचती है।

प्रमेहाधिकार १७।

१—गोक्षुरादिगुग्गुलु।

त्रिकटु त्रिफला मुस्तं चूर्णितं पलसप्तकम्।
चूर्णं गोक्षुरसंभूतं तावन्मानं प्रदापयेत्॥
चतुर्दशपलान्यत्र योजयेच्छुद्धगुग्गुलोः।
संकुट्य गुग्गुलुं पूर्वं चूर्णं पश्चाद्विमिश्रयेत्॥
शाणमाना तु वटिका गोक्षुरक्वाथयोजिता।
प्रमेहान् मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातांश्च नाशयेत्॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोंठ, छोटी पीपल, काली मिर्च, हर्रेका दल, बहेड़ादल, आँवला और नागरमोथा प्रत्येक ४-४ तोला; छोटे गोखरू २८ तोला तथा अच्छा गूगल ५६ तोला लेवे। प्रथम गूगलको लकड़ीके टुकड़े, मिट्टी आदिसे रहित करके केवल गूगलके टुकड़े (कण) ५६ तोला वजन कर ले। पीछे उसको लोहेकी खाँडनीमें डाल लोहेके दस्तेसे खूब कूट, नरम कर उसमें अन्य द्रव्योंका चूर्ण थोड़ा थोड़ा करके मिलाकर गोली बनाने योग्य बना ले। जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब १॥-१॥ माशेकी गोली बना ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सवेर-शाम भोजनसे ३ घंटा पहले गोखरूके क्वाथ या प्रमेहहर क्वाथके अनुपानसे देवे।

उपयोग—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातमें इसका प्रयोग करे।

२—चन्द्रकलावटी।

एला सकर्पूरशिलाजधात्री जातीफलं केशरशाल्मली च।
सूतेन्द्रवङ्गाभ्रकभस्म सर्वमेतत् समानं परिभावयेत्तु॥
गुडूचिकाशाल्मलिकाकषायैर्निष्कार्धमानं मधुना ततश्च।
बद्ध्वा वटीं चन्द्रकलेतिसंज्ञां सर्वप्रमेहेषु नियोजयेत्ताम्॥

योगरत्नाकर प्रमेहाधिकारसे किंचित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

छोटी इलायचीके बीज, कपूर, शिलाजीत, आँवला, जायफल, केशर, शेमलके मूल, रससिन्दूर, वंगभस्म और अभ्रकभस्म सम भाग लेवे। प्रथम रससिन्दूरको पत्थरके खरलमें खूब महीन पीसे। पीछे उसमें शिलाजीत, भस्में तथा अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिला, हरी गिलोय तथा शेमलके मूलके स्वरसमें ३-३ दिन मर्दन कर, ३-३ रत्तीकी गोलियां बना, छायामें सुखाकर रख ले।

मात्रा और अनुपान—२ गोली शहदमें मिलाकर दे और ऊपरसे गायका दूध या प्रमेहहर क्वाथ पिलावे।

उपयोग—सर्व प्रकारके प्रमेहोंमें विशेष करके शुक्रमेह और स्वप्नदोषमें इसका उपयोग करे।

३—चन्द्रप्रभावटी ।

चन्द्रप्रभा वचा मुस्तं भूनिम्बामृतदारुकम् ।
हरिद्राऽतिविषा दार्वी पिप्पलीमूलचित्रकौ ॥
धान्यकं त्रिफला चव्यं विडङ्गं गजपिप्पली ।
व्योषं माक्षिकधातुश्च द्वौ क्षारौ लवणत्रयम् ॥
एलाबीजं च कङ्कोलं गोक्षुरः श्वेतचन्दनम् ।
एतानि शाणमानानि प्रत्येकं कारयेद् बुधः ॥
त्रिवृद्दन्ती पत्रकं च त्वगेला वंशलोचनाः ।
प्रत्येकं कर्षमात्राणि कुर्यादेतानि बुद्धिमान् ॥
द्विकर्षं हतलोहं स्याच्चतुष्कर्षा सिता भवेत् ।
शिलाजत्वष्टकर्षं स्यादष्टौ कर्षाश्च गुग्गुलोः ॥
एभिरेकत्र संक्षुण्णैः कर्तव्या गुटिका शुभा ।
चन्द्रप्रभेति विख्याता सर्वरोगप्रणाशिनी ॥
प्रमेहान् मूत्रकृच्छ्रांश्च मूत्राघातांस्तथाऽश्मरीम् ।
जयेदर्शांसि शूलानि कामलां पाण्डुमेव च ॥
पुंसां शुक्रगतान् दोषान् स्त्रीणामार्तवजां रुजम् ।

शार्ङ्गधर म० खं० अ० ७ से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपूरकचरी, बच, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, देवदार, हल्दी, अतीस, दारुहल्दी, पीपलामूल, चित्रकके मूलकी छाल, धनिया, बड़ी हरेंका दल, बहेड़ादल, आँवला, चवक, बायबिडंग, बड़ी पीपल, छोटी पीपल, सोंठ, काली मिर्च, माक्षिकभस्म, सज्जीखार, जौखार, सेन्धानमक, सोंचरनमक, सामुद्र लवण, छोटी इलायचीके बीज, कबाबचीनी (शीतल मिर्च), गोखरू और श्वेत चन्दन प्रत्येक पाव-पाव तोला, निशोथ, दन्तीमूल, तेजपात, दालचीनी, छोटी इलायची और वंशलोचन प्रत्येक १-१ तोला, लोह भस्म २ तोले, मिश्री ४ तोले, शिलाजीत ८ तोले और गूगल ८ तोले लेवे। प्रथम गूगलको साफ करके लोहेके इमामदस्तेमें कूटे। जब गूगल नरम हो जाय तब उसमें शिलाजीत, भस्में तथा अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण क्रमशः मिलाकर खूब कूटे। गोली बनाने योग्य हो जाय तब ५-५ रत्तीकी गोलियां बनाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली जल, दूध या तत्तद्रोगहर क्वाथके अनुपानसे देवे।

... अर्श (बवासीर),

श ... इस योगसे अच्छा

ला ...

... जीतके स्थानपर

८ ... में माक्षिक-भस्म

तथ ...

द्रव्य ...

... डमारकी पत्तीका

चूर्ण ... जीतमें त्रिवंग

भस ... यदि इस योगको

विशे ... वा सुवर्णलवण

चौथ ...

... १२ गोलियाँ

ठंढे ...

... अच्छा लाभ

होता ...

द्रव्य ...

द ... , नागरमोथा, खस, ... श्वेतचन्दन, कमलके फूल, पद्माख, गोखरू और पटोल सब सम भाग ले, जौकूट (दरदरा) करके रख ले। इसमेंसे १ तोला द्रव्यको १० तोला जलमें पका, जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, उसमें आधा तोला शहद मिलाकर पीनेको दे। ऐसा दिनमें २ बार सबेरे-शाम देवे।

उपयोग—सब प्रकारके प्रमेहोंमें अकेला या अन्य प्रमेहहर योगोंके अनुपान रूपमें इसका प्रयोग करे।

३—चन्द्रप्रभावटी।

चन्द्रप्रभा वचा मुस्तं भूनिम्बामृतदारुकम्।
हरिद्राऽतिविषा दार्वी पिप्पलीमूलचित्रकौ॥
धान्यकं त्रिफला चव्यं विडङ्गं गजपिप्पली।
... त्रयम्॥
... न्दनम्।
... बुधः॥
... चनाः।
... मान्॥
... भवेत्।
... गुलोः॥
... शुभा।
... शिनी॥
... मरीम्।
... य च॥
... हजम्।
... से किंचित्परिवर्तित।

... हल्दी, अतीस, दारु-
... ल, बहेड़ादल, आँवला,
... माक्षिकभस्म, सज्जो-
... ायचीके बीज, कवाब
... -पाव तोला, निशोथ,
... न प्रत्येक १-१ तोला,
... तोले, ... गूगल ८ तोले लेवे।
प्रथम गूगलको साफ करके लोहेके इमामदस्तेमें कूटे। जब गूगल नरम हो जाय तब उसमें शिलाजीत, भस्में तथा अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण क्रमशः मिलाकर खूब कूटे। गोली बनाने योग्य हो जाय तब ५-५ रत्तीकी गोलियां बनाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली जल, दूध या तत्तद्रोगहर क्वाथके अनुपानसे देवे।

उपयोग—सर्व प्रकारके प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, अर्श (बवासीर), शूल, कामला, पाण्डुरोग, शुक्रदोष और स्त्रियोंके श्वेत प्रदरमें इस योगसे अच्छा लाभ होता है।

वक्तव्य—गुजरात-काठियावाड़के कई वैद्य चन्द्रप्रभामें शिलाजीतके स्थानपर ८ तोले कलमी सोरा मिलाकर चन्द्रप्रभा तैयार करते हैं और उसमें माक्षिक-भस्म तथा लोहभस्म नहीं डालते।

४—शिलाजत्वादिवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

त्रिवंगभस्म ३ तोले, छायामें सुखाई हुई नीमकी पत्ती तथा गुड़मारकी पत्तीका चूर्ण १०-१० तोले और शिलाजीत १५ तोले लेवे। प्रथम शिलाजीतमें त्रिवंग भस्म और पीछे अन्य चूर्ण मिलाकर ४-४ रत्तीकी गोलियाँ बनावे। यदि इस योगको विशेष गुणशाली बनाना हो तो इसमें आधा तोला सुवर्णभस्म अथवा सुवर्णलवण चौथाई तोला मिला करके गोलियाँ बनावे।

मात्रा और अनुपान—४-४ घण्टेसे ३-३ गोली करके दिनमें १२ गोलियाँ ठंढे जलके अनुपानसे देवे।

उपयोग—बहुमूत्र, इक्षुमेह और मधुमेहमें इस योगसे अच्छा लाभ होता है।

५—प्रमेहहरकषाय।

द्रव्य और निर्माणविधि—

दारुहल्दी, हल्दी, गिलोय, हर्रेका दल, बहेड़ादल, आंवला, देवदार, नागरमोथा, खस, लोध, श्वेतचन्दन, कमलके फूल, पद्माख, गोखरू और पटोल सब सम भाग ले, जौकुट (दरदरा) करके रख ले। इसमेंसे १ तोला द्रव्यको १० तोला जलमें पका, जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, उसमें आधा तोला शहद मिलाकर पीनेको दे। ऐसा दिनमें २ बार सबेरे-साम देवे।

उपयोग—सब प्रकारके प्रमेहोंमें अकेला या अन्य प्रमेहहर योगोंके अनुपान रूपमें इसका प्रयोग करे।

६—चन्दनादिवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेतचन्दनका बुरादा, छोटी इलायचीके बीज, कबाबचीनी, सफेद राल, गन्धाबिरोजेका सत्त्व, कत्था और आँवला प्रत्येक ४-४ तोला तथा कपूर १ तोला ले कपड़छान चूर्ण कर, उसमें ५ तोला उत्तम चन्दनका तेल (इत्र) तथा गोली बन सके इतनी रसोत (दारुहल्दीका घन) मिलाकर ५-५ रत्तीकी गोलियां बना ले।

मात्रा और अनुपान—२-४ गोलियाँ दिनमें ३-४ बार ठंडे जलके साथ लेनेसे पेशाबकी जलन और पेशाबमें पूय आना बन्द होता है।

अश्मरी-मूत्रकृच्छ्राधिकार १८।

१—हजरुल यहुदकी भस्म।

स्वरूप-परिचय—

हजरुल यहुद एक लंबगोल और ऊपरसे रेखावाला पत्थर है। यूनानी दवा बेचनेवालोंके यहाँसे इसी नामसे मिलता है। यूनानी वैद्यकमें यह मूत्रल और पथरीको तोड़कर निकालनेवाला माना गया है।

भस्म-निर्माणविधि—

हजरुल यहुदके पत्थरको जलसे धो कपड़ेसे पोंछकर साफ कर ले। पीछे लोहेके इमामदस्तेमें कूट, सूक्ष्म कपड़छान चूर्णकर, पत्थरके खरलमें ३ दिन मूलीके स्वरसमें मर्दनकर टिकिया बनाकर सुखा ले। पीछे दो मिट्टीके तवोंके बीचमें टिकिया रखकर अर्ध गजपुटका अग्नि दे। स्वांगशीतल होनेपर टिकिया निकाल पीसकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—४-८ गुञ्जा दिनमें ३ बार कच्चे नारियलके पानी या अश्मरीहर कषायके अनुपानसे देवे।

उपयोग—यदि अश्मरी छोटी हो तो कुछ दिन इसका सेवन करनेसे पेशाबके रास्ते निकल जाती है।

२—क्षारपर्पटी ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छा कलमीसोरा ४० तोला, फिटकरी ५ तोला और नोसादर २॥ तोला ले, सबको मोटा चूर्ण करके मिट्टीकी हांड़ीमें अग्निपर पकावे । जब सब द्रव हो जाय तब जमीनपर गोबर बिछा, ऊपर केलेका बड़ा अखण्ड पत्ता रखकर उसपर ढाल दे और तुरन्त ऊपरसे दूसरा केलेका पत्र दबा दे । ठंडा होनेपर निकाल कपड़छान चूर्ण करके शीशीमें भर ले । इसके शीतलपर्पटी, श्वेतपर्पटी, वज्रक्षार ये नाम भी प्रचलित हैं ।

मात्रा—५-१० रत्ती ।

अनुपान—ठंडा जल, कपूर भिगोया हुआ जल या कच्चे नारियलका पानी ।

गुण और उपयोग—यह अच्छा मूत्रल, स्वेदल और वातानुलोमन योग है । अम्लपित्त, मूत्रकृच्छ्, मूत्राघात, पेटका अफारा और अश्मरीमें इसका प्रयोग करे । इसका अकेले या अन्य क्वाथोंमें मिलाकर प्रयोग किया जाता है ।

३—अश्मरीहरकषाय ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

पाषाणभेद, सागौनके फल, पपीते (अरण्ड खरबूजे) की जड़, शतावर, गोखरू, बरुनाकी छाल, कुश (डाभ) के मूल, काँसके मूल, चावल-धानके मूल, पुनर्नवा, गिलोय, चिचड़ाके मूल और ककड़ी (खीरा) के बीज—प्रत्येक सम भाग, जटामांसी तथा खुरासानी अजवायनके बीज या पत्ती प्रत्येक दो भाग ले सबको जौकुट (दरदरा) करके रख ले । इसमेंसे १ तोला ले उसको १६ तोले जलमें पका, ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, और उसमें ५-१० रत्ती शिलाजीत अथवा १० रत्ती क्षारपर्पटी या जवाखार मिलाकर पीनेको दे । इस प्रकार रोगीको दिनमें ३-४ बार पिलावे । इस क्वाथको हजरुल यहुदकी भस्मके साथ देनेसे विशेष लाभ होता है ।

उपयोग—अश्मरी (पथरी), शर्करा (रेती) तथा उससे होनेवाले गुर्दे और पेटके दर्दमें इसका प्रयोग करे ।

वक्तव्य—यवमण्ड (२ तोला जौको ६४ तोले जलमें उबाल चौथाई बाकी रखकर कपड़ेसे छाना हुआ जल), कच्चे नारियलका पानी, गन्नेका रस तथा लौकी, पेठा,

ककड़ी, मकोयकी पत्ती, पुनर्नवाकी पत्ती, कासनीकी पत्ती आदि मूत्रल द्रव्योंका शाक अश्मरीमें हितकर है। द्विदल धान्य, मांस, कंदका शाक और स्नेहपक्व अन्न अपथ्य है। गरम जलमें कमरका भाग डूबा रहे, इस प्रकार बैठना (अवगाहस्वेद) मूत्रकृच्छ्र और अश्मरीशूलमें हितकर है।

भ्रम-अनिद्रा-उन्मादाधिकार १६

१—चन्द्रावलेह।

शतावर्या विदार्याश्च कूष्माण्डस्याढकं रसम्।
स्वरसं शङ्खपुष्प्याश्च शर्करायास्तुलां तथा॥
लेहवत् साधिते तस्मिन्नेलायाः प्रस्थमेव च।
त्रिजातकं च मृद्वीकाचन्दनोत्पलसारिवाः॥
मुस्तापद्मकह्रीवेरधात्रीमांसीलवङ्गकम्।
एतेषां पलमादाय क्षिपेत् क्षीर्याश्चतुष्पलम्॥
कुडवं सर्पगन्धायाः क्षौद्रप्रस्थं तथैव च।
अनिद्रायामथोन्मादे शिरोभ्रमणमूर्च्छने॥
हस्तपादाङ्गदाहेषु शस्तश्चन्द्रावलेहकः।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शतावर, विदारीकन्द, पेठा और शंखाहुली इनमेंसे प्रत्येकका कपड़ेसे छाना हुआ स्वरस २५६ तोला ले, उसमें शक्कर (चीनी) ४०० तोला मिलाकर मंदी आंचपर अवलेह जैसा पकावे। जब चाशनी अवलेह बनने जैसी तैयार हो जाय तब नीचे उतार ठंढा कर, उसमें छोटी इलायची ६४ तोला; दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, मुनक्का, श्वेतचन्दन, कमल, अनन्तमूल, नागरमोथा, पद्माख, खस, आँवला, जटामांसी और लौंग प्रत्येक ४-४ तोला और सर्पगन्धा १६ तोला इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर काँच या चीनी मिट्टीके बरतनमें भर ले।

मात्रा—आधा तोलासे १ तोलातक।

अनुपान—चन्दनादि अर्क, केवड़ेका अर्क, गावजबानके फूलोंका अर्क, बेदमुश्कका अर्क या गायका दूध।

उपयोग—अनिद्रा, उन्माद; शिरमें चक्कर आना, मूर्छा तथा हाथ-पांवका दाह इन विकारोमें इस योगसे अच्छा लाभ होता है ।

२—सारस्वतारिष्ट ।

ब्राह्मीमण्डूकपर्ण्योश्च शङ्खपुष्प्यास्तथैव च ।
प्रत्येकं प्रस्थमादाय कूष्माण्डं च शतावरी ॥
विदारिकाभयोशीराण्यार्द्रकं च तथा मिशिः ।
पञ्च पञ्च पलान्येषां द्विद्रोणेऽपां विपाचयेत् ॥
पादावशेषे विस्राव्य रसं वस्त्रेण दापयेत् ।
पलानि दश क्षौद्रस्य सितामर्धतुलां तथा ॥
धातकी पञ्चपलिका तगरं त्रिवृता कणा ।
देवपुष्पं वचा कुष्ठं वाजिगन्धा बिभीतकः ॥
अमृतैला विडङ्गं त्वक् कुङ्कुमं कर्षसंमितम् ।
क्वाथे सुचूर्णितं तस्मिन् समाक्षिप्य प्रयत्नतः ॥
मासाज्ज्ञातरसं ज्ञात्वा परिस्राव्य च वाससा ।
सुवर्णलवणं तस्मिन् दद्यादर्धपलं भिषक् ॥
सारस्वताभिधोऽरिष्टो रसायनवरः स्मृतः ।
आयुर्वीर्यं धृतिं मेधां बलं कान्तिं विवर्धयेत् ॥
वाग्विशुद्धिकरो हृद्यः परमोजस्करः स्मृतः ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जलनीम, ब्राह्मी और शंखाहुली प्रत्येक ६४-६४ तोला; पेठा, शतावर, विदारीकन्द, बड़ी हर्रेका दल, सुगन्धवाला, अदरख और सौंफ प्रत्येक २०-२० तोला; सबको कूटकर २०४८ तोले जलमें पकावे । जब चौथाई (५१२ तोला) जल बाकी रहे, तब कपड़ेसे छानकर उसमें शहद ४० तोला और देशी चीनी २०० तोला तथा धायके फूल २० तोला, तगर, निशोथ, छोटी पीपल, लौंग, वच, कूट, असगन्ध, बहेड़ादल, गिलोय, छोटी इलायची, वायविडंग, दालचीनी और केशर प्रत्येक एक-एक तोला, इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर चीनी मिट्टीकी पेचदार ढक्कन-

वाली बरणी (बरतन) में भरकर १ मास रहने दे। एक मासके बाद कपड़ेसे छान उसमें सुवर्णलवण * २ तोला मिलाकर बरणीमें भरकर रखे।

मात्रा और अनुपान—एक तोला अरिष्टमें दो तोला जल मिलाकर सवेर-शाम पिलावे।

गुण और उपयोग—यह सारस्वतारिष्ट आयुष्य, वीर्य, धैर्य स्मरणशक्ति, बल, कान्ति और ओजको बढ़ानेवाला, हृदयको हितकर और उच्चारणको शुद्ध करनेवाला है। दिल और दिमागकी कमजोरी तथा उन्मादमें इसका प्रयोग करना चाहिये।

वक्तव्य—यदि इस योगमें जलनीम, ब्राह्मी, शंखाहुली, पेठा, शतावर, विदारीकन्द और अदरख प्रत्येकका स्वरस ६४-६४ तोला तथा हर्रे, सुगन्धवाला और सौंफ का २४० तोले जलमें चतुर्थांश शेष क्वाथ बनाकर डाले तो आसव विशेष गुणकारक होता है।

३—सर्पगन्धायोग।

नाम—सर्पगन्धाको बंगालीमें चान्दर-चाँदड़, विहारमें चंदमरवा, धनमरवा या ईशरगज, काशीमें धवलबरुवा, मराठीमें अडकई और अंग्रेजीमें राव्रोल्फिया सर्पेन्टाइना कहते हैं।

उत्पत्तिस्थान—नेपालकी तराई, विहार और बंगालमें यह विशेष प्रमाणमें तथा कौंकणमें थोड़े प्रमाणमें होती है।

उपयोगी अङ्ग—इसके केवल मूल औषधरूपमें उपयोगमें आते हैं।

प्राप्तिस्थान (मण्डी)—कलकत्ता, पटना, भागलपुर; आजकल प्रायः सब बड़े शहरोंके पनसारी लोग इसको बेचनेके लिये रखते हैं।

गुण और उपयोग - इस वनस्पतिका आधुनिक वैज्ञानिक रीतिसे परीक्षण सर्वप्रथम कलकत्तेमें म० म० कविराज गणनाथसेन सरस्वती तथा डा० कार्तिकचन्द्र बसुने बोस लेबोरेटरीमें किया (सन् १९३० में)। उसका सारांश डा० कार्तिकचन्द्र बसु विरचित 'भारतीयभैषज्यतत्व' से नीचे उद्धृत किया जाता है—

"इसमें प्रतिशत १ भाग उपक्षार मिला। इसके अतिरिक्त राल, श्वेतसार

* सुवर्णलवण बनानेकी विधि वैद्य सदानन्दजी शास्त्री विचरित **रसतरङ्गिणी** में ५ वें तरङ्गके श्लोक ३५-४८ में लिखी है। उसके अनुसार बना ले।

(स्टार्च—निशास्ता), गोंद और लवण (साल्ट) मिले। लवणांशमें पोटेसियम कार्बोनेट, फोस्फेट और सिलिकेटके साथ केल्शियम और मेन्गेनिज़ मिले। इसमें कोई टेनिन जातिका कषाय द्रव्य नहीं है।

इसके मूलका चूर्ण उपयुक्त मात्रामें सेवन करनेसे अच्छी नींद आती है और मानसिक उत्तेजना तथा उन्मत्तताका ह्रास होता है। इसका उपक्षार हृदयके ऊपर अवसादक क्रिया करता है, और सूक्ष्म रक्तवाहिनियोंको विस्फारित-विकसित करता है, जिससे रक्तका दबाव (ब्लडप्रेशर) कम होता है। जो उन्मादका रोगी उत्तेजित और बलवान् हो, उसको इसके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है। परन्तु जो रोगी दुर्बल, निस्तेज और मनोऽवसादग्रस्त हो, उसपर इसका सावधानीसे प्रयोग करना चाहिये (इसपर विशेष लाभ नहीं होता, किन्तु रोगी अधिक दुर्बल होता है)। प्रबल ज्वरमें इसके सेवनसे अशान्ति, मोह और प्रलाप दूर होकर रोगीको अच्छी नींद आ जाती है और साथमें ज्वरका वेग भी कम होता है।"

मात्रा—रक्तका दबाव कम करनेके लिये ५-१० ग्रेन (२॥-५ रत्ती); निद्रा लानेके लिये ५-१५ रत्ती; उन्माद और प्रबल अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) के लिये १॥ माशासे ३ माशा तक।

अनुपान—जल, दूध या गुलाबके फूलोंका अर्क। इसका चूर्ण १-३ माशा, ५ छोटी इलायचीका चूर्ण, ५ काली मिर्चका चूर्ण और ५ तोला गुलाबका अर्क इनको ३ घण्टा भिगोकर रख दे। पीछे ठंढाई जैसा पीस उसमें ३-६ माशा मिश्री मिलाकर देनेसे अनिद्रा और उन्मादमें अच्छा लाभ होता है।

४—सर्पगन्धाचूर्णयोग।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अत्यन्त सूक्ष्म पीसा हुआ रससिन्दूर १॥ माशा और सर्पगन्धाका सूक्ष्म-कपड़छान चूर्ण २॥ तोला एकत्र मिला, १ घंटा मर्दन करके रख ले।

मात्रा और अनुपान—इसकी २४ पुड़िया करके, सबेर शाम १-१ पुड़िया जल, दूध या गुलाबके अर्कके साथ देवे।

उपयोग—अनिद्रा, अपतन्त्रक (हिस्टीरिया), उन्माद और नये अपस्मारमें इससे लाभ होता है।

५—सर्पगन्धाघनवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

१० सेर सर्पगन्धा, खुरासानी अजवायनकी पत्ती या बीज २ सेर, जटामांसी १ सेर और भांग १ सेर इतना जौकुट (दरदरा) चूर्ण करके उसको अठगुने जलमें मन्दी आँचपर पकावे और हिलाता रहे। जब अष्टमांश जल बाकी रहे, तब ठंढा होनेपर दो बार कपड़ेसे छान कर फिर मन्दी आँचपर पकावे। जब क्वाथ करछी या लकड़ीके खोंचेको लगे इतना गाढ़ा हो, तब उसको नीचे उतारकर धूपमें सुखावे। जब गोली बनने योग्य हो जाय तब उसमें १०-२० तोला पीपलामूलका चूर्ण मिलाकर ३-३ रत्तीकी गोलियाँ बना ले।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—२-३ गोली रातको सोते समय जल या दूधके साथ लेनेसे अच्छी नींद आ जाती है।

वातरोगाधिकार २०।

१—योगराजगुग्गुलु।

नागरं पिप्पली चव्यं पिप्पलीमूलचित्रकौ।
भृष्टं हिङ्ग्वजमोदा च सर्षपा जीरकद्वयम्॥
रास्ना शक्रयवाः पाठा विडङ्गं गजपिप्पली।
कटुकाऽतिविषा भार्गी वाजिगन्धा वचा तथा॥
प्रत्येकं कार्षिकाणि स्युर्द्रव्याणीमानि विंशतिः।
द्रव्येभ्यः सकलेभ्यश्च त्रिफला द्विगुणा भवेत्॥
एभिश्चूर्णीकृतैः सर्वैः समो देयश्च गुग्गुलुः।
गुडूच्या दशमूलस्य क्वाथे पक्वो नवः शुभः॥
वङ्गं रौप्यं च नागं च लौहं ताप्यमथाभ्रकम्।
मण्डूरं रससिन्दूरं प्रत्येकं पलसंमितम्॥
पञ्चरक्तिमिताः कार्या वटीर्देया यथोचिताः।
गुग्गुलुर्योगराजोऽयं त्रिदोषघ्नो रसायनः॥

रास्नादिकाथसंयुक्तो विविधं हन्ति मारुतम् ।
मेदोवृद्धिं तथा कुष्ठं मञ्जिष्ठादियुतो हरेत् ॥
क्वाथेन निम्बनिर्गुण्ड्योः सर्वव्रणनिसूदनः ।

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० ७ से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोंठ, छोटी पीपल, चाव, पीपलामूल, चित्रकके मूलकी छाल, घीमें सेकी हुई हींग, अजमोद, पीली सरसों, जीरा, कलोंजी (मंगरैला), रास्ना, इन्द्रजव, पाढ़के मूल, बायविडंग, बड़ी पीपल, कुटकी, अतीस, भारंगमूल, असगन्ध और वच प्रत्येकका कपड़छान चूर्ण १-१ तोला ; हरेंका दल, बहेड़ादल और आंवले समभाग तीनोंका कपड़छान चूर्ण मिलाकर ४० तोला ; गिलोय और दशमूलके क्वाथमें शुद्ध किया हुआ गूगल ८० तोला ; बंगभस्म, रौप्यभस्म, नागभस्म, लोहभस्म, माक्षिकभस्म, अभ्रकभस्म, मण्डूरभस्म और रससिन्दूर प्रत्येक ४-४ तोला ले । प्रथम गिलोय और दशमूल ४० तोला लेकर उसका अठगुने जलमें क्वाथ करे । जब आठवां हिस्सा जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, उसमें ९० तोला गूगल भिगोकर ४-६ घंटा रख दे । बादमें हाथसे खूब मसलकर कपड़ेसे छान ले । पीछे उसको मन्दी आंचपर पकावे । जब गूगल पक जावे तब उसमें सूक्ष्म पीसा हुआ रससिन्दूर, भस्में तथा अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिला, अच्छी तरह खरल या इमामदस्तेमें कूटकर ५-५ रत्तीकी गोलियां बना ले । कई वैद्य गूगलको गिलोय और त्रिफलाके क्वाथमें शुद्ध किये बिना वैसा ही साफ कर और कूटकर उसमें अन्य द्रव्य मिलाकर गोलियाँ बना लेते हैं । इस प्रकार बनाये हुए योगको **महायोगराजगुग्गुलु** और बिना भस्मोंके बनाये हुए योग को **लघुयोगराजगुग्गुलु** कहते हैं ।

मात्रा—२ गोली महायोगराजगुग्गुलुकी और २-५ गोलीतक लघुयोगराज गुग्गुलुकी है ।

अनुपान और उपयोग—लघु या महायोगराजगुग्गुलु रास्नादि क्वाथके साथ वातरोगोंमें, महामंजिष्ठादि क्वाथके साथ मेदोवृद्धि, कुष्ठ तथा अनार्तव पीड़ितार्तव, आदि स्त्रीरोगोंमें और नीमकी अन्तरछाल तथा संभालूके मूल या पत्तीके क्वाथके साथ सब प्रकारके व्रणोंमें इसका प्रयोग करे ।

२—पञ्चामृतलोहगुग्गुलु ।

रसगन्धकताराभ्रमाक्षिकाणां पलं पलम् ।
लोहस्य द्विपलं चापि गुग्गुलोः पलसप्तकम् ॥
मर्दयेदायसे पात्रे दण्डेनाप्यायसेन च ।
कटुतैलसमायोगाद्यामद्वयमतन्द्रितः ॥
माषमात्रप्रयोगेण गृध्रसीमवबाहुकम् ।
स्नायुजान् वातजांश्चान्यान्नाशयेन्नात्र संशयः ॥

भैषज्यरत्नावली ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, रौप्यभस्म, अभ्रकभस्म और सुवर्णमाक्षिकभस्म प्रत्येक ४-४ तोला, लोहभस्म ८ तोला और साफ किया हुआ गूगल २८ तोला लेवे। प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली करे। पीछे गूगलको लोहेके खरलमें लोहेकी मूसलीसे थोड़े कडुए तेलके छींटे देकर कूटे। जब गूगल नरम हो जाय, तब उसमें कज्जली तथा अन्य भस्में मिला, ६ घंटा मर्दन करके ४-४ रत्तीकी गोलियां बना ले।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सबेरे-शाम दूधसे अथवा चोपचीनी, असगन्ध, एरण्डमूल, उशबा, सोंठ और कडुए सुरंजानके क्वाथके अनुपानसे दे।

उपयोग—इसके सेवनसे गृध्रसी, अवबाहुक, कमर और घुटनेका दर्द तथा स्नायुओंमें होनेवाले वातरोगोंमें अच्छा लाभ होता है।

३—अमृतभल्लातक ।

सुशुद्धभल्लातफलानि सम्यग्द्विधा विदार्याढकसंमितानि ।
विपाच्य तोयेन चतुर्गुणेन चतुर्थशेषे व्यपनीय तानि ॥
पुनः पचेत् क्षीरचतुर्गुणेन घृतांशयुक्तेन यथा घनं स्यात् ।
सितोपलाषोडशभिः पलैस्तु विमथ्य संस्थाप्य दिनानि सप्त ॥
ततः प्रयोज्याऽग्निबलेन मात्रा जयेन्मरुच्छ्लेष्मभवान् विकारान् ।

भैषज्यरत्नावली रसायनाधिकारसे किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छे पके और पुष्ट भिलावोंको १ दिन गोमूत्रमें तथा ३ दिन गायके दूधमें भिगोके रखे। प्रतिदिन जलसे खूब धोकर दूसरे द्रवमें भिगोवे। पीछे कपड़छान

किये हुए ईंटके चूर्णसे खूब मसलकर जलसे धोकर सुखा लें। इस प्रकार शुद्ध किये हुए भिलावोंको खानेके प्रयोगोंके काममें ले। २५६ तोले शुद्ध भिलावोंकी टोपी सरौतेसे काट, दो टुकड़े कर १०२४ तोले जलमें पकावे। जब क्वाथ चौथाई बाकी रहे तब उसको कपड़ेसे छान, उसमें २५६ तोले दूध और ६४ तोले गायका घी मिलाकर मन्दी आंचपर पकाकर खोवा (मावा) बना ले। पीछे नीचे उतार उसमें मिश्रीका कपड़छान चूर्ण ६४ तोले मिला, मथानीसे मथकर कांचके बरतनमें भर ले। सात दिनके बाद इसका खानेके लिये प्रयोग करे।

मात्रा और अनुपान—सवेरे-शाम १-१ तोला देकर ऊपरसे गायका धारोष्ण अथवा गरम करके ठंडा किया हुआ दूध पिलावे।

उपयोग—सब प्रकारके कफ और वातके पुराने रोगोंमें विशेषतः जीर्ण प्रतिश्याय, पक्षाघात और कमरके दर्दमें इसका उपयोग करे। यह योग अच्छा पौष्टिक, वीर्यवर्धक और बाजीकरण है। इसके सेवन करनेवालेको गरम भोजन, अधिक गरम जलसे स्नान, धूपमें बैठना-फिरना और अग्निके पास बैठना निषिद्ध है। इसके सेवनकालमें यदि शरीरमें कहीं भी खाज आने लगे तो प्रयोग बन्द करके नारियलका तेल लगाना चाहिये।

४—नारसिंहचूर्ण।

शतावरीरजः प्रस्थं प्रस्थं गोक्षुरकस्य च।
वाराह्या विंशतिपलं गुडूच्याः पञ्चविंशतिः॥
भल्लातकानां द्वात्रिंशच्चित्रकस्य दशैव तु।
तिलानां शोधितानां च प्रस्थं दद्यात् सुचूर्णितम्॥
त्रिजातस्य पलान्यष्टौ शर्करायाश्च सप्ततिः।
शतावरीसमं देयं विदारीकन्दजं रजः॥
एतदेकीकृतं चूर्णं काचभाण्डे निधापयेत्।
घृतमाक्षिकसंयुक्तं कर्षार्धमुपयोजयेत्॥
नारसिंहमिदं चूर्णं वातरोगहरं नृणाम्।
बल्यं वृष्यं तथा चैव रसायनवरं स्मृतम्॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शतावर ६४ तोला, छोटा गोखरू ६४ तोला, वाराहीकंद ८० तोला, गिलोय १०० तोला, शुद्ध भिलावे १२८ तोला, चित्रकके मूलकी छाल ४० तोला, धोये हुए तिल ६४ तोला, दालचीनी, तेजपात और छोटी इलायची प्रत्येक ११-११ तोला, मिश्री २८० तोला और विदारीकन्द ६४ तोला ले सबको एकत्र कूट कपड़छान चूर्ण करके शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—¼ तोला चूर्ण, ½ तोला गायके घी और १ तोले शहदमें मिलाकर सबेरे-शाम देवे और ऊपरसे गायका दूध पिलावे।

उपयोग—सब प्रकारके वातरोगोंमें इसका प्रयोग करे। यह चूर्ण उत्तम बलकारक, वाजीकर और रसायन है।

५—रसोनपिण्ड।

पक्वकन्दरसोनस्य गुलिका निष्तुषीकृताः।
पाटयित्वा च मध्यस्थं दूरीकुर्यात्तदङ्कुरम्॥
तदुग्रगन्धनाशाय रात्रौ तक्रे विनिक्षिपेत्।
अपनीय च तन्मध्याच्छिलायां पेषयेत्ततः॥
तन्मध्ये पञ्चमांशेन चूर्णमेषां निविक्षिपेत्।
सौवर्चलं यवानीं च भर्जितं हिङ्गु सैन्धवम्॥
कटुत्रिकं जीरके द्वे समभागानि चूर्णयेत्।
एकीकृत्य ततः सर्वं तिलतैलेन योजितम्॥
खादेदग्निबलापेक्षी ऋतुदोषाद्यपेक्षया।
अनुपानं ततः कुर्यादेरण्डश्रृतमन्वहम्॥
सर्वाङ्गैकाङ्गजं वातमर्दितं चापतन्त्रकम्।
अपस्मारमथोन्मादमूरुस्तम्भं च गृध्रसीम्॥
उरःपृष्ठकटीपार्श्वकुक्षिपीडां क्रमीञ्जयेत्।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छे पके हुए रसदार एक कलीका लहसुन ला, उनके ऊपरका छिलका उतार, चाकूसे दो टुकड़े करके बीचका अंकुर निकाल दे। पीछे उनको रातभर गायके दहीकी

छाछमें भिगो दे । सबेरे छाछसे निकाल,धो, पत्थरके खरलमें महीन पीस,उसमें सोंचर नमक (काला नमक), अजवायन, घीमें सेंकी हुई हींग, सेंधा नमक, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, जीरा और स्याह जीरा इनको सम भाग लेकर इनका कपड़छान किया हुआ चूर्ण एक-पञ्चमांश (पाँचवाँ हिस्सा) मिलाकर तथा थोड़ा तिलका तेल मिलाकर काँचके पात्रमें भर ले ।

मात्रा और अनुपान—जठराग्नि और रोगीका बल, ऋतु तथा दोष-दूष्यादि देखकर ½ से १ तोला तक देकर ऊपरसे रेंडीके मूलका क्वाथ पिलावे ।

उपयोग—इस योगका सब प्रकारके वातरोगोंमें, विशेष करके सर्वाङ्गवात, एकांगवात, अर्दित, अपतन्त्रक, अपस्मार, वातज उन्माद, ऊरुस्तम्भ, गृध्रसी; तथा छाती, पीठ, कमर, पार्श्व और पेटके दर्द एवं कृमिरोगोंमें प्रयोग करे ।

६—वातकुलान्तक रस ।

मृगनाभिः शिवा नागकेशरं कलिवृक्षजम् ।
पारदो गन्धको जातीफलमेला लवङ्गकम् ॥
प्रत्येकं कार्षिकं चैव श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ।
ब्राह्मीरसेन संमर्द्य वटीं कुर्याद् द्विरक्तिकाम् ॥
अपस्मारे महाघोरे मूर्च्छारोगे च शस्यते ।
वातजान् सर्वरोगांश्च हन्याद्वातकुलान्तकः ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

कस्तूरी, बड़ी हर्रेका दल, नागकेशर, बहेड़ादल, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, जायफल, छोटी इलायची और लौंग प्रत्येक सम भाग लेवे । प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली कर, उसमें कस्तूरी डालकर ब्राह्मीके रसमें १ दिन मर्दन करे । बादमें अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिला, ब्राह्मीके रसमें एक दिन मर्दन कर, २-२ रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा ले ।

मात्रा और अनुपान—१ गोली दिनमें ३-४ बार ब्राह्मी, शंखाहुली, लौंग और जटामांसीके क्वाथके अनुपानसे देवे ।

उपयोग—अपस्मार, मूर्च्छा, हिस्टीरिया, आक्षेपक आदि वातरोगोंमें इसका प्रयोग करे ।

८

७—वृहद्वातचिन्तामणि रस ।

भागमेकं स्वर्णभस्म द्विभागं रौप्यमभ्रकम् ।
मौक्तिकं विद्रुमं लौहं भागत्रयमितं भवेत् ॥
काकोलीमग्निजारं च भागमेकं विनिक्षिपेत् ।
चन्द्रोदयं सप्तभागं कन्यारसविमर्दितम् ॥
द्विगुञ्जा वटिका कार्या देया योग्यानुपानतः ।
वातचिन्तामणिर्हन्याद्वातरोगानशेषतः ॥

द्रव्य और निर्माणविधि —

स्वर्णभस्म १ भाग, रौप्यभस्म २ भाग, अभ्रकभस्म २ भाग, मोतीकी पिष्टी ३ भाग, प्रवालकी पिष्टी ३ भाग, काकोलीका चूर्ण १ भाग, अम्बर १ भाग और चन्द्रोदय ७ भाग लेवे। प्रथम चन्द्रोदयको खूब महीन पीस, उसमें काकोलीका चूर्ण और अम्बर डालकर ग्वारपाठेके रसमें मर्दन करे। जब वे अच्छी तरह मिल जायँ तब अन्य द्रव्य मिला, एक दिन ग्वारपाठेके रसमें मर्दन कर, १-१ रत्तीकी गोलियाँ बना कर छायामें सुखा ले।

मात्रा और अनुपान—१ गोली यथावश्यक दिनमें ३-४ बार शहदमें मिलाकर चटावे।

गुण और उपयोग—यह रस हृदय और मस्तिष्कके लिये उत्तम बलकारक, वात-कफनाशक और वाजीकरण है। सब प्रकारके वातरोगोंमें इसका प्रयोग करे। आक्षेपक और अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) में मांस्यादिक्वाथके अनुपानसे देवे। सन्निपात ज्वरमें जब प्रलाप, मोह, नाड़ीकी क्षीणता, हाथ-पाँव काँपना, पसीना अधिक होकर शरीर ठंडा पड़ना इत्यादि लक्षण हों तो इसके प्रयोगसे लाभ होता है। प्रलापावस्थामें ज्वराधिकारोक्त तगरादिक्वाथके साथ इसका प्रयोग करे।

८—खंजनिकारि रस ।

कुपीलु मल्लसिन्दूरं तथा रजतभस्म च ।
मुद्गमानां वटीं कुर्यात् संभाव्यार्जुनवारिणा ॥
अर्दितं पक्षघातं च गदं खञ्जनिकं तथा ।
रसः खञ्जनिकार्याख्यो हरेदाशु न संशयः ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध कुचलेका कपड़छान चूर्ण, मल्लसिन्दूर और रौप्यभस्म सम भाग लेवे। प्रथम मल्लसिन्दूरको खूब महीन पीसे। पीछे उसमें अन्य द्रव्य मिला, अर्जुन वृक्षकी छालके क्वाथकी ७ भावनाएँ दे, मूंगके बराबर गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सबेरे शाम गायके दूध या दशमूलके क्वाथके अनुपानसे दे।

उपयोग—अर्दित, खञ्जवात और पुराने पक्षाघातमें इससे अच्छा लाभ होता है।

९—अपतन्त्रकारिवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

घीमें सेंकी हुई हींग १ तोला, कपूर १ तोला, गांजा आधा तोला, खुरासानी अजवायनके बीज या पत्ती २ तोला और तगर (यूनानी-आसारून) २ तोला; सबका कपड़छान चूर्ण कर जटामांसीके फाण्टमें पीस, २-२ रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा ले।

मात्रा—२ गोली देकर ऊपरसे मांस्यादिक्वाथ पिलावे। ऐसे दिनमें ३-४ मात्रा यथावश्यक दे।

उपयोग—अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) में इस योगसे अच्छा लाभ होता है।

१०—मांस्यादिक्वाथ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जटामांसी १ तोला, असगन्ध $\frac{3}{4}$ तोला और खुरासानी अजवायनके बीज १॥ माशा-इनको जौकुट कर, १० तोला जलमें पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़ेसे छान ले।

उपयोग—इस क्वाथका हिस्टीरिया, आक्षेप और बालकोंका आक्षेपक—इन रोगोंमें अकेले या अपतन्त्रकारिवटी, वृहद्वातचिन्तामणि, ब्राह्मीवटी, सर्पगन्धायोग इनके अनुपानरूपमें प्रयोग करे।

११—मल्लसिन्दूर।

रसरसविधू नवाक्षौ सार्धेषुचतुःसुवर्णबलिमल्लौ।
कूप्यां द्व्यहं परिपचेत् पवनकफौ हन्ति मल्लसिन्दूरः॥

सिद्धभैषज्यमणिमाला।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद ९ भाग, शुद्ध रसकपूर ९ भाग, शुद्ध गन्धक ५॥ भाग और शुद्ध संखिया ४॥ भाग लेवे । प्रथम पारे-गन्धककी कज्जली करे । पीछे उसमें रसकपूर और सङ्खिया मिला,ग्वारपाठेके रसमें २ दिन मर्दन कर, ७ कपड़मिट्टी की हुई शीशीमें भरकर बालुकायन्त्रमें २ दिन पकावे । स्वांगशीतल होनेपर शीशीको तोड़, शीशीके गलेमें जमे हुए मल्लसिन्दूरको निकाल, ३ दिन पत्थरके खरलमें पीस, खूब महीन होनेपर शीशीमें भर ले ।

मात्रा और अनुपान—½ से १ रत्ती दिनमें दो बार शहदमें या सितोपलादि चूर्ण १॥ माशे और शहदमें मिलाकर दे । कफरोगोंमें अदरखके रस और शहदके साथ मिलाकर दे ।

उपयोग—सब प्रकारके वात और कफके रोगोंमें विशेषतः अर्दित और पक्षाघातमें तथा जीर्ण प्रतिश्याय और कफाधिक तमकश्वास (दमे) में इससे अच्छा लाभ होता है ।

१२—सुवर्णसमीरपन्नग ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सोनेके वरक १ भाग, शुद्ध पारद ४ भाग, शुद्ध गन्धक ४ भाग, शुद्ध संखिया ४ भाग, शुद्ध मैनसिल ४ भाग और शुद्ध हरताल ४ भाग लेवे । प्रथम पत्थरके खरलमें पारा डालकर उसमें सोनेके वरक एक एक करके मिलावे । जब सब वरक मिल जाएँ तब उसमें गन्धक मिलाकर कज्जली करे । पीछे उसमें संखिया, मैनसिल और हरताल मिलाकर २ दिन ग्वारपाठेके रसमें मर्दन करके सुखा ले । पीछे सात कपड़मिट्टी की हुई शीशीमें भरकर बालुकायन्त्रमें दो दिन पकावे । अग्नि इतना रखे जिसमें कज्जली द्रव होकर पकती रहे (कुछ शीशीके गलेमें आवे इतनी तेज न करे)। स्वांगशीतल होनेपर शीशीको तोड़, तलस्थ रसको निकाल, २-३ दिन खूब महीन पीसकर शीशीमें भर ले ।

मात्रा और अनुपान—½ से १ रत्ती, शहद या अदरकका रस और शहदके साथ मिलाकर चटावे ।

उपयोग—सब प्रकारके वातरोगोंमें विशेषतः अर्दित, पक्षाघात, कटिस्तम्भ, पार्श्वशूल इनमें, कफाधिक तमकश्वासमें, सन्निपातज्वरमें जब तन्द्रा, स्वेदाधिक्य,

शीतांग आदि लक्षण हों तब इस योगसे अच्छा लाभ होता है। फिरंगोपदंशसे जो वातरोग होते हैं, उनमें भी इससे विशेष लाभ होता है।

१३—ब्राह्मीवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अभ्रकभस्म, संगेयशबकी भस्म या पिष्टी, अकीककी भस्म या पिष्टी, माणिक्यकी भस्म या पिष्टी, चन्द्रोदय, प्रवालकी भस्म या पिष्टी, कहरुबाकी पिष्टी, सोनेकी भस्म या वरक, मोतीकी पिष्टी प्रत्येक ६-६ माशा, जायफल, लौंग, कूठ, जावित्री, स्याह-जीरा, छोटी पीपल, दालचीनी, अनीसून, असगन्ध, अकरकरा, धनिया, वंशलोचन, छोटी इलायचीके बीज, शंखाहुली, श्वेतचन्दन, सौंफ, तेजपात, नागकेशर, रूमीमस्तगी, पीपलामूल, चित्रकके मूलकी छाल और कुलिंजन प्रत्येक ४-४ माशा; कस्तूरी, अम्बर, ब्राह्मी, निशोथ, अगर और केशर प्रत्येक १॥-१॥ तोला लेवे। प्रथम चन्द्रोदय, केशर, कस्तूरी और अम्बरको खूब महीन पीस, उसमें अन्य भस्में और पिष्टियां मिला, सोनेके वरक १-१ करके मिलावे। पीछे अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिला १ दिन ब्राह्मीके स्वरसमें मर्दन कर, २-२ रत्तीकी गोलियाँ बना, छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा—१-२ गोली दिनमें २-३ बार आवश्यकतानुसार दे।

अनुपान और उपयोग—सन्निपातज्वरमें प्रलाप हो तो तगरादिक्वाथके अनुपानसे, अपतन्त्रक और आक्षेपकमें मांस्यादिक्वाथके अनुपानसे, सन्ततज्वरमें शहदमें मिलाकर, वातरोगोंमें दशमूलके क्वाथके अनुपानसे, हृदयकी दुर्बलतामें खमीरे गावज़बानके साथ मिला कर, भ्रम (सिरमें चक्कर आने) में द्राक्षादि चूर्णके साथ इसका प्रयोग करे। दिल और दिमागकी कमजोरी और उनसे होनेवाले लक्षणोंमें इससे अच्छा लाभ होता है।

१४—रसराजरस।

पलैकं रससिन्दूरं व्योमभस्म च कार्षिकम्।
तदर्धं काञ्चनं दद्यान्मुक्तां विद्रुममेव च॥
लौहं रौप्यं मृतं वङ्गं वाजिगन्धां लवङ्गकम्।
जातीकोषफले क्षीरकाकोलीं च तदर्धतः॥
कन्यायाः काकमाच्याश्च रसैः पिष्ट्वा वटीं चरेत्।

गुञ्जाद्वयोन्मितां दत्त्वा गोक्षीरमनुपाययेत् ॥
पक्षाघातेऽर्दिते वाते हनुस्तम्भेऽपतन्त्रके।
आक्षेपके कर्णनादे तथैव मस्तकभ्रमे ॥
सर्ववातविकारेषु रसराजः प्रकीर्तितः।

भैषज्यरत्नावलीसे किंचित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

रससिन्दूर ४ तोला, अभ्रकभस्म १ तोला; सुवर्णभस्म, मोतीकी पिष्टी, प्रवालकी भस्म या पिष्टी आधा-आधा तोला; लोहभस्म, रौप्यभस्म, बङ्गभस्म, असगन्ध, लौङ्ग, जायपत्री, जायफल और काकोली प्रत्येक चौथाई-चौथाई तोला लेवे। प्रथम सिन्दूरको खूब महीन पीस, उसमें अन्य भस्में तथा वनस्पतियोंका कपड़छान चूर्ण मिला, एक एक दिन ग्वारपाठे और मकोयके रसमें मर्दनकर, २-२ रत्तीकी गोलियाँ बना, छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सवेरे-शाम शहदमें चटाकर ऊपरसे गायका दूध देवे।

उपयोग—सब प्रकारके वातरोगोंमें, विशेषतः पक्षाघात, अर्दित, अपतन्त्रक, आक्षेपक, कानमें आवाज होना और सिरमें चक्कर आना, इन विकारोंमें इसका प्रयोग करे।

१५—नारायणतैल।

अश्वगन्धां बलां बिल्वं पाटलां बृहतीद्वयम्।
श्वदंष्ट्रां चैव निर्गुण्डीं श्योनाकं च पुनर्नवाम् ॥
माषान् कुरण्टकं रास्नामेरण्डं देवदारु च।
प्रसारणीमग्निमन्थं कुर्याद्दशपलं पृथक् ॥
चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा कुर्यात् पादावशेषितम्।
तैलाढकेन संयोज्य शतावर्या रसाढकम् ॥
क्षिपेत्तत्र च गोक्षीरं तथैवाढकसंमितम्।
शनैर्विपाचयेदेभिः कल्कैर्द्विपलिकैः पृथक् ॥
कुष्ठैलाचन्दनबलामांसीशैलेयसैन्धवैः।
अश्वगन्धावचारास्नाशतपुष्पेन्द्रदारुभिः ॥

पर्णीचतुष्टयेनैव तगरेण च साधयेत् ।
तत्तैलं नावनेऽभ्यङ्गे पाने बस्तौ च योजयेत् ।
पक्षाघातं हनुस्तम्भं मन्यास्तम्भावबाहुकम् ॥
खल्लीं कटिग्रहं पार्श्वशूलं कर्णव्यथां तथा ।
गृध्रसीं गात्रशोषं च पाङ्गुल्यं च शिरोग्रहम् ॥
अन्यांश्च विषमान् वाताञ्जयेत् सर्वाङ्गसंश्रयान् ।

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० ९ से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि –

असगन्ध, बरियारके मूल, बेलमूल, पाडरके मूल, छोटी कटेरी (भटकैया), बड़ी कटेरी (बरहंटा), गोखरू, संभालुकी पत्ती, सोनापाठाके मूल या छाल, गदहपूरनाके मूल, उड़द, कटसरैया, रास्ना, एरण्डमूल, देवदारु प्रसारणी (खीप) और अरणी प्रत्येक ४०-४० तोला ले, उनको जौकुट करके ४ द्रोण (४०९६ तोले) जलमें पकावे । जब चौथाई जल बाकी रहे तब नीचे उतार, ठण्डा होने पर कपड़ेसे छान ले। पीछे उसमें तिलका तेल २५६ तोला, शतावरका रस २५६ तोला, गायका दूध २५६ तोला और कूठ, छोटी इलायची, श्वेतचन्दन, बरियारके मूल, जटामांसी, छड़ीला, सेंधानमक, असगन्ध, बच, रास्ना, सौंफ, देवदार, सरिवन, पिठवन, मषवन, मुगवन और तगर इन प्रत्येकका कल्क ८-८ तोला मिलाकर तेल पकावे । तेल सिद्ध होनेपर कपड़ेसे छानकर शीशियोंमें भर ले ।

उपयोग—पक्षाघात, अर्दित, हनुस्तम्भ, मन्यास्तम्भ, अवबाहुक, खल्ली (हाथ-पाँवमें बाँयटे आना), कमरका दर्द, पार्श्वशूल, कानका दर्द, गृध्रसी, शरीरके किसी अवयवका सूखना, लँगड़ापन, शिरका दर्द तथा अन्य एकांग या सर्वाङ्गमें होनेवाले वातरोगोंमें इस तेलका उपयोग मालिश करनेमें, नस्य देनेमें, कानमें डालनेमें, पिलानेमें और बस्ति देनेमें करे ।

१६—विषगर्भतैल ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

ताजे असगंधके मूल, कनेरकी जड़, आककी जड़, धतुरेका पञ्चांग, संभालुकी पत्ती और कायफलकी छाल ये प्रत्येक ६४-६४ तोला लेकर उसका अठगुने जलमें क्वाथ करे । जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छानकर उसमें तिलका तेल

१२८ तोला और बछनाग, धतूरके बीज, घुंघची (चिरमिटी), अफीम, खुरासानी अजवायन, कलिहारीकी जड़, कूठ, कुचला और बच प्रत्येक ४-४ तोलेका कल्क मिलाकर मन्दी आँचपर पकावे। तेल तैयार होनेपर कपड़ेसे छान, थोड़ी गरम हालतमें उसमें ५ तोला कपूरका चूर्ण मिलाकर शीशीमें भर ले।

उपयोग—सन्धिवातमें और शरीरके किसी भी अवयवमें दर्द होता हो तो इस तैलकी हल्के हाथसे मालिश करे। पीड़ा शान्त करनेके लिये यह उत्तम योग है।

१७—पञ्चगुणतैल ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

हर्रे, बहेड़ा और आंवला प्रत्येक ५-५ तोला, नीम और संभालुकी पत्ती प्रत्येक १५-१५ तोला ले जौकुट करके अठगुने जलमें पकावे। जब चौथाई जल बाकी रहे तब उसमें तिलका तेल ८० तोला तथा मोम, गन्धाबिरोजा, शिलारस, राल और गूगल प्रत्येक ४-४ तोला डालकर मन्दी आँचपर पकावे। पकते पकते खरपाक होकर तेल अलग हो जाय तब कपड़ेसे छानकर थोड़ी गरम हालतमें उसमें कपूरका मोटा चूर्ण ५ तोला डाल चमचेसे हिलाकर मिला दे। ठंढा होनेपर उसमें तार्पीनका तेल, युकेलिप्टसका तेल और केजोपुटीका तेल २॥-२॥ तोला मिलाकर शीशीमें भर ले।

उपयोग—संधिवात और शरीरके किसी भी अवयवके शूल-दर्दमें हलके हाथसे मालिश करे। कर्णशूलमें कानमें डाले। सब प्रकारके व्रणोंमें व्रणको नीम और सभालुकी पत्तीके क्वाथसे धोकर उसपर इस तेलमें भिगोई हुई रूई या स्वच्छ कपड़ा रख, ऊपर केला, समुद्रशोष, धायपात अथवा बड़का पत्ता रखकर बाँध दे। यह तेल उत्तम वेदनाहर (पीड़ाशामक) और व्रणका शोधन-रोपण करनेवाला है।

१८—वातघ्नलेप ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कुन्दुरू गोंद २० तोला, आँबाहल्दी ४ तोला, सज्जीखार २ तोला, एलवा (मुसब्बर) ५ तोला, हीराबोल ४ तोला, आर्चा २ तोला, गेरू ५ तोला, सफेद सरसों १ तोला, हींग १ तोला, उसारे रेवन्द १ तोला, अंजरूत २ तोला, डीका-माली गोंद २ तोला, मेदालकड़ी ४ तोला, चन्द्रसूर (चंसूर-हालीम) ४ तोला,

गुगुल २ तोला, अलसी २ तोला, उशक २ तोला और मेथी २ तोला, इन सबका चूर्ण करके रख ले।

उपयोग—आवश्यकतानुसार ले, जलमें खूब महीन पीस, गरम करके जहां पीड़ा हो या चोट लगी हो, वहां मोटा लेप करके ऊपर रूई चिपका दे। इससे पीड़ा और सूजन शान्त होती है।

१९—वातहर उपनाह।

कोलं कुलत्थाः सुरदारु रास्ना माषातसीतैलफलानि कुष्ठम्।
वचा शताह्वा यवचूर्णमम्लमुष्णानि वातामयिनां प्रदेहः॥

चरक सू० अ० ३

सुखे हुए बेरका गूदा, कुलथी, देवदार, रास्ना, उड़द, अलसी, तिल, रेंडीके बीज, कूठ, बच, सौंफ और जौ-इनका चूर्ण कर, खट्टी कांजी (या गोमूत्र) में पका, दो कपड़ोंके बीचमें रखकर जहां वायुका दर्द हो वहां सेंके। इससे पीड़ा शान्त होती है।

२०—महारास्नादि क्वाथ।

रास्ना द्विगुणभागा स्यादेकभागास्तथाऽपरे।
धन्वयासबलैरण्डदेवदारुशटीवचाः॥
वासको नागरं पथ्या चव्यं मुस्ता पुनर्नवा।
गुडूची वृद्धदारुश्च शतपुष्पा च गोक्षुरः॥
अश्वगन्धा प्रतिविषा कृतमालः शतावरी।
कृष्णा सहचरश्चैव धान्यकं बृहतीद्वयम्॥
द्वीपान्तरवचा मुण्डी बिल्वो नागबला तथा।
एभिः शृतं पिबेत् क्वाथं शुण्ठीचूर्णेन संयुतम्॥
कृष्णाचूर्णेन वा योगराजगुग्गुलुनाऽथवा।
हिङ्गुसौवर्चलाभ्यां वा तैलेनैरण्डजेन वा॥
सर्ववातविकारेषु पक्षाघातेऽवबाहुके।
गृध्रस्यामामवाते च श्लीपदे चापतानके॥
वातवृद्धौ तथाऽऽध्माने नार्या योन्यामयेषु च।
महारास्नादिराख्यातः कटिपृष्ठरुजापहः॥

शार्ङ्गधर म० खं० अ० २ से किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

रास्ना २ भाग; धमासा, बरियाराके मूल, रेंडीके मूल, देवदार, कचूर, बच, अडूसेके मूल, सोंठ, हर्रे, चाब, नागरमोथा, गदहपुरना, गिलोय, बिधारा, सोयाके बीज, गोखरू, असगन्ध, अतीस, अमलतासका गूदा, शतावर, छोटी पीपल, कटसरैया, धनिया, छोटी कटाई, बड़ी कटाई, चोपचीनी, गोरखमुंडी, बेलके वृक्षकी जड़ और गँगेरन—इनको सम भाग ले, जौकुट करके रख ले। इसमेंसे एक तोला ले उसको १६ तोले जलमें पका, ४ तोला जल बाकी रहनेपर सोंठका चूर्ण, छोटी पीपलका चूर्ण, योगराजगूगल, हींग सोंचरका चूर्ण अथवा रेंडीका तैल इनमेंसे किसी एक अनुपानके साथ दिनमें २ बार सवेर-शाम दे।

उपयोग—सब प्रकारके वातरोगोंमें, विशेष करके पक्षाघात, अवबाहुक, गृध्रसी, आमवात, सन्धिवात, श्लीपद, अपतानक, वातज अण्डवृद्धि, पेटका अफरा और स्त्रियोंके पीडितार्तव तथा अनार्तव इन रोगोंमें इसका प्रयोग करे।

२१—माजून कुचला।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध कुचला १२ तोला, गुले गावजवान ८ तोला, छोटी इलायची ४ तोला, कचूर ४ तोला, शकाकुल ४ तोला, चन्दन सफेद ४ तोला, आंवला ४ तोला, बड़ी हर्ड ४ तोला, अगर २ तोला, लौंग २ तोला, मगज चिलगोजा ६ तोला, मगज नारियल ६ तोला, मगज भिलावा ६ तोला, नागरमोथा २ तोला, शुद्धवछनाग १ तोला, कालीमिर्च २ तोला, असगन्ध २ तोला, चोपचीनी ८ तोला, सुरंजानकडवा ६ तोला, जायफल २ तोला, जावित्री २ तोला, अकलकरा ४ तोला, इन सबका कपड़छान चूर्ण कर, तथा अभ्रकभस्म २ तोला, लोहभस्म २ तोला और शुद्ध संखिया १॥ माशा ले सबको तीन गुने शहदमें मिलाकर कांचकी बरनीमें भरकर रख दे।

मात्रा और अनुपान—२ माशा सवेर-शाम खानेके तीन घंटा पहले गरम दूध के साथ देवे। यह माजून सब प्रकारके वातरोग, विशेषतः पक्षाघात, कटीशूल, जीर्ण सन्धिवात और अर्दितमें विशेष लाभ करता है तथा उत्तम पाचन, दीपन, रसायन, वाजीकर और बलकारक है।

—:※:—

कुष्ठाधिकार २१।

१—महातिक्तक घृत।

सप्तच्छदं प्रतिविषां शम्पाकं तिक्तरोहिणीं पाठाम्।
मुस्तमुशीरं त्रिफलां पटोलपिचुमर्दपर्पटकम्॥
धन्वयवासं चन्दनमुपकुल्यां पद्मकं हरिद्रे द्वे।
षड्ग्रन्थां सविशालां शतावरीं सारिवां वासाम्॥
वत्सकयासं मूर्वाममृतां किराततिक्तं चैव।
कल्कान् कुर्यान्मतिमान् यष्ट्याह्वं त्रायमाणां च॥
कल्कश्चतुर्थभागो जलमष्टगुणं रसोऽमृतफलानाम्।
द्विगुणो घृतात् प्रदेयस्तत् सर्पिः पाययेत् सिद्धम्॥
कुष्ठानि रक्तपित्तप्रबलान्यर्शांसि रक्तवाहीनि।
वीसर्पमम्लपित्तं वातासृक् पाण्डुरोगं च॥
विस्फोटकान् सपामानुन्मादं कामलां ज्वरं कण्डूम्।
हन्यादेतत् सर्पिः पीतं काले यथाबलं सद्यः॥

(च० चि० अ० ७)

द्रव्य और निर्माणविधि—

छतिवन, अतीस, अमलतास, कुटकी, पाढ़, नागरमोथा, खस, हर्रे, बहेड़ा, आँवला, परवलकी पत्ती, नीम, पित्तपापड़ा, धमासा, चन्दन, छोटी पीपल, पद्माख, हल्दी, दारुहल्दी, बच, इन्द्रायनकी जड़, शतावर, अनन्तमूल, अडूसा, कुड़ा (कुरैया) की छाल, जवासा, मूर्वा, गिलोय, चिरायता, मुलेठी और त्रायमाण प्रत्येक १-१ तोला ले, उनका कपड़छान चूर्ण बना. जलमें पीसकर कल्क करे। पीछे उसमें गायका घी १२८ तोला, जल १०२४ तोला और आँवलेका रस २५६ तोला मिलाकर घृतपाक-विधिसे घृत पकावे। तैयार होनेपर कपड़ेसे छानकर काँचके बरतनमें भर ले।

मात्रा—१-२ तोला दिनमें दो बार सवेर-शाम दे।

उपयोग--रक्त और पित्तकी अधिकतावाले कुष्ठ, रक्तार्श, विसर्प, अम्लपित्त (जिसमें खट्टा वमन होता हो), वातरक्त, पांडुरोग, विस्फोटक, पामा, उन्माद, कामला, जीर्ण ज्वर और कण्डू—इन रोगोंमें इसके सेवनसे अच्छा लाभ होता है।

वक्तव्य—यदि रोगी इस घृतको न लेना चाहता हो तो कल्कके द्रव्योंका क्राथ करके पिलावे अथवा कल्कके द्रव्योंके बराबर (३१ तोला) खैरकी लकड़ीका बुरादा मिला, उसको जौकुटकर, उसमें चौगुना जल डालकर पकावे ; जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छानकर उसमें क्राथसे आधी चीनी तथा ३२ वाँ भाग अनन्त-मूल और धायके फूलका चूर्ण मिलाकर चीनी मिट्टीकी बरनी या सागौनकी लकड़ीके पीपेमें डालकर १ मास रख छोड़े । १ मासके बाद कपड़ेसे छानकर फिर उसी पात्रमें भर दे । यह महातिक्तासव तैयार होता है । इसको भी ऊपर लिखे रोगोंमें ४ तोलेको मात्रामें उतना ही जल मिलाकर दिनमें दो बार पिलावे ।

२—खदिरारिष्ट ।

खदिरस्य तुलार्धं तु देवदारु च तत्समम् ।
वाकुची द्वादशपला दार्वी स्यात् पञ्चविंशतिः ॥
त्रिफला विंशतिपला ह्यष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत् ।
कषाये द्रोणशेषे च पूते शीते विनिक्षिपेत् ॥
माक्षिकस्य सितायाश्च दद्यादेकतुलां पृथक् ।
धातक्याः कुडवं चैव कङ्कोलं नागकेशरम् ॥
जातीफलं लवङ्गैलात्वक्पत्राणि पृथक् पृथक् ।
पलोन्मितं सारिवाया दद्यादष्टपलं भिषक् ॥
घृतभाण्डे विनिक्षिप्य मासादूर्ध्वं पिबेन्नरः ।
एष वै खदिरारिष्टः सर्वकुष्ठनिवारणः ॥

शार्ङ्गधर म० खं० १० ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

खैरकी लकड़ीका बुरादा २०० तोला, देवदार २०० तोला, बावची ४८ तोला, दारुहल्दी १०० तोला, हर्रे, बहेड़ा और आँवला मिलाकर ८० तोला, इन सबको जौकुटकर, ८१९२ तोले जलमें पकाकर १०२४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान ले । पीछे उसमें शहद ४०० तोला, चीनी ४०० तोला तथा धायके फूल ६४ तोला, कबाबचीनी, नागकेशर, जायफल, लौंग, छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात प्रत्येक ४-४ तोला तथा अनन्तमूल ३२ तोला, इनका कपड़छान चूर्ण मिला, पेचदार

ढक्कनकी चीनी मिट्टीकी बरनीमें या सागौनकी लकड़ीके पीपेमें भरकर १ मास रहने दे। १ मासके बाद कपड़ेसे छान, उसी बरतनको धोकर उसमें भर ले।

मात्रा—२-४ तोला, उतना ही जल मिलाकर दिनमें दो बार दे।

उपयोग—सब प्रकारके कुष्ठ रोगोंमें इसका अकेला या गन्धकरसायनके अनुपानके रूपमें प्रयोग करे।

३—गन्धकरसायन।

शुद्धो बलिर्गोपयसा त्रिवारं ततश्चतुर्जातगुडूचिकाद्भिः।
पथ्याक्षधात्रीफलभृङ्गनीरैर्भाव्योऽष्टवारं पृथगार्द्रकेण॥
सिद्धे सितां योजय तुल्यभागां रसायनं गन्धकसंज्ञकं स्यात्।
कुष्ठानि सर्वाणि निहन्ति नाडीव्रणं तथा कोष्ठगतांश्च रोगान्॥
मासोन्मिते सेवित एति मर्त्यो वीर्यं च पुष्टिं बलमग्निदीप्तिम्।

आयुर्वेदप्रकाश।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गायके दूधसे ३ बार शुद्ध किया हुआ गन्धक ६४ तोला ले, उसको पत्थरके खरलमें डाल दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची और नागकेशर इन प्रत्येकके कपड़-छान चूर्णको रातमें द्विगुण जलमें भिगो सबेरमें हाथसे मसलकर कपड़ेसे छाने हुए जलसे, ताजी गिलोयके स्वरससे, हर्रे और बहेड़ेके क्वाथसे, आंवला, भङ्गरा और अदरख इनके स्वरससे ८-८ दिन मर्दन करे। अर्थात् प्रत्येकके जल, क्वाथ या स्वरसमें ८-८ दिन भावना दे। कुल ८० भावना दे। प्रत्येक भावनामें ३-६ घण्टा मर्दन करके छायामें सुखानेके बाद दूसरी भावना दे। अन्तमें सुखाकर उसमें समानभाग मिश्रीका चूर्ण मिलाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—४-८ रत्ती सवेर-शाम जल, दूध, मंजिष्ठादि क्वाथ, महातिक्त घृतके कल्कद्रव्योंका क्वाथ अथवा खदिरारिष्टके अनुपानसे दे।

उपयोग—इसके सेवनसे सब प्रकारके कुष्ठ, नाड़ीव्रण (नासूर-भगन्दर) और शूल—अग्निमान्द्य आदि पेटकी बीमारियां दूर होती हैं। एक मास इसके सेवन करनेसे वीर्य, बल तथा शरीरकी पुष्टि प्राप्त होती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

४—मदयन्त्यादिचूर्ण।

द्रव्य और निर्माणविधि—

छायामें सुखाए हुए मेंहदीके बीज या पत्तीका कपड़छान चूर्ण २ भाग और भङ्गरेके रसमें शुद्ध किये हुए गन्धकका कपड़छान चूर्ण १ भाग ले, दोनोंको ३ घण्टा मर्दन करके शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ माशा दिनमें २-३ बार जल या सारिवादि हिमके अनुपानसे दे।

उपयोग—कण्डू (खाज), पामा और फोड़े-फुन्सीमें इसका प्रयोग करे।

५—सारिवादि हिम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अनन्तमूल, उशबा, चोपचीनी, मजीठ, गिलोय, धमासा, रक्तचन्दन, गुलबनफसा, खस, गोरखमुण्डी, शाहतरा, कमलके फूल, गुलाबके फूल, गूमा, पद्माख और शंखाहुली प्रत्येक समभाग लेकर उसका मोटा चूर्ण करके रख ले। इसमेंसे १ तोले चूर्णको रातमें ६ तोला गरम जलमें मिट्टीके या काँचके पात्रमें भिगो दे। सवेरमें हाथसे मसल, कपड़ेसे छानकर पीनेको दे। सवेरमें उसीमें फिर ५ तोला गरम जल डालकर रख छोड़े। उसको शामको मसल, कपड़ेसे छानकर पीनेको दे।

उपयोग—सब प्रकारके रक्तविकार, कण्डू, पामा, हाथ-पाँवकी जलन, अम्लपित्त, जीर्णज्वर आदि पित्त और रक्तदुष्टिप्रधान विकारोंमें इसका प्रयोग करे

६—महामञ्जिष्ठादिकषाय।

मञ्जिष्ठामुस्तकुटजगुडूचीकुष्ठनागरैः।
भार्गीक्षुद्रावचानिम्बनिशाद्वयफलत्रिकैः॥
पटोलकटुकीमूर्वाविडङ्गासनशालकैः।
शतावरीत्रायमाणामुण्डीन्द्रयववासकैः॥
भृङ्गराजमहादारुपाठाखदिरचन्दनैः।
त्रिवृद्वरुणकैरातबाकुचीकृतमालकैः॥
शाखोटकमहानिम्बकरञ्जातिविषाजलैः।
इन्द्रवारुणिकानन्तासारिवापर्पटैः समैः॥
एभिः कृतं पिवेत् क्वाथं मधुशर्करयाऽन्वितम्।

अष्टादशसु कुष्ठेषु वातरक्तादिते तथा॥
मेदोवृद्धौ श्लीपदे च मञ्जिष्ठादिः प्रशस्यते।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मजीठ, नागरमोथा, कुड़ा, गिलोय, कूठ, सोंठ, भारंगी, छोटी कटाई (भटकटैया), बच, नीमकी अन्तर्छाल, हल्दी, दारुहल्दी, हर्ड, बहेड़ा, आंवला, पटोल, कुटकी, मूर्वा, बायबिड़ङ्ग, विजयसार, साल (सखुआ), शतावर, त्रायमाणा, गोरखमुण्डी, इन्द्रजव, अडूसा, भङ्गरा, देवदार, पाढ़, खैर, रक्तचन्दन, निशोथ, वरनाकी छाल चिरायता, बावची, अमलतास, शाखोटक, बकायनकी छाल; करञ्ज, अतीस, खस, इन्द्रायनकी जड़, धमासा, अनन्तमूल और पित्तपापड़ा सब समभाग ले, जौकुट करके रख ले।

मात्रा—इसमेंसे १ तोला लेकर उसको १६ तोले जलमें पकावे। जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पिलावे। ऐसा सबेर-शाम दिनमें दो बार देवे।

उपयोग—सब प्रकारके कुष्ठरोग, वातरक्त, मेद बढ़ना और श्लीपद इन रोगोंमें अकेला या गन्धक रसायन अथवा माणिक्यरसके अनुपान रूपमें इसका प्रयोग करे। मेदोवृद्धिमें योगराज गूगलके अनुपानरूपमें इसका प्रयोग करे।

७—तुवरकतैलयोग।

वृक्षास्तुवरका ये स्युः पश्चिमार्णवभूमिषु।
तेषां फलानि गृह्णीयात् सुपक्वान्यम्बुदागमे॥
मज्जां तेभ्योऽपि संहृत्य शोषयित्वा विचूर्ण्य च।
तिलवत् पीड़येद्द्रोण्यां स्रावयेद्वा कुसुम्भवत्॥
तत्तैलं संहृतं भूयः पचेदातोयसंक्षयात्।
तदेव खदिरक्वाथे त्रिगुणे साधु साधितम्॥
करीषे निहितं पक्षात् पिबेन्मात्रां यथाबलम्।
तेनाभ्यक्तशरीरश्च षण्मासं पथ्यभुग्भवेत्॥
शालीन् सयवगोधूमान् फलानि मधुराणि च।
लवणं कटुकं चाम्लं त्यक्त्वा सेवेत बुद्धिमान्॥
मासषट्कप्रयोगेण महाकुष्ठैर्विमुच्यते।

द्रव्य और निर्माणविधि—

भारतवर्षके पश्चिम समुद्रके तटपर कोंकणसे त्रावणकोर तक तुवरकके वृक्ष होते हैं। इसके फलको मराठीमें कडूकवीठ कहते हैं। वर्षाऋतुके आरम्भमें जब इस वृक्षके फल पककर तैयार हो जायँ तब ला, तोड़कर उसके अन्दरका मगज निकाल, सुखाकर कोलूमें पीलकर तैल निकाल ले अथवा मगजका चूर्ण करके उसको जलके साथ पकावे और जब तैल जलके ऊपर आवे तब उसको युक्तिसे लेकर मंदी आँचपर इतना पकावे कि जल सब जलकर केवल तैल बाकी रहे। फिर उसको कपड़ेसे छानकर रख ले। किसी भी प्रकारसे निकाले हुए तैलको तीनगुने खैरके वृक्षके बुरादे या छालके क्वाथमें पकावे। जब तैल सिद्ध हो जाय तब छान, शीशीमें भरकर १५ दिन शीशीको कंडोंके चूर्णमें रख छोड़े। बाद उसमेंसे निकालकर काममें ले।

मात्रा और उपयोगविधि—सवेरे-शाम दिनमें दो बार यह तैल पाँच बूंदकी मात्रासे आरम्भ करके और प्रति चौथे दिन पांच बूंदकी मात्रा बढ़ाकर १ तोलेतक गायके ताजे मक्खन या दूधकी मलाईमें मिलाकर देवे। रोगी जितनी मात्रा सहन कर सके उतनी बढ़ावे। जब मात्रा सहन नहीं होती तब जी मिचलाने लगता है और वमन भी हो जाता है। जब ऐसा होने लगे तब तैलकी मात्रा घटाकर देवे। इसी तैलका रोगीको स्नान करानेके पीछे अभ्यंग भी करावे। अधिकसे अधिक जितनी मात्रा रोगी सहन कर सके उतनी मात्रा ६ मासतक या बिल्कुल रोगमुक्त हो तबतक देता रहे।

पथ्य—यदि रोगी केवल दूध और मोसम्बी, मीठा नीबू, मीठा अनार, सेव, केला, मीठा अंगूर आदि मीठे फल इतनेपर रहकर इसका प्रयोग करे तो शीघ्र और विशेष लाभ होता है। यदि इस पथ्यपर न रह सके तो पुराने चावलका भात और जौ या गेहूंकी रोटी थोड़ा घी लगाकर दूधके साथ खिलावे। अम्ल, लवण और कटु रसवाले पदार्थ खाना अपथ्य है।

उपयोग—सब प्रकारके महाकुष्ठोंमें इसके खाने और लगानेसे बड़ा लाभ होता है। इस तैलमें कपड़ा भिगोकर उसको व्रणपर रखकर बांधनेसे व्रण शीघ्र भरता है। पामा—कण्डू आदिमें इसके लगानेसे लाभ होता है।

८—बाकुचीयोग।

प्रयोग विधि—

श्वित्रवालेको बावचीके बीज पहिले दिन पांच दानेसे आरम्भ करके और प्रति दिन १-१ दाना बढ़ाकर सवेरमें ठंढे जलसे निगलावे। इस प्रकार २१ दानेतक बढ़ाकर फिर १-१ दाना घटाकर पांचतक लावे। इस प्रकार यह वर्धमानबाकुचीका प्रयोग जबतक रोग अच्छा न हो तबतक कई बार करे। साथमें खालिस बावचीका तेल या उसके बराबर तुवरक तेल मिलाकर श्वित्रपर लगावे। इस प्रकार खाने और लगानेमें बावचीका प्रयोग करनेसे श्वित्रमें बड़ा लाभ होता है।

पथ्य—रोगीको अम्ल, लवण और कटुरसवाले पदार्थ छोड़कर चावल, जौ या गेहूंकी रोटी, बिना खटाई—नमक और गरम मसाले डाला हुआ मूंगका यूष और मीठे फल इतने पथ्यपर रखकर इसका प्रयोग करे। तुवरक तैल २ भाग, बावचीका तैल १ भाग और चन्दनका तैल १ भाग इनको मिलाकर कण्डू, पामा और विचर्चिकापर लगानेसे अच्छा लाभ होता है।

९—रसादिप्रलेप।

रसद्विजीरद्विनिशामरीचसिन्दूरदैत्येन्द्रमनःशिलानाम्।
चूर्णीकृतानां घृतमिश्रितानां त्रिभिः प्रलेपैरपयाति पामा॥

वैद्यजीवन।

द्रव्य और निर्माणविधि—

पारा, जीरा, काला जीरा (अरण्यजीरक), हल्दी, आंबाहल्दी, काली मिर्च, सिन्दूर, गन्धक और मैनसिल सब समभाग लेवे। प्रथम पारे गन्धककी कज्जली कर, उसमें अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण तथा घी मिला, ३ दिन खरलमें मर्दन करके रख छोड़े। इस योगमें चकवड़ (पवाड़) के बीज १ भाग मिला देनेसे विशेष लाभ होता है।

उपयोग—कण्डू, पामा, दाद और विचर्चिकामें रोगस्थानको गरम जलसे धोकर लगावे।

१०—गुलाबी मरहम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

सौ बार पानीसे धोया हुआ घी १० तोला, पुष्पाञ्जन (सफेदा-जिंक आक्साइड) १ तोला, सिन्दूर १ तोला, रसकपूर आधा तोला, कपूर १ तोला, चन्दनका तेल १ तोला—सबको एकत्र घोट, मिलाकर कांचके बरतनमें भर ले।

उपयोग—खाज, पामा, अग्निदग्धस्थान और बवासीरपर इसको लगानेसे वेदना, जलन और रोगकी शान्ति होती है ।

११—जीवन्त्यादि मरहम ।

जीवन्ती मञ्जिष्ठा दार्वी कम्पिल्लकः पयस्तुत्थम् ।
एष घृततैलपाकः सिद्धः सिद्धे च सर्जरसः ॥
देयः समधूच्छिष्टो विपादिका तेन शाम्यतेऽभ्यक्ता ।

च० चि० अ० ७ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जीवन्ती (गुजराती—दोडीका शाक) के मूल, मजीठ, दारुहल्दी और कमीला प्रत्येकका कपड़छान चूर्ण ४-४ तोला और नीला थोथाका सूक्ष्म चूर्ण १ तोला इनको जलमें पीसकर कल्क करे । पीछे उसमें तिलका तेल ३२ तोला, गायका घी ३२ तोला, गायका दूध ६४ तोला और पानी २५६ तोला मिलाकर स्नेहपाकविधिसे पकावे । जब स्नेह सिद्ध हो जाय तब उसको कपड़ेसे छान, थोड़ा गरम कर उसमें रालका चूर्ण ८ तोला और मोम ८ तोला मिला, कपड़ेसे छानकर कांचके बरतनमें भर ले अथवा इसको एक सौ बार पानीसे धोकर कांचके या चीनी मिट्टीके पात्रमें भरकर और ऊपर चार अँगुलतक ठंढा जल डालकर रख छोड़े । ४-४ दिनसे ऊपरका जल बदलता रहे ।

उपयोग—बिना धोये हुये इस मलहमको हाथ-पांवके तलोंके फटने और पांवकी अंगुलियोंके बीचके हिस्सेके पकने पर लगावे । धोये हुए मलहमको अग्निदग्धस्थान, कण्डू, पामा और बवासीरके मस्सोंपर लगावे ।

व्रणाधिकार २२ ।

१—दशाङ्गलेपका उपनाह—पुलटिस ।

द्रव्य, निर्माणविधि और उपयोग—

शोथाधिकारमें लिखा हुआ दशाङ्गलेप १ तोला, घी १ तोला, शहद १ तोला तथा गेहूंका आटा या कूटी हुई अलसी ५-१० तोला आवश्यकतानुसार ले उसमें जल मिला, मन्द आंचपर पका, कपड़ेके ऊपर बिछा , ऊपर दूसरा कपड़ा रखकर व्रणशोथके

स्थानपर बाँध दे। ३-३ घंटेसे पुलटिस बदलता रहे। यदि प्रारम्भमें ही इसका प्रयोग किया जाय तो शोथ प्रायः बैठ जाता है। यदि पकना आरम्भ हो गया हो तो जल्दी पककर फूट जाता है। फूटनेपर भी २-३ दिन जबतक कि सब पूय (मवाद) निकल न जाय तबतक इसका प्रयोग करता रहे। मवाद निकल जानेके बाद काले मलहमकी पट्टी लगाना चाहिये।

२—निम्बपत्रादि उपनाह—पुलटिस।

द्रव्य, निर्माणविधि और उपयोग--

नीमकी ताजी पत्ती, हल्दी, घी, शहद, तिल और जौका आटा इनको यथावश्यक ले, जलमें पीस, मन्दी आँचपर पका, कपड़ेपर बिछा, ऊपरसे दूसरा कपड़ा रखकर व्रणशोथपर बाँध दे। ३-३ घंटेसे बदलकर दूसरी पुलटिस बाँधे। इससे पाक प्रारम्भ न हुआ हो तो शोथ बैठ जाता है और पाक आरम्भ हुआ हो तो जल्दी पककर फूट जाता है।

३—चन्दनादि लेप।

द्रव्य और निर्माणविधि—

श्वेतचन्दन, रक्तचन्दन, गेरू, खस, गिले अरमनी, कपूरकाचरी, हंसराज और गेहूंला * प्रत्येक समभाग ले, उसका कपड़छान चूर्ण करके रख ले।

उपयोग—पित्त और रक्तदुष्टिप्रधान व्रणशोथ, विसर्प और फोड़े-फुन्सीपर इसको गुलाबजलमें पीसकर लगावे।

४—काला मलहम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

एक सेर शुद्ध तिलका तेल लेकर उसे एक बड़ी कढ़ाईमें गरम करे। तेल धुआँ छोड़ने लगे तब उसमें आध सेर उत्तम सिन्दूर डालकर लोहेके कछेसे हिलाता रहे। हिलाते हुए बड़ी सावधानी रखनी चाहिये। एक ओर मिश्रणके छींटे उड़ते हैं, उनसे बचनेकी आवश्यकता होती है; दूसरी ओर मलहममें उफान आता है, उसे न सँभाला जाय तो वह चूल्हेमें जा गिरता है और उसके जलनेसे बड़ा भभका होता है। जब

* यह एक प्रकारके सुगन्धी बीज—दाने हैं, जो बम्बईके बाजारमें इसी नामसे बिकते हैं। गुजरात और महाराष्ट्रके वैद्य इसको प्रियंगु मानते हैं।

मिश्रणका रङ्ग काला हो जाय तब कर्छे द्वारा मिश्रणकी दो-चार बूंदें जलभरे कटोरेमें डाले, और देखे कि गोली बनती है या नहीं। मलहम कच्चा होगा तो पानीमें उसके कण अलग-अलग रहेंगे; उसकी गोली न बन सकेगी। वह पट्टीके कामका न होनेसे उसे और पकाना होगा, जबतक कि गोली बनने योग्य हो जाय। मलहमकी बूंदें यदि पानीमें डूब जायँ तो समझे कि पाक अधिक (खरपाक) हो गया है। यह मलहम भी कामका न होगा। मलहम पानीमें डालनेसे डूबे नहीं और गोली बनाने योग्य हो जाय तो इसे उतारकर उसमें १ तोला कपूर और आधा तोला खूब महीन पीसा हुआ नीलाथोथा मिलाकर कुछ गरम रहनेपर डब्बेमें भरकर रख ले।

उपयोग—सब प्रकारके व्रणोंमें इस मलहमकी मोटे कपड़ेपर पट्टी बनाकर लगानेसे मवाद निकल जाता है और व्रण भर आता है। यह मलहम उत्तम व्रणशोधन और व्रणरोपण है।

(वैद्य तिलकचन्द ताराचन्दकृत आयुर्वेदनिबन्धमाला प्रथम भागसे किञ्चित्परिवर्तित)

५—बिरौजेका लाल मलहम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्धाबिरौजा ४० तोला और हिंगुल १ तोला लेवे। प्रथम गन्धेबिरौजेको मन्दाग्निपर रखकर पिघलावे। बीच-बीचमें उसके एक-दो बूंद चमच या चाकूसे जलभरे पात्रमें डाल दो अंगुलियोंसे दबाकर देखता रहे कि मलहम बनाने योग्य हुआ या नहीं। मलहम बनाने योग्य हो जाय तब कपड़ेसे छान, उसमें सूक्ष्म पीसा हुआ हिंगुल थोड़ा-थाड़ा करके डालते जायँ, और तबतक हिलाते रहें, जबतक मलहम ठंढा न हो जाय। यदि इस प्रकार हिलाया न जायगा तो भारी होनेसे हिंगुल नीचे बैठ जायगा।

उपयोग—यह मलहम शोधन (व्रणोंको शुद्ध करने वाला), रोपण (व्रणोंको भरनेवाला), वेदनाहर और प्लीहाकी वृद्धिको दूर करनेवाला है। पार्श्वशूल (प्लुरिसी) या अन्य स्थानोंके दर्दोंमें इसके लगानेसे लाभ होता है। इसके प्रयोगके लिये व्रण, प्लीहा या जहां शूल हो उस स्थानके बराबर मोटे कपड़ेकी पट्टी काट, एक चाकू गरम कर, उसपर मलहम लेकर पट्टीपर फैलाते जाय। पट्टी तैयार होनेपर उसे जहां लगाना हो, वहां लगा दे। लगानेके पूर्व उस्तरेसे बाल उतार लेना

चाहिये, अन्यथा पट्टी निकालते समय पट्टीके साथ बाल खिंचेंगे। पट्टी उखाड़ते हुए बाल खिचें तो कुछ बूँद तारपीनके तेलकी पट्टीकी किनारीको जरा उखाड़कर अन्दर डाले, इससे पट्टी आसानीसे उतर जायगी।

६—बिरौजेका हरा मलहम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्धाबिरौजा ४० तोला, जङ्गाल २ तोला, साबुन २ तोला, पापड़खार ३ तोला और पत्थरका कोयला २ तोला लेवे। प्रथम गन्धेबिरौजेको मन्दी आँचपर पिघला ले। पिघलकर मलहम बनने योग्य हो जानेपर उसे कपड़ेसे छान ले। फिर अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म चूर्ण मिलावे और ठंडा होनेतक हिलाता रहे।

उपयोग—यह मलहम व्रणोंका शोधन करनेवाला, भरनेवाला तथा फोड़ोंको पकाकर फोड़नेवाला (विदारण) है। यदि व्रणशोथ पकजानेपर भी न फूटता हो तो इसकी पट्टी बनाकर लगानेसे जल्दी फूट जाता है।

७—श्वेत मलहम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

१६ तोला तिलका तेल लेकर उसे मन्दी आँचपर रखे। उसमेंसे धुवाँ निकलने लगे तब ४ तोला रालका चूर्ण और ३ माशा सूक्ष्म पीसा हुआ नीलाथोथा उसमें डालकर तेलको नीचे उतार ले। राल तेलमें घुल जानेपर उसे कपड़ेसे छान, एक थालीमें डाल कर ठण्डा होने दे। ठण्डा होनेपर उसमें थोड़ा थोड़ा पानी मिलाता जाय और हाथसे मसलता जाय। थोड़ी थोड़ी देरसे पानी बदलता रहे। मसलते मसलते मिश्रणका रङ्गरूप भैंसके मक्खनकासा हो जाय तब उसे काँचके पात्रमें भर, ऊपरसे थोड़ासा पानी डाल बन्द कर रख दे। पानी थोड़े-थोड़े दिन पीछे बदलता रहे। पानी थोड़े थोड़े दिन पीछे न बदला जायगा तो मलहम काला पड़ जायगा और मलहमपर पपड़ी आ जायगी। परन्तु पानी सर्वथा न डाला जायगा तो वायुमण्डलकी उष्णतासे जैसे-जैसे पानी सूखता जायगा वैसे वैसे मलहम चिकना होता जायगा और प्रयोगमें न आ सकेगा।

उपयोग—बच्चोंकी गुदा और मूत्रेन्द्रियके आस-पासके स्थानके शोथ और पाकमें, तथा अन्यत्र भी फोड़े-फुन्सी, बवासीर, अग्निदग्ध आदिमें इसके लेपसे बहुत लाभ होता है।

(वैद्य तिलकचन्द ताराचन्दकृत आयुर्वेद निबन्धमाला प्रथम भागसे उद्धृत)

मिश्रणका रङ्ग काला हो जाय तब कर्छे द्वारा मिश्रणकी दो-चार बूंदें जलभरे कटोरेमें डाले, और देखे कि गोली बनती है या नहीं। मलहम कच्चा होगा तो पानीमें उसके कण अलग-अलग रहेंगे; उसकी गोली न बन सकेगी। वह पट्टीके कामका न होनेसे उसे और पकाना होगा, जबतक कि गोली बनने योग्य हो जाय। मलहमकी बूंदें यदि पानीमें डूब जायँ तो समझे कि पाक अधिक (खरपाक) हो गया है। यह मलहम भी कामका न होगा। मलहम पानीमें डालनेसे डूबे नहीं और गोली बनाने योग्य हो जाय तो इसे उतारकर उसमें १ तोला कपूर और आधा तोला खूब महीन पीसा हुआ नीलाथोथा मिलाकर कुछ गरम रहनेपर डब्बेमें भरकर रख ले।

उपयोग—सब प्रकारके व्रणोंमें इस मलहमकी मोटे कपड़ेपर पट्टी बनाकर लगानेसे मवाद निकल जाता है और व्रण भर आता है। यह मलहम उत्तम व्रणशोधन और व्रणरोपण है।

(वैद्य तिलकचन्द ताराचन्दकृत आयुर्वेदनिबन्धमाला प्रथम भागसे किञ्चित्परिवर्तित)

५—बिरौजेका लाल मलहम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्धाबिरौजा ४० तोला और हिंगुल १ तोला लेवे। प्रथम गन्धेबिरौजेको मन्दाग्निपर रखकर विघलावे। बीच-बीचमें उसके एक-दो बूंद चमच या चाकूसे जलभरे पात्रमें डाल दो अंगुलियोंसे दबाकर देखता रहे कि मलहम बनाने योग्य हुआ या नहीं। मलहम बनाने योग्य हो जाय तब कपड़ेसे छान, उसमें सूक्ष्म पीसा हुआ हिंगुल थोड़ा-थाड़ा करके डालते जायँ, और तबतक हिलाते रहें, जबतक मलहम ठंढा न हो जाय। यदि इस प्रकार हिलाया न जायगा तो भारी होनेसे हिंगुल नीचे बैठ जायगा।

उपयोग—यह मलहम शोधन (व्रणोंको शुद्ध करने वाला), रोपण (व्रणोंको भरनेवाला), वेदनाहर और प्लीहाकी वृद्धिको दूर करनेवाला है। पार्श्वशूल (प्लुरिसी) या अन्य स्थानोंके दर्दोंमें इसके लगानेसे लाभ होता है। इसके प्रयोगके लिये व्रण, प्लीहा या जहाँ शूल हो उस स्थानके बराबर मोटे कपड़ेकी पट्टी काट, एक चाकू गरम कर, उसपर मलहम लेकर पट्टीपर फैलाते जाय। पट्टी तैयार होनेपर उसे जहाँ लगाना हो, वहाँ लगा दे। लगानेके पूर्व उस्तरेसे बाल उतार लेना

चाहिये, अन्यथा पट्टी निकालते समय पट्टीके साथ बाल खिंचेंगे। पट्टी उखाड़ते हुए बाल खिचें तो कुछ बूँद तारपीनके तेलकी पट्टीकी किनारीको जरा उखाड़कर अन्दर डाले, इससे पट्टी आसानीसे उतर जायगी।

६—बिरौजेका हरा मलहम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्धाबिरौजा ४० तोला, जङ्गाल २ तोला, साबुन २ तोला, पापड़खार ३ तोला और पत्थरका कोयला २ तोला लेवे। प्रथम गन्धेबिरौजेको मन्दी आँचपर पिघला ले। पिघलकर मलहम बनने योग्य हो जानेपर उसे कपड़ेसे छान ले। फिर अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म चूर्ण मिलावे और ठंढा होनेतक हिलाता रहे।

उपयोग—यह मलहम व्रणोंका शोधन करनेवाला, भरनेवाला तथा फोड़ोंको पकाकर फोड़नेवाला (विदारण) है। यदि व्रणशोथ पकजानेपर भी न फूटता हो तो इसकी पट्टी बनाकर लगानेसे जल्दी फूट जाता है।

७—श्वेत मलहम।

द्रव्य और निर्माणविधि—

१६ तोला तिलका तेल लेकर उसे मन्दी आँचपर रखे। उसमेंसे धुवाँ निकलने लगे तब ४ तोला रालका चूर्ण और ३ माशा सूक्ष्म पीसा हुआ नीलाथोथा उसमें डालकर तेलको नीचे उतार ले। राल तेलमें घुल जानेपर उसे कपड़ेसे छान, एक थालीमें डाल कर ठण्ढा होने दे। ठण्ढा होनेपर उसमें थोड़ा थोड़ा पानी मिलाता जाय और हाथसे मसलता जाय। थोड़ी थोड़ी देरसे पानी बदलता रहे। मसलते मसलते मिश्रणका रङ्गरूप भैंसके मक्खनकासा हो जाय तब उसे काँचके पात्रमें भर, ऊपरसे थोड़ासा पानी डाल बन्द कर रख दे। पानी थोड़े-थोड़े दिन पीछे बदलता रहे। पानी थोड़े थोड़े दिन पीछे न बदला जायगा तो मलहम काला पड़ जायगा और मलहमपर पपड़ी आ जायगी। परन्तु पानी सर्वथा न डाला जायगा तो वायुमण्डलकी उष्णतासे जैसे-जैसे पानी सूखता जायगा वैसे वैसे मलहम चिकना होता जायगा और प्रयोगमें न आ सकेगा।

उपयोग—बच्चोंकी गुदा और मूत्रेन्द्रियके आस-पासके स्थानके शोथ और पाकमें, तथा अन्यत्र भी फोड़े-फुन्सी, बवासीर, अग्निदग्ध आदिमें इसके लेपसे बहुत लाभ होता है।

(वैद्य तिलकचन्द ताराचन्दकृत आयुर्वेद निबन्धमाला प्रथम भागसे उद्धृत)

८—उदुम्बरसार ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छी हरी और पुष्ट गूलरकी पत्ती ला, उसको साफ कर और जलसे धोकर १० सेर वजन करके लेवे । पीछे उसको धोकर साफ किये हुए ऊखलमें लकड़ीके मूसल से या लोहेके इमामदस्तेसे कूट कर मिट्टीके या अच्छे कलईदार बरतनमें १ मन पानी डालकर मन्दी आँचपर पकावे । जब चौथाई जल बाकी रह जाय तब अच्छे कपड़ेसे दो बार छान, उसमें ५ तोला शुद्ध सुहागा मिला कर मन्दी आँचपर पकावे और लकड़ीके करछेसे हिलाता रहे । जब करछेमें लगने लगे तब नीचे उतार, कलई-दार थालीमें फैला, ऊपर पतला कपड़ा बाँधकर धूपमें सुखा ले । जब घन जैसा हो जाय तब काँचकी बरनीमें भरकर रख दे ।

गुण और उपयोग—उदुम्बरसार उत्तम व्रणशोथको बैठानेवाला (शोथविम्ला-पन), व्रणशोधन, व्रणरोपण और रक्तस्रावको बन्द करनेवाला है । व्रणशोथकी प्रारम्भावस्थामें उदुम्बरसारको चौगुने जलमें मिला, उसमें कपड़ा भिगोकर व्रणशोथके ऊपर रख देना और बीच बीचमें ऊपर उदुम्बरसारका जल गेरकर उसको तर रखना, सूखने न देना । इससे प्रायः शोथ बैठ जाता है और पीड़ा कम हो जाती है । स्त्रियोंको स्तनपर जो शोथ होता है, उसपर इसका प्रयोग बहुत लाभ करता है, उबलते हुए जलमें उदुम्बरसार गेरके उससे व्रणको धोनेसे व्रण शीघ्र शुद्ध होकर भरता है । मुखपाकमें इसके कुल्ले करानेसे अच्छा लाभ होता है । स्त्रियोंको प्रदरमें तथा योनिमार्गके क्षतमें इसकी उत्तरबस्ति देनी चाहिये । नेत्राभिष्यन्दमें उदुम्बरसारको नेत्रके बाहर लगानेसे तथा उसके द्रवके बूंद नेत्रमें डालनेसे अभिष्यन्द शीघ्र अच्छा होता है । रक्तार्श, रक्तप्रदर आदिमें इसकी ३-६ माशेकी मात्रा अठगुने जलमें मिला-कर दिनमें ३-४ बार पीनेको देना चाहिये ।

९—मधूच्छिष्टादि घृत ।

मधूच्छिष्टं समधुकं रोध्रं सर्जरसं तथा ।
मञ्जिष्ठां चन्दनं मूर्वां पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत् ॥
सर्वेषामग्निदग्धानामेतद्रोपणमुत्तमम् ।

सुश्रुत सू० अ० १२ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मोम, मुलेठी, लोध, राल, मजीठ, श्वेतचन्दन और मूर्वा प्रत्येक ४-४ तोला और गौका घी ६४ तोला लेवे । प्रथम मुलेठी, लोध, मजीठ, चन्दन, राल और मूर्वा इनका कपड़छान चूर्ण कर, जलमें पीसकर पीछे उसमें मोम और घी मिलाकर घृतपाक-विधिसे पकावे । घृत तैयार होनेपर कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले ।

उपयोग—सब प्रकारके अग्निसे जले हुए स्थानपर इसको लगावे ।

वृद्धिरोगाधिकार २३ ।

१—वृद्धिहरीवटिका ।

द्रव्य और निर्माणविधि

कुन्दरुगोंद ४ तोला, करंजुवे (कंजे-कण्टकी करञ्ज) के फलको सेंक फोड़कर निकाला हुआ मग्ज ४ तोला, इन्द्रजव २ तोला, घीमें सेंकी हुई हींग १ तोला, डीकामाली (नाडीहिंगु) १ तोला, बायबिडंग २ तोला, छिलका निकाला हुआ लहसुन २ तोला, इन्द्रायनकी जड़ २ तोला, अजमोदा २ तोला, रूमी मस्तकी २ तोला, सौंचर (काला नमक) ४ तोला ले, सबका कपड़छान चूर्ण कर, ग्वारपाठेके रसमें एक दिन पीस, ५-५ रत्तीकी गोलियाँ बना, सुखाकर शीशीमें भर दे ।

मात्रा और अनुपान—२-२ गोली दिनमें २-३ बार ठंढे जलके अनुपानसे देवे ।

उपयोग—वात तथा कफज वृद्धिरोग, कृमिविकार और पेटके दर्दमें इन गोलियोंसे अच्छा लाभ होता है ।

२—वृद्धिहरलेप ।

द्रव्य और उपयोगविधि—

शार्ङ्गधरोक्त दशांगलेप १ से २ तोला और उदुम्बरसार ३ से ६ माशा ले दोनोंको संभालूकी पत्तीके स्वरसमें पीसकर अण्डवृद्धिपर लेप करे ।

उपयोग—इस लेपसे शोथ और पीड़ा दोनों शांत होते हैं ।

वक्तव्य—वृद्धिरोगमें दस्त और पेशाब साफ लानेवाले और वायुका अनुलोमन करनेवाले औषध और आहारका उपयोग करना चाहिये ।

लिनिमेन्ट आर्चा।

अर्चेका कपड़छान चूर्ण १० तोला ले, उसको काँचकी शीशीमें डाल, ऊपरसे ६० तोला मेथिलेटेड स्पिरिट गेर, हिला, शीशीको डाट लगाकर बन्द कर दे। प्रतिदिन शीशीको १-२ बार हिलाता रहे। आठवें दिन कपड़ेसे छान, उसमें ५ तोला शिलाजीत मिला, अच्छी तरह हिला, कपड़ेसे छान, शीशीमें भर अच्छी डाट लगा, शीशीका मुंह बन्द करके रख दे।

उपयोग—कहीं भी चोट लगनेपर, चाकू आदिसे कहीं सद्यो व्रण होनेपर, वात-कफ-प्रधान शोथपर और नये निकले हुए फोड़े फुन्सीपर इसमें रूई भिगोकर लगा दे। यह लिनिमेन्ट आयोडीनसे भी अच्छा काम देता है।

वक्तव्य—आर्चाके रेवन्दचीनी जैसे मूल जोशीमठ, पीपलकोठी, बदरीनाथ आदि स्थानोंमें पन्सारीके यहां बिकते हैं, नीचे लिखे हुए पतेसे भी मंगा सकते हैं।

ज्वालादत्त, ईश्वरीदत्त पांडे, पो० बागेश्वर, जि० अल्मोड़ा।

गण्डमालाधिकार २४।

१—काञ्चनारगुग्गुलु।

काञ्चनारत्वचो ग्राह्यं पलानां दशकं बुधैः।
त्रिफला षट्पला कार्या त्रिकटु स्यात् पलत्रयम्॥
पलैकं वरुणं कुर्यादेलात्वक्पत्रकं तथा।
एकैकं कर्षमात्रं स्यात् सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत्॥
यावच्चूर्णमिदं सर्वं तावन्मात्रस्तु गुग्गुलुः।
संकुट्य सर्वमेकत्र शाणमात्रां वटीं चरेत्॥
प्रदेयश्चानुपानार्थं क्वाथ एषां प्रकल्पितः।
वरुणः काञ्चनारश्च श्रमणी खदिरस्तथा॥
गण्डमालां जयत्युग्रामपचीमर्बुदानि च।
ग्रन्थीन् व्रणांश्च गुल्मांश्च कुष्ठानि च भगन्दरम्॥

शार्ङ्गधर म० खं० अ० ७ से किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कचनारकी छाल ४० तोला, हर्रेका दल ८ तोला, बहेड़ादल ८ तोला, आंवला ८ तोला, सोंठ ४ तोला, कालीमिर्च ४ तोला, छोटी पीपल ४ तोला, वरुनाकी छाल ४ तोला, छोटी इलायची १ तोला, दालचीनी १ तोला और तेजपात १ तोला लेकर सबका कपड़छान चूर्ण करे। पीछे उसके बराबर साफ किया हुआ गूगल ले, उसको पत्थरके खरलमें या लोहेके इमामदस्तेमें कूटे, जब गूगल नरम हो जाय तब उसमें थोड़ा थोड़ा करके सब चूर्ण मिला दे और कूटकर गोली जैसा बने तब १॥-१॥ माशेकी गोलियां बनाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—सवेर शाम २ गोली देकर ऊपरसे कचनारकी छाल, वरुनाकी छाल, गोरखमुंडी और खैरकी छाल या लकड़ीका बुरादा इनका क्वाथ बनाकर देवे। यदि विशेष लाभ न हो तो इसके साथ ⅛ रत्ती सुवर्ण भस्म और ५ रत्ती प्रवालपञ्चामृत मिलाकर देवे। गूगल, गन्धक और रसौत तीनों समभाग ले, जलमें पीसकर उसका गण्डमालापर लेप करे।

अन्ययोग—पञ्चामृतलोहगुग्गुलु और अमृतप्राशघृतका भी गण्डमालामें अच्छा उपयोग होता है।

२—गुग्गुलुपञ्चतिक्तकं घृतम् (पञ्चतिक्तघृतगुग्गुलुः)।

निम्बामृतावृषपटोलनिदिग्धिकानां
मुण्डीनिकावरुणकाञ्चनवल्कलानाम्।
निर्गुण्डिकाब्दचतुरङ्गुलशिग्रुकाणां
भागान् पृथक् त्रिपलिकान् विपचेद्घटेऽपाम्॥
अष्टांशशेषितश्रुतेन सुनिःस्रुतेन
प्रस्थं घृतस्य विपचेत् पिचुभागकल्कैः।
पाठाविडङ्गसुरदारुगजोपकुल्या-
द्विक्षारनागरनिशामिशिचव्यकुष्ठैः॥
तेजोवतीमरिचवत्सकदीप्यकाग्नि-
रोहिण्यरुष्करवचाकणमूलयुक्तैः।
मञ्जिष्ठयाऽतिविषया वरया यवान्या

संशुद्धगुग्गुलुपलैरपि पञ्चसंख्यैः ॥
तत् सेवितं विधुवति प्रबलं समीरं
नाड़ीव्रणार्बुदभगन्दरगण्डमालाः ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

नीमकी छाल, गिलोय, अडूसा, पटोल, छोटी कटेरी, गोरखमुण्डी, वरुनाकी छाल, कचनारकी छाल, संभालूके मूल, नागरमोथा, अमलतासके मूल और सहिंजनेके मूल प्रत्येक १२-१२ तोला ले, उसको दरदरा कूटकर १०२४ तोला जलमें पकावे। जब आठवां हिस्सा जल बाकी रहे तब उसमें २० तोला साफ किया हुआ गूगल, ६४ तोला गायका घी और पाढ़, बायविडंग, देवदार, बड़ी पीपल, सज्जीखार, जवाखार, सोंठ, हल्दी, सौंफ, चाब, कूठ, मालकांगनीके बीज, कालीमिर्च, कुड़ाछाल, अजमोद, चित्रकमूल, कुटकी, भिलावां, बच, पीपलामूल, मजीठ, अतीस, हर्रे, बहेड़ा, आँवला और अजवायन प्रत्येक एक एक तोला ले कपड़छान कूट जलमें पीसकर किया हुआ कल्क मिलाकर घृतपाक विधिसे पकावे। जब घृत तैयार हो जाय तब कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

मात्रा—आधा तोलासे १ तोलातक सवेर-शाम गायके दूधके अनुपानसे देवे।

उपयोग—गण्डमाला, अपची, नाड़ीव्रण, भगन्दर, विद्रधि, वातरक्त, अस्थिक्षय इन रोगोंमें इसके सेवनसे अच्छा लाभ होता है!

—:*:—

उपदंशाधिकार २५।

१—सवीरवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

फिटकरी ४ तोला, कलमी शोरा ४ तोला, नौसादर ४ तोला, कसीस ४ तोला, सेंधा नमक ४ तोला, नीलाथोथा ४ तोला, लोबान ४ तोला और पीला संखिया २ तोला लेकर सबको खरलमें पीसे। पीसनेसे सब गीला हो जायगा, उसको लोहेके तवेमें डाल, अग्निपर सुखा, खरलमें डाल, उसमें पारद ३० तोला मिला सबको ३ दिन मर्दनकर, ७ बार कपड़मिट्टी की हुई आतशी शीशीमें भरकर वालुकायन्त्रमें पकावे।

प्रारम्भमें जबतक शीशोमेंसे जलयुक्त वाष्प निकलती रहे तबतक शीशीका मुंह खुला रखे। जब जलांशरहित श्वेतवर्णका धुआं आने लगे तब शीशीके मुहको मुलतानी या खड़िया मिट्टीकी डाट लगा, ऊपरसे चूना और गुड़ या पानीमें मिलाया हुआ प्लास्टर आफ पेरिस लगा दे। उसके बाद ६ घंटा और आंच देवे। स्वांगशीतल होनेपर शीशीको बाहर निकाल, तोड़कर शीशीके गलेमें लगा हुआ श्वेतवर्णका सवीर (रसकपूर) निकाल ले।

सवीरवटी-निर्माणविधि—शुद्ध सवीर ४ तोला, केशर ४ तोला, लौंगका चूर्ण ४ तोला, श्वेतचन्दनका चूर्ण ४ तोला और कस्तूरी आधा तोला लेवे। प्रथम सवीरको खरलमें खूब महीन पीस, उसमें केशर और कस्तूरी मिलाकर पानके रसमें घोटे, दोनों मिल जानेपर अन्य चूर्ण मिला, पानके रसमें १ दिन मर्दन कर, १-१ रत्तीकी गोलियां बना, छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सवेर-शाम निगलाकर ऊपरसे मिश्री मिलाया हुआ गायका (गरम करके पीने योग्य ठंढा किया हुआ) दूध पिलावे।

पथ्य—इस गोलीके सेवनके समय खटाई, मिर्च, हींग, राई आदि गरम मसाले तथा बैगन, सरसों, मूली, एरण्डखबूंजा इनका शाक न खाना चाहिये।

उपयोग—फिरंगोपदंशके विषसे होनेवाले सर्व प्रकारके रोगोंमें इसके सेवनसे अच्छा लाभ होता है।

ऊर्ध्वजत्रुरोगाधिकार २६।

१—खदिरादि तैल।

गायत्र्या बकुलस्याथ त्वचं शतपलोन्मिताम्।
द्विद्रोणे सलिले पक्त्वा गृह्णीयात् पादशेषितम्॥
तैलस्यार्धाढकं दत्त्वा कल्कैः कर्षमितैः पचेत्।
खदिरत्वग्लवङ्गाभ्यां गैरिकागुरुपद्मकैः॥
मञ्जिष्ठालोध्रमधुकैर्लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः।
त्वग्जातिफलकर्पूरकङ्कोलाकल्लकैस्तथा॥

पतङ्गधातकीपुष्पसूक्ष्मैलानागकेशरैः ।
कट्फलेन च संसिद्धं तैलं मुखरुजं जयेत् ॥
प्रदुष्टमांसं पूयं च शीर्णदन्तं च सौषिरम् ।
श्यावदन्तं दन्तहर्षं विद्रधिं कृमिदन्तकम् ॥
दन्तस्फुटनदौर्गन्ध्यजिह्वाताल्वोष्ठजां रुजम् ।

शार्ङ्गधर म० खं० अ० ९ से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

खैरकी छाल २०० तोला, मौलसिरीकी छाल २०० तोला ले, कूट, २०४८ तोला जलमें डालकर पकावे। जब ५१२ तोला जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान उसमें १२८ तोला तिलका तैल और खैरकी छाल, लौंग, गेरू, अगर, पद्माख, मजीठ, लोध, मुलेठी, लाख, बड़की छाल, नागरमोथा, दालचीनी, जायफल, कबाबचीनी, अकरकरा, पतंग, धायके फूल, छोटी इलायची, नागकेशर और कायफलकी छाल - प्रत्येक १-१ तोला ले, इनका कल्क करके मिलावे। पीछे तैलपाकविधिसे मंदी आंचपर पकावे और खोंचेसे हिलाता रहे। जब तैल सिद्ध हो जाय तब ठंढा होनेपर उसमें एक तोला कपूरका चूर्ण मिला, कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

उपयोग—इस तैलसे मुंहका पकना, मसूड़ोंका पकना और उनमें मवाद (पीप) होना, दांतोंका सड़ना, दाँतोमें छिद्र होना, दांत फटना, दाँतोंमें कीड़े होना, मुँहकी दुर्गन्ध तथा जीभ-तालू और ओंठके रोग ये सब नष्ट होते हैं।

वक्तव्य—शार्ङ्गधरमें यह पाठ इरिमेदादि तैलके नामसे दिया है। उसमें इरिमेदके स्थानमें खैर तथा मौलसिरीकी छाल लेकर बनानेसे यह योग अधिक गुणकारक होता है।

२—भृङ्गराजतैल ।

स्वरसं भृङ्गराजस्य गृह्णीयादाढकोन्मितम् ।
ब्राह्मीरसं प्रस्थमितं तथैवामलकाद्रसम् ॥
तिलतैलं प्रस्थमितं कल्कं तु कुडवोन्मितम् ।
वरा मुस्ता शटी लोध्रं मञ्जिष्ठा बाकुची बला ॥

चन्दनं पद्मकं गोपी मण्डूरं मदयन्तिका ।
प्रियङ्गुर्मधुकं मांसी कुष्ठं चैषां प्रदापयेत् ॥
सम्यक्पक्वं ततो ज्ञात्वा शुभे भाण्डे निधापयेत् ।
कुञ्चिताग्रानतिस्निग्धान् कचान् कुर्याद् बहूंस्तथा ॥
खालित्यमिन्द्रलुप्तं च तैलमेतद् व्यपोहति ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

भंगरेका स्वरस २५६ तोला, ब्राह्मीका स्वरस ६४ तोला, आंवलेका रस ६४ तोला, तिलका तैल ६४ तोला तथा हरड, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, कचूर, लोध, मजीठ, बावची, बरियाराके मूल, चन्दन, पद्माख, अनन्तमूल, मण्डूर (कच्चा लौहकीट), मेहँदी, प्रियंगु, मुलेठी, जटामांसी और कूठ—प्रत्येक १-१ तोला इनका कल्क मिलाकर सबको तैलपाकविधिसे एकत्र पकावे। जब तैल सिद्ध हो जाय तब कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

उपयोग—यह तैल नित्य सिरपर लगानेसे सिरके बाल बढ़ते हैं तथा सिरका दर्द, बाल सफेद होना और गिरना ये रोग अच्छे होते हैं। स्वस्थ स्त्री-पुरुषको नित्य सिरमें लगानेके लिये यह तैल उत्तम है।

३--किंशुकादि तैल।

किंशुकं चन्दनं लाक्षा मञ्जिष्ठा मधुयष्टिका ।
कुसुम्भकमुशीरं च पद्मकं नीलमुत्पलम् ॥
न्यग्रोधपादाः प्लक्षस्य मूलं पद्मस्य केशरम् ।
मदयन्ती निशे द्वे च सारिवा पलिकं पृथक् ॥
जलाढके विपक्तव्यं पादशेषमथोद्धरेत् ।
मञ्जिष्ठा मधुकं लाक्षा पतङ्गं कुङ्कुमं तथा ॥
कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं पचेत् ।
अजाक्षीरं द्विगुणितं दत्त्वा मृद्वग्निना भिषक् ॥
सम्यक् पक्वं परं ह्येतन्मुखवर्णप्रसादनम् ।
नीलिकापिडकाव्यङ्गानभ्यङ्गादेव नाशयेत् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

टेसू (ढाक) के फूल, रक्त चन्दन, लाख, मजीठ, मुलेठी, कुसुम, खस,

पद्माख, नील कमल, बड़की जटा, पाकरके मूल, कमलका केशर, मेहँदी, हल्दी, दारुहल्दी और अनन्तमूल—प्रत्येक ४-४ तोला ले, उन्हें जौकुटकर २५६ तोले जलमें पकावे। जब ६४ तोला जल बाकी रहे तब उसको कपड़ेसे छानकर उसमें तिलका तैल १६ तोला, बकरीका दूध ३२ तोला और मजीठ, मुलेठी, लाख, पतंग तथा केशर प्रत्येकका चूर्ण १-१ तोला ले जलमें पीसकर बनाया हुआ कल्क मिलाकर मन्दी आँचपर पकावे। जब तैल सिद्ध हो जाय तब कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

उपयोग—इस तैलको मुँहपर लगानेसे मुँहपरकी फुन्सियां, काले दाग आदि अच्छे होकर चेहरा रौनकदार होता है।

४—कुम्भीतैल।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जलकुम्भीका कल्क १६ तोला, तिलका तैल ६४ तोला और जलकुम्भीका स्वरस २५६ तोला—सबको तैलपाकविधिसे पकावे। जब तैल सिद्ध हो जाय तब उसको कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

उपयोग—इस तैलको कान साफ करके उसमें डालनेसे कानका दर्द, कान पकना और कानसे मवाद (पीप) आना ये अच्छे होते हैं।

५—नासार्शोहरतैल।

गृहधूमकणादारुक्षारनक्ताह्वसैन्धवैः।
सिद्धं शिखरिबी[illegible] तैलं नासार्शसां हितम्॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

गृहधूम (घरकी छतमें जमा हुआ धुआं), छोटी पीपल, देवदार, जवाखार, करञ्जकी छाल, सेंधानमक और चिचड़े (ओंगे) के बीज प्रत्येकका चूर्ण २-२ तोला ले, उसको जलमें पीस, ६४ तोला तैल और २५६ तोला जलमें मिलाकर तैलपाकविधिसे पकावे। जब तैल सिद्ध हो जाय तब कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

उपयोग—एक बाँसकी सलाईपर रुई लगा, इस तेलमें भिगोकर नाकके भीतर लगानेसे नाकमें होनेवाले मस्से अच्छे होते हैं।

६—षड्बिन्दुतैल।

एरण्डमूलं तगरं शताह्वा जीवन्तिरास्नागुरुसैन्धवं च।
भृङ्गं विडङ्गं मधुयष्टिका च विश्वौषधं कृष्णतिलस्य तैलम्॥

आज्यं पयस्तैलसमं तथैव चतुर्गुणे भृङ्गरसे विपक्वम् ।
षड्बिन्दवो नासिकया प्रदेया निहन्ति शीघ्रं शिरसो विकारान् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

एरंडके मूल, तगर, सौंफ, जीवन्तीके मूल, रास्ना, अगर, सेंधानमक, दालचीनी, वायबिडंग, मुलेठी और सोंठ प्रत्येकका चूर्ण १॥-१॥ तोला ले, उसको बकरीके दूधमें पीस, उसमें काले तिलका तैल ६४ तोला, बकरीका दूध ६४ तोला और भंगरेका रस २५६ तोला मिलाकर मंदी आँचपर तैलपाकविधिसे पकावे। जब तैल सिद्ध हो जाय तब उसको कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

उपयोग—सिरके दर्दमें रोगीको चित लेटाकर दोनों नथुनोंमें इस तैलके ६-६ बिन्दु डाले। पुराना जुकाम, बार-बार सर्दी-जुकाम होना, नाकके मस्से, नाकके अन्दर की सूजन, इन रोगोंमें एक सलाईपर रुई लगा, इस तैलमें भिगोकर नाकके अन्दर लगावे।

७—चित्रकहरीतकी ।

चित्रकस्यामलक्याश्च गुडूच्या दशमूलजम् ।
शतं शतं रसं दत्त्वा पथ्याचूर्णाढकं गुडात् ॥
शतं पचेद्घनीभूते पलद्वादशकं क्षिपेत् ।
व्योषत्रिजातयोः क्षारात् पलार्धमपरेऽहनि ॥
प्रस्थार्धं मधुनो दत्त्वा यथाऽग्न्यद्यादतन्द्रितः ।
पीनसं दुर्जयं हन्ति चिरकालभवं नृणाम् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

चित्रकके मूलका क्वाथ ४०० तोला, आँवलेका स्वरस अथवा क्वाथ ४०० तोला, गिलोयका स्वरस अथवा क्वाथ ४०० तोला, मिले हुए दशमूलका क्वाथ ४०० तोला, बड़ी हर्रके दलका चूर्ण २५६ तोला और गुड़ ४०० तोला, इन सबको एकत्र करके पकावे। जब अवलेह जैसा हो जाय तब उसमें सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, दालचीनी, तेजपात और इलायची प्रत्येक ८-८ तोला और जवाखार २ तोले लेकर, इनका कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिलाकर रख छोड़े, दूसरे दिन उसमें ३२ तोला शहद मिलाकर काँचके बरतनमें भर दे।

मात्रा और अनुपान—सवेर-शाम आधा आधा तोला गायके गरम किये हुए दूधके साथ देवे।

उपयोग—पुराने और बारम्बार होनेवाले प्रतिश्याय (जुकाम) में इसके सेवन करनेसे अच्छा लाभ होता है।

वक्तव्य—इसके सेवनके समय नाकमें दिनमें दो बार षड्बिन्दु तैल लगानेसे विशेष लाभ होता है। इस योगमें चित्रक, दशमूल आदिको १६ गुने जलमें पकाकर चौथाई बाकी रखा हुआ क्वाथ लेना चाहिये। इस योगके प्रक्षेप द्रव्योंमें कायफलकी छालका चूर्ण ८ तोला और मिलानेसे अधिक लाभ होता है।

८—महात्रिफलादि घृत।

त्रिफलाया रसप्रस्थं प्रस्थं भृङ्गरसस्य च।
वृषस्य च रसप्रस्थं शतावर्याश्च तत्समम्॥
अजाक्षीरं गुडूच्याश्च आमलक्या रसं तथा।
प्रस्थं प्रस्थं समाहृत्य सर्वैरेभिर्घृतं पचेत्॥
कल्कः कणा सिता द्राक्षा त्रिफला नीलमुत्पलम्।
मधुकं क्षीरकाकोली मधुपर्णी निदिग्धिका॥
तत् साधुसिद्धं विज्ञाय शुभे भाण्डे निधापयेत्।
नक्तान्ध्ये दृष्टिमान्द्ये च ह्यभिष्यन्देऽधिमन्थके॥
सर्वनेत्रामये योज्यं त्रिफलाद्यं महद्घृतम्।

चक्रदत्तचिकित्सा।

द्रव्य और निर्माणविधि—

त्रिफलाका क्वाथ ६४ तोला, भंगरेका रस ६४ तोला, अडूसेका रस ६४ तोला, शतावरका रस ६४ तोला, बकरीका दूध ६४ तोला, गिलोयका स्वरस ६४ तोला, आँवलेका रस ६४ तोला, गायका घी ६४ तोला तथा छोटी पीपल, मिश्री, मुनक्का, हर्रे, बहेड़ा, आँवला, कमल, मुलेठी, क्षीरकाकोली, गिलोय और छोटी कटेरी मिलाकर १६ तोलेका कल्क ले, सबको एकत्र करके घृतपाकविधिसे पकावे। घृत सिद्ध होनेपर छानकर शीशीमें भर ले।

मात्रा—आधा तोलासे १ तोलातक, उतना ही मिश्रीका चूर्ण मिलाकर सवेर-शाम सेवन करावे।

उपयोग—सर्व प्रकारके नेत्ररोगोंमें, विशेषकर रतौंधी, दृष्टिमान्द्य, नेत्रका शूल, अभिष्यन्द और शरीरकी कमजोरी और पोषणकी कमीसे होनेवाले नेत्र-रोगोंमें इसका प्रयोग करे।

९—एलादि मञ्जन।

द्रव्य और निर्माणविधि—

छोटी इलायची, कबाबचीनी (शीतलमिर्च), कत्था और संगजराहत (संगराज) प्रत्येक समभाग ले, कूट, कपड़छान चूर्ण करके रख ले।

उपयोग—यह मञ्जन सवेरे-शाम या आवश्यकतानुसार दिनमें कई बार मुँहके छालोंपर लगाकर जल या जात्यादि कषायसे कुल्ले करावे। इससे मुख-पाकमें अच्छा लाभ होता है।

१०—जात्यादि कषाय।

द्रव्य, निर्माणविधि और उपयोग—

चमेलीकी पत्ती, दाड़िम (अनार) की पत्ती, बबूलकी छाल और बेरकी जड़ प्रत्येक ६-६ मासा ले, जौकुटकर, ६४ तोले जलमें पका, आधा रहनेपर कपड़ेसे छान, उसमें फिटकिरी १० रत्ती और शुद्ध सुहागा १० रत्ती मिलाकर कुल्ला करनेसे मुँह और गलेके पकने और छालेमें अच्छा लाभ होता है।

अन्य योग—मुखपाक, मसूड़े फूलना और मुँह तथा गलेमें छाले पड़ना इन रोगोंमें उदुम्बरसारको जलमें मिलाकर कुल्ला कराना, खदिरादि तैल लगाना या उसको मुँहमें रखकर फिराना; यदि दस्तकी कब्जियत हो तो मञ्जिष्ठादि चूर्ण सोते समय देना और मुखपाक आदि रक्तविकार या पेटकी गरमीसे हो तो सारिवादि हिम पीनेको और शतपत्र्यादि चूर्ण खानेको देना चाहिये।

११—भल्लातकादि मञ्जन।

आढक्या दलमध्यगान् सुमतिमान् भल्लातकान्मृन्मये
पात्रे स्थाप्य विधाय पावकमधः प्रज्वालयेद्युक्तितः।
तन्मस्याऽखिलदन्तघर्षणमिदं कुर्वन्तु लोकाः सदा
योगोऽयं किल दन्तरोगमदभृन्मत्तेभकण्ठीरवः॥

वैद्यामृत।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अरहरकी दाल २ भाग और भिलावे एक भाग ले, एक मिट्टीके घड़ेमें आधी अरहरकी दाल रख, ऊपर भिलावे रखकर, बाकी अरहरकी दाल ऊपरसे भर दे। पीछे घड़ेके मुँहपर मिट्टीका सकोरा रख, ७ कपड़मिट्टी दे, सुखाकर घड़ेको चूल्हेपर रखकर नीचे अग्नि करे। भिलावे जलकर तैलरहित कोयले जैसे हो जायँ, इतना अग्नि देना चाहिये। पीछे उनको पीस, कपड़छान करके शीशीमें भर ले।

उपयोग—इस मसीसे दाँत अच्छे साफ होते हैं।

वक्तव्य—यदि दाँतोंसे पीप आती हो तो इस मसीमें कपूर, बच, कूठ और अकरकरा समभाग लेकर कपड़छान किया हुआ चूर्ण मसीसे आधा मिलाकर इसका प्रयोग करे।

१२—शिरःशूलाद्रिवज्ररस।

पलं रसं पलं गन्धं पलं लौहं पलं त्रिवृत्।
गुग्गुलोः पलचत्वारि तदर्धं त्रिफलारजः॥
यष्टीमधु कणा शुण्ठी गोक्षुरं कृमिनाशनम्।
दशमूलं च प्रत्येकं तोलकं वस्त्रशोधितम्॥
क्काथेन दशमूलस्य तथा भृङ्गाम्बुनाऽपि च।
भावयित्वा प्रकर्तव्या माषैकप्रमिता वटी॥
छागीदुग्धेन सा सेव्या मधुना पयसाऽथवा।
शिरःशूलाद्रिवज्रोऽयं शिरोरोगविनाशनः॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद ४ तोला, शुद्ध गन्धक ४ तोला, लोहभस्म ४ तोला, निशोथ ४ तोला, शुद्ध गूगल १६ तोला, त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा और आँवला मिलाकर) ८ तोला; तथा मुलेठी, छोटी पीपल, सोंठ, गोखरू, बायबिडंग, सरिवन, पिठवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, छोटे गोखरू, बेल, अरणी, सोनापाठा, गंभारी और पाडर प्रत्येक १-१ तोला लेवे। प्रथम पारे-गंधककी कज्जलीकर, उसमें लोह-भस्म तथा अन्य द्रव्योंका कपड़छान चूर्ण मिलावे। पीछे साफ किये हुए गूगलको इमामदस्तेमें डालकर कूटे। जब गूगल नरम हो जाय तब उसमें अन्य द्रव्य मिला, दशमूल और भंगरेके रसकी ३-३ भावना दे, ४-४ रत्तीकी गोलियाँ बना, सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—२ गोली सवेरे-शाम बकरीका दूध, गायका दूध या पथ्यादि क्वाथके अनुपानसे देवे ।

उपयोग—सब प्रकारके सिरके दर्दमें इसका अकेला या १ माशा गोदन्ती-भस्मके साथ मिलाकर प्रयोग करे ।

१३—पथ्यादिक्वाथ ।

पथ्याक्षधात्रीभूनिम्बनिशानिम्बामृतायुतः ।
कृतः क्वाथः षडङ्गोऽयं सगुडः शीर्षशूलहृत् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

हर्रेका दल, बहेड़ादल, आँवला, चिरायता, हल्दी और नीमके वृक्षपर लगी हुई गिलोय प्रत्येक समभाग ले, जौकुट करके रख ले ।

मात्रा—१ तोला क्वाथ १६ तोला जलमें पका, चौथाई जल बाकी रहनेपर कपड़ेसे छान, उसमें आधा तोला गुड़ मिलाकर देवे ।

उपयोग—सब प्रकारके सिरके दर्दमें इसका प्रयोग करे ।

अन्य योग—दशांगलेप जलमें पीस, उसमें ¼ घृत मिलाकर सिरपर लगानेसे सिरकी पीड़ा कम होती है । गोदन्तीभस्म १॥ माशा, मिश्रीका चूर्ण १॥ माशा, इन दोनोंको ३ से ६ माशेतक घीमें मिलाकर देनेसे सिरके दर्दमें अच्छा लाभ होता है ।

स्त्रीरोगाधिकार २७ ।

१—अशोकारिष्ट ।

अशोकस्य तुलामेकां लोध्रस्यार्धतुलां तथा ।
चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा गृह्णीयात् पादशेषितम् ॥
शर्करायास्तुलां दत्त्वा क्षौद्रस्यार्धतुलां तथा ।
धातकीं षोडशपलां द्राक्षायाः पलविंशतिम् ॥
अजाजीं मुस्तकं शुण्ठीं दार्व्युत्पलफलत्रिकम् ।
आम्रास्थि कुङ्कुमं वासां चन्दनं च रसाञ्जनम् ॥

पत्राङ्गं खदिरं बिल्वं शाल्मलीकुसुमं बलाम् ।
भल्लातकं सारिवां च जपाकुसुमकं त्वचम् ॥
पृथ्वीकां देवकुसुमं प्रत्येकं पलसंमितम् ।
सर्वं सुचूर्णितं दत्त्वा स्थापयेन्मासमात्रकम् ॥
हन्त्युग्रं प्रदरं श्वेतं रक्तं चापि सवेदनम् ।
अशोकारिष्टसंज्ञोऽयं सर्वयोनिगदापहः ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

अशोककी छाल ४०० तोला और लोध २०० तोला ले, जौकुट कर, ४०९६ तोला जलमें पकावे। जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, उसमें ४०० तोला चीनी, २०० तोला शहद, जौकुट की हुई मुनक्का ८० तोला, धायके फूल ६४ तोला; और जीरा, नागरमोथा, सोंठ, दारुहल्दी, कमल, हर्रे, बहेड़ा, आँवला, आमकी गुठली, केशर, अडूसा, श्वेतचन्दन, रसौत, पतंग, खैरका बुरादा, बेल, सेमलके फूल या मोचरस, बरियाराके मूल, भिलावा, अनन्तमूल, गुड़हलके फूल, दालचीनी, बड़ी इलायची और लौंग प्रत्येक ४-४ तोलेका कपड़छान चूर्ण मिलाकर सागौनकी लकड़ीके पीपेमें भर दे। एक मासके बाद छानकर फिर उसी पीपेको धोकर उसमें भर दे।

मात्रा और अनुपान—२-४ तोला, उतना ही जल मिलाकर पीनेको दे।

उपयोग—स्त्रियोंके रक्त या श्वेत प्रदरमें अकेला या चन्द्रकला रसके अथवा १ माशा नागकेशरका चूर्ण और १ माशा खूनखराबेका चूर्ण मिलाकर उसके अनुपानरूपमें इसका प्रयोग करे।

२—अश्वगन्धादि योग।

द्रव्य और निर्माणविधि—

असगन्ध और बिधारेका चूर्ण ८-८ भाग, बड़ी इलायचीका चूर्ण २ भाग, कुक्कुटाण्डकपालचूर्ण २ भाग, बंगभस्म १ भाग और मिश्रीका चूर्ण ८ भाग; इन सबको एकत्र मिलाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—४-४ माशा सबेरे-शाम देकर ऊपरसे गायका दूध पिलावे।

उपयोग—श्वेतप्रदरवाली स्त्रीको २ से ६ मासतक या रोग अच्छा होनेतक इस चूर्णका सेवन करावे।

३—बोलादि वटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

हीराबोल (यूनानी—मुरमकी) २ भाग, शुद्ध सुहागा १ भाग, कसीस १ भाग, घीमें सेंकी हुई हींग ½ भाग, एलुवा (मुसब्बर) १ भाग, सबको जटामांसीके क्वाथमें पीसकर २-२ रत्तीकी गोलियां बना ले।

मात्रा और अनुपान—२-२ गोली सवेरे-शाम भोजनके आध घण्टा बाद जलसे देवे।

उपयोग—इसके सेवनसे स्त्रियोंको रजोदर्शन ठीक होता है।

४—रजोदोषहरी वटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मुश्कतरामसी, रेवंदचीनी, तगर, हरमल, सातर, सौंफ, अनीसून, तुख्मकर्फस, अजखर, सौया, हमामा और बाँसकी जड़ प्रत्येक १०-१० तोला, उलटकंबलके मूल ४० तोला ले, सबको जौकुट करके चौगुने जलमें पकावे। जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छानकर मंदी आँचपर पकावे। जब करछेको लगने लगे तब नीचे उतार, धूपमें रखकर सुखावे। जब गोली बनने योग्य हो तब उसमें कूटका चूर्ण २ तोला, जावशीर २ तोला, हीराबोल ३ तोला और जुंदबेदस्तर १ तोला मिला, ४-४ रत्तीकी गोलियाँ बना, छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—नित्य सवेरे-शाम २-२ गोली जलसे देवे। रजोदर्शनके समयमें नीचे लिखे क्वाथके अनुपानसे दे।

क्वाथ—अजखर, मुश्कतरामसी, अनीसून, अबहल, ककड़ीके बीज, गोखरू, बाँसकी जड़ या पत्ती और हंसराज प्रत्येक ६-६ माशा ले २० तोला जलमें पका, ५ तोला बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, १ तोला गुड़ मिलाकर दे।

उपयोग—स्त्रियोंको मासिक साफ न आना और मासिकके समय पेटमें दर्द होना इसमें इसके सेवनसे लाभ होता है।

वक्तव्य—मुश्कतरामसी, सातर, अनीसून, जावशीर, हमामा और जुंदबेदस्तर ये द्रव्य यूनानी दवा बेचनेवाले पन्सारीके यहांसे मिल सकते हैं।

५—न्यग्रोधादिगण ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षयष्टीकपीतनाः ।
ककुभाम्रप्रियालाश्च वेतसो रोहिणी शिवा ॥
तिन्दुकी बदरी लोध्रं जम्बू भल्लातकस्तुणिः ।
कदम्बकस्तथा दार्वी पलाशमधुकावपि ॥
न्यग्रोधादिगणो ह्येष योनिदोषहरः परः ।
एभिः कषायं तैलं च साधयित्वा प्रयोजयेत् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

बड़ (बरगद), गूलर, पीपल, पाकर, मुलेठी, पारिसपीपल, अर्जुन, आम, चिरौंजी, बेत, रोहण, हर्रे, तेंदू, बेर, लोध, जामून, भिलावा, तूण, कदम, दारुहल्दी, ढाक और महुआ इन वृक्षोंकी छाल[1] समभाग ले, उनको जौकुटकरके रख ले। इसमेंसे २ तोला ले, उसको १२८ तोला जलमें पका, आधा जल बाकी रहनेपर कपड़ेसे छान, उसमें ५ रत्ती फिटकिरी और ५ रत्ती सुहागा मिलाकर बस्ति-(एनिमा देनेके) यन्त्रसे योनिमें बस्ति (डूस) दे।

न्यग्रोधादिगणकी छाल २५६ तोला ले उसको चौगुने (१०२४ तोले) जलमें पका, चौथाई बाकी रहनेपर कपड़ेसे छान, उसमें ६४ तोला तिलका तैल और न्यग्रोधादिगणके १६ तोले चूर्णको जलमें पीसकर तैयार किया हुआ कल्क मिलाकर तैलपाकविधिसे पकावे। जब तैल सिद्ध हो जाय तब स्वच्छ कपड़ेसे छान गरम जलसे धोकर साफ की हुई शीशीमें भरकर रख दे। इस तेलमें शोषक रूई भिगोकर योनिमें रखे।

उपयोग—श्वेतप्रदर, योनिमार्गका शोथ और क्षत इनमें न्यग्रोधादिकषायकी बस्ति देने और तैलमें रूई भिगोकर रखनेसे अच्छा लाभ होता है।

६—फलघृत ।

मञ्जिष्ठा मधुकं कुष्ठं त्रिफला शर्करा वचा ।
अजमोदा हरिद्रे द्वे हिङ्गुकं कटुरोहिणी ॥

[1] मुलेठीके मूल, हर्रेका फल और अन्य वृक्षोंकी छाल लेनी चाहिये।

उत्पलं चन्दनं द्राक्षा पद्मकं देवदारु च।
मेदे पयस्या काकोली वाजिगन्धा च पिप्पली॥
जातीपुष्पं तुगाक्षीरी विडङ्गं कमलं बला।
कट्फलं सारिवा मुस्ता गोक्षुरं वृहतीद्वयम्॥
एषामक्षसमैः कल्कैः सर्पिः प्रस्थद्वयं पचेत्।
शतावरीरसं क्षीरं घृताद्दत्त्वा चतुर्गुणम्॥
एतत् फलघृतं नाम गर्भिण्याः परमं हितम्।
या चैवास्थिरगर्भा स्यात् पुत्रं जनयते मृतम्॥
अल्पायुषं वा जनयेद्या च सूत्वा पुनः स्थिता।
सा सुताञ्जनयेन्नारी मेधाढ्यान् प्रियदर्शनान्॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

मजीठ, मुलेठी, कूठ, हर्रे, बहेड़ा, आँवला, चीनी, बच, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, घीमें सेंकी हुई हींग, कुटकी, नीलोफर, चन्दन, मुनक्का, पद्माख, देवदार, मेदा, महामेदा, विदारीकन्द, काकोली, असगन्ध, छोटी पीपल, चमेलीके फूल, बंशलोचन, बायबिडंग, कमल, बरियाराके मूल, कायफल, अनन्तमूल, नागरमोथा, गोखरू, छोटी कटेरी और बड़ी कटेरी प्रत्येक १-१ तोला ले कूट: कपड़छान बना, जलमें पीसकर इनका कल्क करे। फिर उस कल्कमें गायका घी १२८ तोला, शतावरका रस २४८ तोला और गायका दूध २४८ तोला मिलाकर घृतपाकविधिसे पकावे। जब घृत तैयार हो जाय तब कपड़ेसे छानकर काँचके बरतनमें भरकर रख दे।

मात्रा और अनुपान—आधा तोलासे १ तोलातक उतना ही मिश्रीका चूर्ण मिलाकर दे और ऊपरसे दूध पिलावे।

उपयोग—जिस स्त्रीको बारम्बार गर्भपात होता हो, मरे हुए या अल्पायु बालक होते हों और एक बालक होकर फिर गर्भ न रहता हो, ऐसी स्त्रीको इस घृतका सेवन करानेसे बुद्धिमान् और स्वरूपवान् बालक होता है।

—:०:—

बालरोगाधिकार २८।

१—बालचातुर्भद्रचूर्ण ।

घनकृष्णारुणाशृङ्गीचूर्णं क्षौद्रेण संयुतम् ।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नं कासश्वासवमीहरम् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

नागरमोथा, छोटी पीपल, अतीस और काकड़ासिगी प्रत्येक समभाग ले, कपड़छान चूर्ण करके शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—२-८ रत्तीतक चूर्ण शहदमें मिलाकर दिनमें ३-४ बार यथावश्यक दे।

उपयोग—बालकोंके ज्वर, अतिसार, खाँसी और वमनमें इसका प्रयोग करे।

२—बालार्करस ।

रसकं च प्रवालं च शृङ्गभस्म च हिङ्गुलम् ।
गोरोचना च कर्चूरं केशरं च समांशकम् ॥
ब्राह्मीरसेन संमर्द्य कुर्याद्गुञ्जामितां वटीम् ।
वातश्लेष्मातिसारघ्नः कृमिकासज्वरापहः ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध खपरिया अथवा यशदकी भस्म, प्रवालपिष्टी, हरिण या सांभरके सींगकी भस्म, शुद्ध हिंगुल, गोरोचन, कचूरेका चूर्ण और केशर सम भाग ले ब्राह्मीके स्वरसमें एक दिन मर्दनकर, १-१ रत्तीकी गोलियाँ बना, छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली दिनमें २-३ बार शहद या जलमें मिलाकर दे।

उपयोग - बालकोंके बात और कफके विकार, अतिसार, कृमिविकार, ज्वर, बमन, अतिसार और आक्षेपकमें इसका प्रयोग करे।

३—बालवटी ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

जीरा, छायामें सुखाया हुआ पोदीना, बड़ी हर्रेका दल, वायबिडंग, लौंग, अतीस, सौंफ, जायफल, भांग, रूमीमस्तकी, कछुऐके पीठकी भस्म, कोयलके बीज, जहरमो-

हराकी पिष्टी और केशर समभाग ले कपड़छान चूर्ण कर, ग्वारपाठेके रसमें पीस, १-१ रत्तीकी गोलियाँ बना, छायामें सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सवेरे शाम दूधमें मिलाकर पिलावे।

उपयोग—इस गोलीका सेवन करानेसे बालकोंको दूध ठीक पचता है, नींद अच्छी आती है और सर्दी, अतिसार, वमन तथा खाँसी अच्छे होते हैं।

४—सुधाषट्क योग।

द्रव्य और निर्माणविधि—

प्रवाल भस्म १ भाग, सीपकी भस्म २ भाग, शंख भस्म ३ भाग, कौड़ीकी भस्म ४ भाग, कछुएकी पीठकी भस्म ५ भाग और गोदन्ती भस्म ६ भाग ले, सबको नीबूके रसकी ३ भावनायें दे, सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—२ से ८ रत्ती दूधके साथ सवेरे-शाम दे।

उपयोग—बालशोष (सूखा) में इसके प्रयोगसे अच्छा लाभ होता है। शरीरमें सुधांश (चूने) की कमीसे जो रोग होते हैं, उनमें इसका प्रयोग करना चाहिये।

५—बालपञ्च भद्र।

औषध और निर्माणविधि—

यशदभस्म ॥ तोला, रससिन्दूर १ तोला, गोरोचन १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला और गोदंतीभस्म या कुक्कुटांडकपाल चूर्ण ८ तोला ले, सबको १ दिन खरलमें मर्दन करके शीशीमें भर लेवे।

मात्रा और अनुपान—२-४ रत्ती शहदमें मिलाकर चटावे और ऊपर गायका दूध देवे।

उपयोग—बालकोंके पाण्डुरोग, जीर्ण ज्वर और बालशोषमें दिनमें ३-४ बार इसका प्रयोग करे।

६—कुमारकल्याण घृत।

शङ्खपुष्पी वचा ब्राह्मी कुष्ठं त्रिफलया सह।
द्राक्षा सशर्करा शुण्ठी जीवन्ती जीवको बला॥
शटी दुरालाभा बिल्वं दाड़िमं सुरसा स्थिरा।
मुस्तं पुष्करमूलं च सूक्ष्मैला पिप्पली जलम्॥

श्वदंष्ट्राऽतिविषा पाठा विडङ्गं दारु मालती ।
मधूकपुष्पं खर्जूरं बदरं वंशरोचना ॥
कल्कैरेषां समांसानां घृतं क्षीरे चतुर्गुणे
कषाये कण्टकार्याश्च साधयेत् सौम्यदैवते ॥
एतत् कुमारकल्याणं घृतरत्नं सुखप्रदम् ।
बलवर्णकरं धन्यं पुष्ट्यग्निरुचिकारकम् ॥
सर्वबालामयघ्नं च मेध्यमायुष्यमुत्तमम् ।
रसायनमिदं सेव्यं विशेषाद्दन्तजन्मनि ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शंखाहुली, बच, ब्राह्मी, कूट, हरड़, बहेड़ा, आँवला, मुनक्का, मिश्री, सोंठ, जीवन्ती, जीवक, बरियारा, कचूर, धमासा, बेल, अनार, तुलसी, सरिवन, नागरमोथा, पुष्करमूल, छोटी इलायची, छोटी पीपल, खस, गोखरू, अतीस, पाढ़, बायबिडंग, देवदार, मालतीके फूल, महुआके फूल, पिंड खजूर, मीठे बेर और बंशलोचन-सब सम भाग ले, कूट, कपड़छान कर, जलमें पीस, उसमें चौगुना गायका घी और गायका दूध तथा छोटी कटेरीका क्वाथ घीसे चौगुना मिलाकर घृतपाकविधिसे पकावे। जब घृत तैयार हो जाय तब उसको कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—३ से ६ माशा, गरम दूधमें मिलाकर पिलावे।

उपयोग—इस घृतके सेवमसे बल, वर्ण, रुचि, जठराग्नि, मेधा और आयुष्य बढ़ता है। दाँत आनेके समयमें बालकोंको इसके सेवन करानेसे बिमा उपद्रवके दाँत निकल आते हैं।

७—मुक्तादिवटी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

मोती २ भाग, सोनेके वरक ॥ भाग, चाँदीके वरक १ भाग, नागकेशर २ भाग, कमलके फूलोंके अन्दरका केशर १ भाम, जीरा गुलाब १ भाग, केशर आधा भाग, कपूर चौथाई भाग, कहरूबा १ भाग, जहरमोहरा खताई १ भाग, संगेयशब १ भाग, गोरोचन १ भाग और गोदन्ती भस्म—सबके बराबर ले।

दोनों वरकोंको छोड़ सबका कपड़छान चूर्ण करके पीछे उसमें वरक १-१ करके मिलावे। पीछे अच्छे गुलाबके अर्कमें आठ दिन मर्दनकर, २-२ रत्तीकी गोलियां बना, सुखाकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—आधी गोलीसे २ गोली गाय या माताके दूधमें मिलाकर दे।

उपयोग—बालकोंका जीर्णज्वर, बालशोष (सूखा), पांडुरोग, दूध न पचकर दस्त या उल्टी होना, खांसी आदि रोगोंमें इसके सेवनसे रोग दूर होकर बालक अच्छा पुष्ट होता है।

रसायन-वाजीकरणाधिकार २६।

१—विदार्यादि चूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि—

विदारीकन्द, सफेद मुसळी, सालमपंजा, असगन्ध, गोखरू, अकरकरा सब सम भाग ले, कपड़छान चूर्ण करके शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—३-३ माशा सवेरे-शाम भोजनके ३ घंटा पहले गाय के गरम दूधके साथ पीवे।

उपयोग—इसके सेवनसे वीर्यकी वृद्धि और स्तम्भन होता है तथा कामोत्तेजना होती है।

२—कमलाक्षादि चूर्ण।

द्रव्य और निर्माणविधि—

कमलगट्टा ७ तोला, जायफल २ तोला, केशर १ तोला, तेजपात १ तोला, शतावरी २ तोला, असगन्ध २ तोला, सफेद मुसली २ तोला, वंशलोचन १ तोला, सालमपंजा २ तोला, छोटी इलाइचीके बीज १ तोला, सौंठ १ तोला, रूमीमस्तगी १ तोला, पीपलामूल १ तोला और कवाबचीनी १ तोला सबको कूट, कपड़छान चूर्ण करके शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—३ से ६ माशे चूर्णको आधासे १ तोले गायके घीमें थोड़ा सेंक उसमें पावसे आधा सेर गायका दूध और यथारुचि मिश्री मिला, ५-७ उफान आवे इतना गरम कर, नीचे उतार कर ठंढा होनेपर पीवे ।

उपयोग—इसके सेवनसे शरीर पुष्ट होता है, वीर्य बढ़ता है तथा कामोत्तेजना होती है ।

३—कामदेवघृत ।

अश्वगन्धा तुलैका स्यात्तदर्धो गोक्षुरः स्मृतः ।
बलाऽमृता शालपर्णी विदारी च शतावरी ॥
शुण्ठी पुनर्नवाऽश्वत्थः काश्मर्यास्तु फलानि च ।
पद्मबीजं माषबीजं पञ्चपलं पृथक् ॥
चतुर्द्रोणेऽम्भसां पक्त्वा पादशेषं शृतं नयेत् ।
जीवनीयगणः कुष्ठं पद्मकं रक्तचन्दनम् ॥
पत्रकं पिप्पली द्राक्षा कपिकच्छुफलं तथा ।
नीलोत्पलं नागपुष्पं सारिवा द्वे बले तथा ॥
पृथक्कर्षसमा भागाः शर्करायाः पलद्वयम् ।
रसश्च पौण्ड्रकेक्षूणामाढकैकं समाहरेत् ॥
घृतस्य चाढकं दत्त्वा पाचयेन्मृदुनाऽग्निना ।
घृतमेतन्निहन्त्याशु मूत्रकृच्छ्रमुरःक्षतम् ॥
शुक्रक्षयमुरोदाहं कार्श्यमोजःक्षयं तथा ।
स्त्रीणां चैवाप्रजातानां गर्भदं शुक्रदं नृणाम् ॥
कामदेवघृतं नाम हृद्यं बल्यं रसायनम् ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

असगन्ध ४०० तोला, गोखरू २०० तोला; बरियारा, गिलोय, सरिवन, विदारीकन्द, शतावर, सोंठ, गदहपूरना, पीपलकी कोंपल, गम्भारीके फल, कमलगट्टा और उड़द—प्रत्येक २० तोला ले, सबको जौकुट करके ४०९६ तोले जलमें पकावे । जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़ेसे छान, उसमें गायका घी २५६ तोला, गन्नेका रस २५६ तोला, मेदा, महामेदा जीवक, ऋषभक, काकोली,

क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, कूठ, पद्माख, लालचन्दन, तेजपात, छोटी पीपल, मुनक्का, कचाँच, नील कमल, नागकेशर, अनन्त मूल, बरियारा और गंगेरन प्रत्येक १-१ तोला तथा मिश्री ८ तोला इनका कपड़छान चूर्ण जलमें पीसकर बनाया हुआ कल्क मिलाकर घृतपाकविधिसे पकावे। घृत तैयार होनेपर कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—आधेसे दो तोलेतक, उतना ही मिश्रीका चूर्ण मिला कर दे और ऊपरसे दूध पिलावे।

उपयोग—यह उत्तम पौष्टिक और वाजीकर है। वीर्यक्षय, शरीरकी कृशता और नपुंसकतामें इसका प्रयोग करे।

४—मकरध्वज (चन्द्रोदय) रस।

पलं मृदु स्वर्णदलं रसेन्द्रात् पलाष्टकं षोडश गन्धकस्य,
शोणैः सुकार्पासभवप्रसूनैर्दिनं विमर्द्याथ कुमारिकाद्भिः।
सत्काचकुम्भे निहितं सुगाढे मृत्कर्पटैस्तद्दिवसत्रयं च,
पचेत् क्रमाग्नौ सिकताख्ययन्त्रे ततो रसः पल्लवरागरम्यः॥
तलस्थस्वर्णभागः स्यादेकोऽष्टौ मकरध्वजात्।
तथैव भागा देयाः स्युर्लवङ्गात् केशरात्तथा॥
जातीफलाच्च कर्पूरादेकस्तु मृगनाभितः।
श्लक्ष्णपिष्टो रसो नाम जायते मकरध्वजः॥
वल्लं वल्लद्वयं वाऽथ ताम्बूलीदलसंयुतम्।
भक्षयेन्मधुरस्निग्धं कटुकाम्लविवर्जितम्॥
शृतशीतं सितायुक्तं दुग्धं गोधूममाज्यकम्।
करोत्यग्निबलं पुंसां जराव्याधिविनाशनः॥
मेधायुःकान्तिजननो मकरध्वजसंज्ञकः॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद ३२ तोला ले, उसको पत्थरके खरलमें डाल, उसमें ४ तोले सोनेके वरक एक एक करके मिला, नीबूका रस डालकर एक दिन मर्दन करे। दूसरे दिन उसको भी, उसमें शुद्ध गन्धक ६४ तोले मिलाकर कज्जली करे। पीछे एक दिन

लाल फूलवाले कपासके फूलोंके रसमें और एक दिन ग्वारपाठेके रसमें मर्दनकर सुखा ले। पीछे एक अच्छी आतशी शीशीको या ब्रांडीकी नीचे पिंडेमें समतल हो ऐसी बोतलको ७ कपड़मिट्टी चढ़ा, सुखाकर उसमें भरे। बाद एक लोहेकी या मिट्टीकी नांद या घड़ेमें नीचे एक अँगुल बालू (रेत) बिछा, उसपर शीशी रख, शेष भागमें शीशीके गलेतक बालू भर, चूल्हेपर चढ़ा कर नीचे क्रमसे मन्द, मध्यम और तीक्ष्ण अग्नि दे। इस क्रियामें प्रथम गन्धक ऊपर आने लगेगा। गन्धक जमकर शीशीका मुँह बन्द न हो जाय, इसलिये जब गन्धक ऊपर आने लगे तब एक लोहेकी सलाई (सींक) को अग्निमें तपाकर शीशीके अन्दर गलेतक फिरावे। जब सारा गन्धक जल जाय तब शीशीके मुँहपर खड़िया मिट्टी या मुलतानी मिट्टीका डाट लगाकर ऊपरसे गुड़ या शहदमें मिला हुआ चूना लगा दे। पीछे कोई १२ घण्टा तीव्र अग्नि दे। बाद नया इन्धन देना बन्द करके जब आपसे आप ठंढा हो जाय तब शीशीको निकाल, ऊपरकी कपड़मिट्टीको हटा, शीशीके मध्यमें मिट्टीके तेलमें भिगाई हुई सुतली लपेट, उसको दियासलाईसे जला, ठंढे पानीके छींटे देकर शीशीको तोड़ दे। इस क्रियासे शीशी आसानीसे मध्यमेंसे ठीक टूट जाती है। पीछे शीशीके गलेमें लगे हुए मकरध्वजको सावधानीसे ले ले।

मात्रा और अनुपान—शीशीमें नीचे रहा हुआ सोनेका चूर्ण १ भाग, मकरध्वज ८ भाग, कपूर ८ भाग, लौंग ८ भाग, केशर ८ भाग, जायफल ८ भाग और कस्तूरी १ भाग लेवे। प्रथम सुवर्ण और मकरध्वजको ३ दिन मर्दन करे, पीछे कस्तूरी, कपूर और अन्य द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, १ दिन मर्दन करके शीशीमें भर ले। ३ से ६ रत्तीतक सवेरे शाम शहदमें चटाकर या नागर बेलके पानमें खिलाकर ऊपरसे गायका दूध पिलावे।

उपयोग—यह उत्तम रसायन, वाजीकर और बलकारक है। अनुपानभेदसे अनेक रोगोंमें इसका प्रयोग किया जाता है।

५—वसन्तकुसुमाकर रस

प्रवालरसमौक्तिकाभ्रकमिदं चतुर्भागभाक्
पृथक् पृथगथ स्मृते रजतहेमतो द्व्यंशके।
अयोभुजगवङ्गकं त्रिलवकं विमर्द्याखिलं
शुभेऽहनि विभावयेद्भिषगिदं धिया सप्तशः॥

द्रवैर्वृषनिशेक्षुजैः कमलमालतीपुष्पजैः
वरीकदलिकन्दजैर्मलयजैणनाम्युद्भवैः ।
वसन्तकुसुमाकरो रसपतिर्द्विगुञ्जोऽशितः
समस्तगदहृद्भवेत् किल निजानुपानैरयम् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

प्रवालपिष्टी ४ भाग, चन्द्रोदय या रससिन्दूर ४ भाग, मोतीकी पिष्टी ४ भाग, अभ्रकभस्म ४ भाग, रौप्यभस्म २ भाग, सुवर्णभस्म २ भाग, लोहभस्म ३ भाग, नागभस्म ३ भाग और वंगभस्म ३ भाग ले,सबको पत्थरके खरलमें डालकर अडूसेकी पत्तीका रस, हल्दीका रस, गन्नेका रस, कमलके फूलोंका रस, मालतीके फूलोंका रस, शतावरीका रस, केलेके कन्दका रस और चन्दन भिगोया हुआ जल इन प्रत्येककी सात-सात भावना दे । प्रत्येक भावनामें ६-६ घंटा मर्दन करना चाहिये । अन्तकी भावनाके समय उसमें २ भाग अच्छी कस्तूरी मिला, ३ घंटा मर्दन कर २-२ रत्तीकी गोली बनाकर छायामें सुखा ले । इस योगमें यदि दो भाग अंबर भी मिलावे तो यह विशेष गुणकारक होता है ।

मात्रा और अनुपान—सवेरे-शाम एक-एक गोली मधुमें मिलाकर दे और ऊपरसे गौका गरम किया दूध पिलावे ।

उपयोग—वसन्तकुसुमाकर रस उत्तम रसायन, वाजीकर, स्मरणशक्तिको बढ़ानेवाला तथा हृदय और मस्तिष्कको बल देनेवाला है । मधुमेहमें इसके सेवनसे अच्छा लाभ होता है ।

६—धात्रीरसायन (नोशदारु) ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

ताजे पुष्ट आँवले २॥ सेर लेकर उनको एक दिन-रात दूधमें भिगो दे । दूसरे दिन उनको जलसे धो, २॥ सेर जलमें डालकर गुठली अलग हो जाय इतना पका ले । पीछे गुठली निकाल, एक कलईदार बरतनपर पाट—सनका कपड़ा बाँध, उसपर आँवलोंको हाथसे मसलकर छान ले । पीछे उसमें १० तोला गायका घी डालकर मंदी आँचपर पकावे और लकड़ीके खोंचेसे हिलाता रहे । जब आँवले घी छोड़ने लगें और खोवे जैसे हो जांय तो नीचे उतारकर रख दे । पीछे पाँच सेर

चीनीमें थोड़ा अर्कगुलाब देकर चाशनी करे। जब पक्की चाशनी हो जाय तब उसमें आँवले मिलाकर नीचे उतार ले। बादमें इन द्रव्योंका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिलावे। चूर्णके द्रव्य—छोटी इलायचीके बीज, बड़ी इलायचीके बीज, नागरमोथा, अगर, तगर, जटामांसी, श्वेत चन्दन, वंशलोचन, रूमीमस्तगी, जायफल, जावित्री, केशर, तेजपात, तालीसपत्र, लौंग, गुलाबके फूल, धनिया, श्याहजीरा, कपूरकाचरी, निर्विषि (जदवार खताई), दालचीनी, अबरेशम कतरा हुआ और बिजौरेका छिलका सुखाया हुआ प्रत्येक एक एक तोला। इनका चूर्ण मिलानेके बाद अन्तमें चांदीके बड़े वरक १०० तथा सोनेके बड़े वरक २५ मिलाकर कांचकी बरनीमें भरकर रख दे। ४० दिनके बाद उपयोगमें लेवे। यदि इसमें कस्तूरी १ तोला, अम्बर १ तोला, प्रवालपिष्टी १ तोला, मोतीकी पिष्टी १ तोला और मिलावे तो यह योग विशेष गुणकारक होता है।

मात्रा और अनुपान—खानेके तीन घण्टा पहले इसमेंसे आधासे एक तोला देकर ऊपरसे गरम किया हुआ गायका दूध पिलावे।

गुण—यह उत्तम रसायन, बाजीकर, बलकारक, शरीरको पुष्ट करनेवाला, दिल और दिमागको बल देनेवाला तथा भूख बढ़ानेवाला है।

सिद्धयोगसंग्रह ।

परिशिष्ट ।

स्वर्णादि धातुओंका शोधन-मारण ।

स्वर्ण, रौप्य, ताम्र और लोहेका सामान्य शोधन—

सुवर्णरूप्यताम्रायःपत्राण्यग्नौ प्रतापयेत् ।
कृत्वा कण्टकवेधीनि दृष्ट्वा वह्निसमानि च ॥
निषिञ्चेत्तप्ततप्तानि तैले तक्रे गवां जले ।
काञ्जिके च कुलित्थानां कषाये सप्तधा पृथक् ॥
एवं स्वर्णादिलोहानां विशुद्धिः संप्रजायते ।

सोना, चाँदी, ताँबा और फौलाद (तीक्ष्ण लोह) इनके सुनारसे कण्टकवेधी (कांटे या सूईसे बेधे जा सकें ऐसे) पत्रे करा, उनको सीधे या मूषा-सकोरा आदिमें रख, अग्निपर लाल रङ्गका हो जाय इतना तपाकर तिलका तेल, छाछ, गोमूत्र, खट्टी काँजी और कुलथीके क्वाथमें सात-सात बार बुझानेसे उनका शोधन होता है। इस प्रकार शुद्ध की हुई धातुको गरम जलसे धो, सुखाकर मारणके काममें ले।

वक्तव्य—भस्म बनानेके लिये सोना, चाँदी आदि जो धातु ली जाय वह जिसमें किसी अन्य धातुकी मिलावट न हो ऐसी लेनी चाहिये। कण्टकवेधी पत्र सुनारसे पिटवाकर कराये जा सकते हैं या आजकल बड़े शहरोंमें मशीन (यन्त्र) से भी बनवाये जा सकते हैं। खट्टी काँजी तैयार न हो तो उसके बदलेमें सिरका काममें ला सकते हैं। छाछ, गोमूत्र, काँजी, सिरका और कुलथीका क्वाथ इनको दो-तीन बार धातु बुझानेके बाद बदल देना चाहिये।

११

१—सुवर्णभस्म।

द्रव्य और निर्माणविधि—

चन्द्रोदय (मकरध्वज) बनाते समय शीशीके तलेमें जो सोना रह जाता है, उसमें समभाग शुद्ध शंखिया मिला, तुलसीकी पत्तीके स्वरसमें ७ दिन घोंट, टिकिया बना, सुखा, दो सकोरोंके संपुटमें रख, संधिस्थानपर ७ कपड़मिट्टी कर, आधासे १ सेर कंडोंकी आँचमें निर्वातस्थानमें पुट दे। पीछे संपुटसे टिकिया निकाल, उसमें आधा शुद्ध संखिया मिलाकर प्रथम संपुटकी विधिसे दूसरा पुट दे। तीसरी बारमें तथा आगे जबतक भस्म न हो जाय चौथाई संखिया मिलावे। दूसरे पुटसे तुलसीके स्वरसमें ३ दिन मर्दन करे। १०-१२ पुटोंमें खुल्ले लाल रंगकी भस्म बनती है। पीछे उस भस्मको १-१ दिन गुलाब, कमल और मौलसिरी-के फूलोंके स्वरसमें घोटकर पुट देनेसे उत्तम भस्म बनती है। सोने, चाँदी और सीसेकी भस्म बनाते समय यह ध्यानमें रखे कि थोड़ीसी भी आँच अधिक होनेसे सोना, चाँदी और सीसा गलकर गट्टा बन जाता है। अतः प्रारम्भमें आधा सेर-से एक सेर तक कंडोंकी आँच दे। पीछे जैसे-जैसे भस्म अग्निसह हो वैसे वैसे आँच बढ़ाता जावे। सोनेकी भस्म एक बारमें १ से १० तोले तककी बनावे, अधिक न बनावे।

मात्रा और अनुपान—आध चावलसे दो चावलतक ३ माशे सितोपलादि चूर्ण और शहदके साथ मिलाकर दे और ऊपरसे गरम किया हुआ गौका दूध पिलावे।

गुण और उपयोग—सुवर्णभस्म रसायन, वाजीकर, बलकारक, मेध्य (स्मरणशक्तिको बढ़ानेवाली) और त्रिदोषहर है। राजयक्ष्मा, कण्ठमाला (गण्डमाला), नपुंसकता, दिमागकी कमजोरी, जीर्ण फिरंगोपदंश और वातविकारोंमें इससे विशेष लाभ होता है।

२—रौप्यभस्म।

द्रव्य और निर्माणविधि—

चाँदीके पत्रसे दूनी शुद्ध हरतालको सत्यानासीके स्वरसमें महीन पीस, उसका शुद्ध चाँदीके पत्रोंपर लेपकर, सुखा, संपुटमें रख, कपड़मिट्टी कर, १ सेर

कण्डोंकी आँचका पुट दे। दूसरे पुटमें आधी और तीसरे पुटमें चौथाई हरताल लेवे। इस प्रकार १० या जबतक ठीक भस्म न बन जाय तबतक पुट देवे। क्रमसे आँच थोड़ी-थोड़ी बढ़ाता जाय। पीछे गुलाबके फूलोंके स्वरसमें पीस, टिकिया बना, सुखा, गुलाबके फूलोंका स्वरस निकालकर बचे हुए कल्कको ऊपर लगा, गोला बना, सुखा, शराव संपुटमें रखकर ५ सेर अग्निका पुट देवे। ऐसे तीन पुट दे। उत्तम भस्म बनेगी। इस प्रकार बनाई हुई भस्मको योगोंमें डाले। रौप्यभस्म एक बारमें ५ से २० तोलेतक तैयार करे। अधिक एक साथमें न बनावे।

३—ताम्रभस्म।

द्रव्य और निर्माण विधि—

१ भाग हिंगुलसे निकाला हुआ पारा और दो भाग शुद्ध गंधककी कज्जली बना, उसको नीबूके रसमें मर्दन कर, शुद्ध ताम्रपत्रपर उसका लेपकर, सुखा, संपुटमें रख, संपुटके सन्धिको कपड़मिट्टी कर, सूखनेपर अर्ध गजपुटकी आँच दे। ठंढा होनेपर संपुटसे ताम्रको निकाल, उसमें समभाग शुद्ध गंधकका चूर्ण मिला, नीबूके रसमें घोंट टिकिया बनाकर पूर्वोक्त विधिसे पुट दे। इस प्रकार दो पुट देकर भस्मको एक काचपात्रमें डाल, ऊपरसे खट्टे नीबूका रस गेरकर एक दिन-रात रहने दे। दूसरे दिन देखे, यदि नीबूके रसमें हरापन न आया हो तो भस्म ठीक हो गई है ऐसा समझकर उसको काममें ले। यदि नीबूके रसमें हरापन आ जाय तो समभाग गंधकके साथ नीबूके रसमें घोंटकर पूर्वोक्त विधिसे एक पुट और दे। हर बार आंच पहलेसे आधी ही दे। बादमें ऊपर लिखी हुई विधिसे भस्मकी परीक्षा कर ले। ताम्रभस्म एक साथमें २० से ४० तोले तक बनावे, अधिक न बनावे।

ताम्रभस्मके गुण।

ताम्रं तिक्तकषायकं च मधुरं पाकेऽथ वीर्योष्णकं
साम्लं पित्तकफापहं जठररुक्कुष्ठामजन्त्वन्तकृत्।
ऊर्ध्वाधःपरिशोधनं विषयकृत्स्थौल्यापहं क्षुत्करं
दुर्नामक्षयपाण्डुरोगशमनं नेत्र्यं परं बृंहणम्॥

ताम्र रसमें तिक्त, कषाय और अम्ल; विपाकमें मधुर, उष्णवीर्य, भूखको बढ़ानेवाला (दीपन), नेत्रके लिये हितकर और उदररोग, कुष्ठ (त्वचाके रोग),

आम, कृमि, यकृत्‌के रोग, शरीरकी स्थूलता, अर्श (बवासीर), क्षय और पाण्डुरोगको दूर करता है।

४—लौहभस्म।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध तीक्ष्ण लोहका चूर्ण ४० से ६० तोला ले, उसमें बारहवां हिस्सा शुद्ध हिंगुलका चूर्ण मिला, ग्वारपाठेके रसमें मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा, दो मिट्टीके तवोंके बीचमें रख, संपुटकी संधिको कपड़मिट्टी दे, सुखाकर गजपुटमें पकावे। इस प्रकार सात बार ग्वारपाठेके रसमें, ७ बार गोमूत्रमें और ७ बार त्रिफलाके क्वाथमें मर्दन करके गजपुट दे। सात पुटतक प्रत्येक पुटमें बारहवां हिस्सा हिंगुल मिलावे और ६-१२ घण्टे तक खूब घोटे। इस प्रकार २१ पुटमें लोहेकी अच्छी भस्म होती है। लोहेको आकका दूध, पुनर्नवा, जामुन और अडूसा इनके रसमें मर्दन करके पुट देनेसे भी अच्छी भस्म होती है।

वक्तव्य—लोह, मण्डूर, कासीस, अभ्रक और माक्षीक इनकी भस्मोंको ताजे आंवले और भंगरेके स्वरसकी ३-३ भावना दे, सुखाकर पीछे प्रयोग करनेसे विशेष गुणकारी होती हैं। लोह या मण्डूरकी भस्म एक बारमें ४० से ६० तोलेतक बनावे, अधिक न बनावे।

मात्रा—आधी रत्तीसे १ रत्तीतक।

अनुपान—शहद अथवा त्रिफलाका चूर्ण, छोटी पीपलका चूर्ण या सितोपलादि चूर्ण और शहदके साथ मिलाकर दे।

गुण और उपयोग—लोहभस्म उत्तम रसायन, बाजीकर, दीपन और रक्तको बढ़ानेवाली है। यकृत् और प्लीहाके रोग, खांसी, श्वास, पांडुरोग, क्षय आदिमें योग्य अनुपानसे इसका प्रयोग करे।

५—मण्डूरभस्म।

द्रव्य और निर्माणविधि—

छिद्ररहित, बजनदार और चिकना मंडूर ला, उसको अग्निमें लाल हो जाय इतना तपा-तपाकर गोमूत्रमें २१ बार बुझावे। पीछे कपड़छान चूर्ण कर, गोमूत्रमें पीस, टिकिया बना, सुखाकर अर्धगजपुटका अग्नि दे। इस प्रकार ७ बार गोमूत्र, ७ बार त्रिफलाका क्वाथ

और ७ बार ग्वारपाठेके रसमें मर्दन कर पुट देनेसे मंडूरकी उत्तम भस्म बनती है।

मात्रा—१-२ रत्ती।

अनुपान—रोगानुसार या शहद।

उपयोग—उदर रोग, यकृत और प्लीहाके रोग तथा पांडुरोगमें इससे अच्छा लाभ होता है।

६—विमलभस्म।

विमल और माक्षिकके स्वरूपके विषयमें रसपद्धतिकारने लिखा है कि—

तापीजं द्विरुदाहरन्ति विमलामाक्षीकभेदादिह
त्रेधाऽऽद्या तु सुवर्णकांस्यरजतच्छायानुकारादमूः।
तिस्रोऽप्यस्त्रयुताश्चतुस्त्रिफलका वृत्ताः स्वनामश्रियः

× × × ×

माक्षीको द्विरिहादिमः कनकरुग्दुर्वर्णवर्णोऽपरः
कांस्यश्रीकमुशन्ति केचन परं सर्वेऽपि पूर्वत्त्विषः।
निष्कोणा गुरवः किरन्ति निभृतं घृष्टाः करे कालिमाम्॥

ताप्य दो प्रकारका होता है, एक विमल और दूसरा माक्षीक। विमल गोलाई लिये, कोने और धारवाला तथा पासेदार होता है। उसके रंगपरसे सुवर्णविमल, रौप्यविमल और कांस्यविमल ऐसे तीन भेद माने जाते हैं। माक्षीक धार, कोने और पासेरहित तथा वजनदार होता है। उसको अंगुलियोंसे रगड़नेपर अँगुलियां काली होती हैं। माक्षीकके भी उसके वर्णके अनुसार सुवर्णमाक्षीक, रौप्यमाक्षीक और कांस्यमाक्षीक ऐसे तीन भेद माने गये हैं।

विमलमें लोहा और गंधक तथा माक्षीकमें लोहा गंधक और थोड़े अंशमें तांबा पाया जाता है। इस समय बाजारमें जो विशेषरूपमें मिलता है और प्रायः वैद्य लोग जिसका माक्षीकके नामसे उपयोग करते हैं, वह बहुधा विमल होता है।

७—विमलका शोधन और मारण।

विमलको गरम पानीसे धो, सुखा, कपड़छान चूर्ण कर त्रिफलाके क्वाथकी ३ भावनायें देकर सुखा लेवे। पीछे उसमेंसे २० तोला लोहेके तवेपर रख, उसमें सब तर हो जाय इतना गायका घी मिला, अग्निपर रखकर करछी या खोंचेसे हिलावे।

हिलाते-हिलाते जब उसमें ज्वाला लग जाय तब तवेपर फैलाकर रख दे। स्वांगशीतल होनेपर फिर यही विधि करे। २-३ बार अग्निपर भर्जन करनेसे लाल रङ्गकी भस्म होगी। जबतक भस्म लाल रंगकी तथा कषाय और अम्लरसरहित न हो जाय तब तक यह विधि करनी चाहिये।

मात्रा—१ रत्ती।

अनुपान—शहद या रोगानुसार।

उपयोग—विमलभस्मका उपयोग मण्डूर जैसा करे।

वक्तव्य—विमलभस्म मात्र भर्जनसे अच्छी बनती है। उसको पुट देनेकी आवश्यकता नहीं है।

८—माक्षीकका शोधन और मारण।

विमलके लिये जो शोधनकी विधि लिखी है, उसी विधिसे माक्षीकका भी शोधन करे। पीछे शुद्ध माक्षीकमें आधा शुद्ध गन्धकका चूर्ण मिला, बिजोरेके रसमें १ दिन मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा, दो तवोंके बीचमें रख, संपुटको अच्छी तरह कपड़मिट्टी दे, सुखा कर गजपुटका अग्नि दे। स्वांगशीतल होनेपर टिकिया निकाल ग्वारपाठेके रसमें मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा, दो तवोंके बीचमें रखकर आधे गजपुटका अग्नि दे। इस प्रकार जबतक भस्म कषाय और अम्लरसरहित न हो जाय तबतक पुट देता रहे। प्रायः १० पुटमें जामुनके रंगकी भस्म होती है। माक्षीककी भस्म एक साथमें ४० से ६० तोलातककी बनावे।

मात्रा और अनुपान—१ रत्ती भस्म, चौथाई तोला शहद तथा आधे तोले गायके घीमें मिलाकर दे।

उपयोग—पांडु, यकृत् तथा प्लीहाके रोग और क्षयमें इसका प्रयोग करे।

९—नाग, वंग और जसदका शोधन

नागवङ्गौ प्रतप्तौ च गालितौ तौ निषेचयेत्।
सच्छिद्रश्रावपिहिते हण्डिकास्थे द्रवे शनैः॥
सप्तधैवं विशुद्धिः स्याद्रविदुग्धे च सप्तधा।

नाग और वंगको लोहेकी मजबूत छोटी कड़ाहीमें गलाकर, एक मिट्टीकी मजबूत हांड़ीको तैल आदि द्रवसे, जिसमें नाग बंगको बुझाना हो, लगभग आधी भर,

उसपर बीचमें छिद्र किया हुआ सकोरा रख, उसको लोहेके तारसे बांध, उसपर गला हुआ रस सावधानीसे गेर दे, जिससे द्रवमें गिरकर उछला हुआ नाग-वंग गेरनेवालेके शरीरमें न लगे। इस प्रकार तिलके तेल, छाछ, गोमूत्र, काँजी, कुलथीके क्वाथ और आकके दूधमें ७-७ बार बुझानेसे नाग और वंग शुद्ध होते हैं। मिट्टीकी हांड़ीके बदले लोहेके इमामदस्तेपर पत्थरकी चक्कीके ऊपरका पाट रखकर उसके छेदसे नाग-वंगका द्रव गेरना विशेष अच्छा (निर्भय) है। जसतेका शोधन भी इसी प्रकार करना चाहिये। जस्तेको तैल, छाल, काँजी, गोमूत्र और कुलथके क्वाथमें बुझानेके बाद आखिरमें ७ बार गायके दूधमें बुझावे।

१०—नागका मारण

शुद्ध नागको अन्दरसे खूब साफ की हुई लोहेकी एक बड़ी कड़ाहीमें अग्निपर गलाकर उसपर इमली और पीपल (अश्वत्थ) की छाल समभाग लेकर जौकुट किया हुआ चूर्ण थोड़ा थोड़ा करके गेरता जावे और लोहेकी करछीसे हिलाता रहे। जबतक सब नाग सूक्ष्म चूर्ण और लाल रंगका न हो जाय तबतक इस प्रकार करता रहे। पीछे सब चूर्ण कड़ाहीके मध्यमें लाकर ऊपरसे सकोरा ढांक दे और चूर्ण अग्निवर्ण हो जाय इतनी तेज आँच देकर रख छोड़े। स्वांगशीतल होनेपर कपड़ेसे छान, खरलमें डाल, उसमें बारहवां हिस्सा शुद्ध मैनसील मिला, अडूसेके रसमें घोट, टिकिया बना, सुखा, दो मिट्टीके तवोंमें रख, तवोंकी सन्धिको अच्छी तरह कपड़मिट्टी कर, सूखनेपर १-२ सेर कंडोंकी आंचमें पुट दे। इस प्रकार ४० पुट दे। नाग जैसे जैसे अग्नि सहन करता जावे वैसे वैसे आंचका प्रमाण बढ़ावे। खुल्ले लाल रंगकी भस्म होगी। १० पुटके बाद मैनसील देना बन्द करे और संपुटकी सन्धिपर कपड़मिट्टी भी न करे। नागभस्म एक बारमें ४० से ६० तोलेतक बनावे, इससे अधिक न बनावे।

मात्रा—आधी रत्ती।

अनुपान—रोगानुसार या एक भाग शहद और दो भाग घृतमें मिलाकर दे।

उपयोग—मधुमेह, शुक्रमेह और स्त्रियोंके श्वेतप्रदरमें नागभस्मका उपयोग करे।

११—वंग-मारण

वंगको एक अन्दरसे खूब साफ की हुई लोहेकी कड़ाहीमें अग्निपर गलाकर उसमें पलास (ढाक—टेसू) के पुष्प, मोतीकी सीपका चूर्ण या मुरगीके अंडेके छिलके धो सुखाकर किया हुआ चूर्ण थोड़ा थोड़ा गेर, लोहेकी करछीसे हिलाकर चूर्ण कर ले। सब वंगका चूर्ण हो जाने पर चूर्णके ऊपर सकोरा ढांक, चूर्ण अग्निवर्ण हो इतनी तेज आंच देकर रख छोड़े। स्वांगशीतल होनेपर कपड़ेसे छान, ग्वारपाठेके रसमें मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा, दो तवोंके बीचमें रखकर आधे गजपुटकी अग्नि दे। ऐसे ७ पुट देनेसे वंगकी श्वेतवर्णकी भस्म होगी। वंगभस्म एक साथमें ४० से ६० तोलेतककी बनावे, उससे अधिक न बनावे।

मात्रा—१-२ रत्ती।

अनुपान—रोगानुसार या शहद।

उपयोग—शुक्रमेह और श्वेतप्रदरमें वंगभस्मका प्रयोग करे।

१२—जस्तभस्म

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध जस्तेको एक अन्दरसे खूब साफ की हुई लोहेकी कड़ाहीमें गलाकर ऊपर थोड़ा थोड़ा समभाग भांग और अफीमके पोस्त (खस खास निकाले हुए डोडे) का चूर्ण गेरता जावे और लोहेकी करछीसे हिलाता रहे। जब सब चूर्ण हो जाय तो ऊपर सकोरा ढांककर चूर्ण अग्निवर्ण हो उतनी तेज आंच देकर रख छोड़े। स्वांग-शीतल होनेपर कपड़ेसे छान, खरलमें डाल, ग्वारपाठेके रसमें घोट, टिकिया बना, सुखा, दो मिट्टीके तवोंमें रखकर आधे गजपुटका अग्नि दे। इस प्रकार ७ पुट देनेसे कुछ ललाई लिये हुए पीले रंगकी भस्म होगी।

मात्रा—आधी रत्तीसे १ रत्ती तक।

अनुपान—रोगानुसार या शहद।

उपयोग—जसदभस्म रसमें कषाय और तिक्त, शीतवीर्य और रोपण है। प्रमेह, ग्रहणीरोग और राजयक्ष्मामें इसका प्रयोग करे।

१३—त्रिवंगभस्म।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अलग अलग शुद्ध किये हुए नाग, वंग और जस्तको एक साथ लोहेकी कड़ाहीमें अग्निपर गलाकर उसमें भाँग और अफीमके पोस्तका चूर्ण थोड़ा थोड़ा डाल, लोहेकी करछीसे हिलाकर चूर्ण कर ले। सब चूर्ण हो जानेपर ऊपर सकोरा ढाक, चूर्ण अग्निवण हो इतनी तेज आँच देकर रख छोड़े। स्वांगशीतल होनेपर कपड़ेसे छान, खरलमें डाल, ग्वारपाठेके रसमें मर्दन कर, टिकिया बना, सुखाकर पूर्वोक्त विधिसे आधे गजपुटकी आँचमें पुट दे। ऐसे ७ पुट देनेसे खुल्ले पीले रंगकी भस्म होगी।

मात्रा—१ रत्ती।

अनुपान—शहद या ताजे मक्खनमें मिलाकर दे।

उपयोग—मधुमेह और जीर्ण पूयमेहमें इसका प्रयोग करे।

१४—अभ्रकका शोधन और मारण।

काले रंगका, पत्थररहित और वजनदार अभ्रक लाकर उसको अग्निमें लाल वर्णका होनेतक तपावे। जो अभ्रक अग्निपर वैसा ही पड़ा रहे अर्थात् जिसके पत्र अलग न हों और रंग न बदले उसको काममें ले और दूसरा फेंक दे। अभ्रकको अग्निमें खूब लाल हो इतना तपा-तपाकर गोमूत्रमें, त्रिफलाके क्वाथमें और गायके दूधमें सात-सात बार बुझावे। पीछे जलसे धो, सुखा, ईमामदस्तेमें कूटकर कपड़छान चूर्ण कर ले। अभ्रकके चूर्णको प्याजके रसमें पीस, टिकिया बना, सुखा, दो तवोंके बीचमें टिकिया रखकर गजपुटका अग्नि दे। इस प्रकार २१ बार प्याजके रसमें, ७ बार गिलोयके स्वरसमें, ७ बार अर्कक्षीरमें और ७ बार अड़ूसेके स्वरसमें मर्दन कर पुट देनेसे अभ्रककी उत्तम भस्म बनती है। अभ्रक भस्म एक साथमें ४० से ६० तोले तक बनावे, अधिक न बनावे।

मात्रा—१-२ रत्ती।

अनुपान—शहद

उपयोग—अभ्रकभस्म उत्तम रसायन, बलकारक, रक्तको बढ़ानेवाली, दीपन और पाचन है। खांसी, श्वास, क्षय, पांडुरोग और अग्निमान्द्यमें योग्य अनुपानके साथ प्रयोग करे।

१५—शृङ्गभस्म ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

हरिण या साँभरके अच्छे पुष्ट (भरे हुए) सींग ले, उनके करौतसे ४-५ अंगुल जितने टुकड़ेकर, ऊपर-नीचे कंडे (उपले) देकर गजपुटका अग्नि दे । स्वांग-शीतल होनेपर निकाल, चूर्ण कर, ग्वारपाठेके रसमें पीस, टिकिया बना, सुखा, दो तवोंके बीचमें रखकर आधे गजपुटका अग्नि दे । स्वांगशीतल होनेपर खरलमें पीस, कपड़छान कर शीशीमें भर ले । पहली बार सींग जलते समय उसमेंसे बड़ी दुर्गन्ध आती है, अतः उन्हें खुली जगहमें गजपुट देना चाहिये ।

मात्रा—२-८ रत्ती ।

अनुपान—शहद या गायके घीमें मिलाकर दे ।

उपयोग—हृच्छूल, पार्श्वशूल और कफकासमें शृंगभस्मका प्रयोग करे ।

१६—मोतीकी पिष्टी ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छा पानीदार बसराई मोतीका खाखा (छोटे अनविध दाने) ला, उसको गरम जलसे धो, सुखा, खूब साफ किये हुए लोहेके इमामदस्तेमें कूटकर सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर लेवे । पीछे अच्छे (न घिसनेवाले) पत्थरके खरलमें डाल, एक दिन नीबूके रसमें मर्दन करे । नीबूका रस सूखनेपर उत्तम गुलाबके अर्कमें या चन्दनादि अर्कमें मर्दन करे । आँखमें डालनेके अंजन जैसी सूक्ष्म पिष्टी हो जाय तब छायामें सुखा, कपड़छान करके शीशीमें भर ले ।

मात्रा और अनुपान—१-२ रत्ती, शहद या ताजे मक्खनमें मिलाकर दे ।

उपयोग—क्षय, दाह, अम्लपित्त तथा अन्य वात और पित्तके विकारोंमें मुक्ता-पिष्टीका उपयोग करे ।

१७—शङ्खभस्म ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छा छिद्ररहित, बड़ा और वजनदार शङ्ख ले. उसको मिट्टीके घड़ेमें डाल, उसमें जल और नीबूका रस गेरकर १ घण्टा मन्दी आँचपर पका ले । बादमें धो, साफकर १० सेर कंडों या लकड़ीके कोयलोंकी आंचमें पका ले । शङ्ख अच्छा पकनेपर

अंगुलीसे दबानेपर चूर्ण जैसा हो जाता है। पीछे उसको पत्थरके खरलमें तीन बार नीबूके रसकी भावना दे, छायामें सुखा, कपड़छान चूर्ण कर शीशीमें भर ले।

मात्रा—४-८ रत्ती।

उपयोग—अम्लपित्त, पेटका दर्द और परिणामशूलमें शंखभस्मका प्रयोग करे। शंखभस्म दीपन और पाचन है।

१८—कपर्दिका (कौड़ी) भस्म।

पीले रंगकी, पृष्ठभागमें गांठवाली, छः आने (४॥ माशे) वजनवाली कौड़ियां ला, उसको मिट्टीके घड़ेमें डाल, उसमें जल और थोड़ा नीबूका रस गेरकर मन्दी आंचपर १ घण्टा पकावे। ठंढे होनेपर निकाल, जलसे धो, दो मिट्टीके तवोंके बीचमें रखकर १० सेर कंडों या लकड़ीके कोयलेकी आंचमें फूंक दे। स्वांगशीतल होनेपर निकालकर पत्थरके खरलमें २-३ बार नीबूके रसकी भावना दे, सुखा, कपड़छान कर शीशीमें भर ले।

मात्रा—२-८ रत्ती।

अनुपान—घृत चौथाई तोला और शहद आधा तोलामें मिलाकर दे।

उपयोग—पेटका दर्द, परिणामशूल, अम्लपित्त और अग्निमान्द्यमें कपर्दिका-भस्मका प्रयोग करे।

१९—मोतीसीपकी पिष्टी।

अच्छी, बड़ी, छेदरहित, वजनदार मोतीकी सीप ला, उसको मिट्टीके घड़ेमें डाल, ऊपर जल और थोड़ा नीबूका रस गेरकर मन्दी आंचपर एक घण्टा पका ले। पीछे जलसे निकाल, धो, सुखाकर अच्छे साफ किये हुए लोहेके इमामदस्तेमें कूट कर कपड़छान कर ले। पीछे न घिसनेवाले पत्थरके खरलमें आंखमें डालनेके अंजन जैसी सूक्ष्म पिष्टी न हो तबतक चन्दनादि अर्कमें मर्दन करे। बादमें छायामें सुखा, कपड़छान कर शीशीमें भर ले।

मात्रा—२-४ रत्ती।

अनुपान—शहद, ताजा मक्खन या दूधके साथ दे।

उपयोग—मोती-सीपकी पिष्टीका उपयोग मुक्तापिष्टी जैसा करे।

२०—प्रवाल-पिष्टी और भस्म ।

पिष्टी निर्माणविधि—

अच्छे लाल रंगके और छेदरहित प्रवाल लाकर उसको गरम जलसे धो, कपड़ेसे पोंछ, सुखा, लोहेके इमामदस्तेमें कूटकर सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर ले। पीछे न घिसने वाले अच्छे पत्थरके खरलमें डाल, उसमें नीबूका रस देकर दो दिन मर्दन करे। पीछे चन्दनादि अर्कमें जबतक आंखमें डालनेके अंजन जितना सूक्ष्म न हो जाय तबतक मर्दन करे। बाद छायामें सुखा, कपड़छान करके शीशीमें भर ले।

मात्रा—१-५ रत्ती।

अनुपान—शहद, ताजा मक्खन या दूध।

भस्म निर्माणविधि—

अच्छे लाल रंगके और छेदरहित प्रवाल ले, उसको गरम जलसे धो, कपड़ेसे पोंछ, सुखा, लोहेके इमामदस्तेमें कूट, सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, पत्थरके खरलमें आकके दूध या ग्वारपाठेके रसमें पीस, टिकिया बना, सुखा, दो मिट्टीके तवोंमें रख कर गजपुट दे। स्वांगशीतल होनेपर निकाल, एक दिन नीबूके रस और एक दो दिन चन्दनादि अर्कमें पीस, छायामें सुखा, कपड़छान कर शीशीमें भर ले।

मात्रा और अनुपान—१-२ रत्ती, शहद और गायका घी या दूधके साथ दे।

उपयोग—जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा, पांडुरोग, रक्तपित, अम्लपित्त और खांसीमें प्रवालका उपयोग करे।

२१—रत्न-भस्म ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

माणिक, नीलम, पोखराज, गोमेद, लहसुनियां, वैक्रान्त आदि रत्नोंकी अच्छी रंग और पानीदार खंड (छोटे टुकड़े) ला, उन्हें सोना गलानेकी मूषा या सकोरेमें रख, अग्निपर लाल हो इतना तपाकर ताजे आंवलेके स्वरसमें या चन्दनादि अर्कमें बुझावे। इस प्रकार ५० से १०० बार तक (जबतक वह नरम होकर आपसे आप टुकड़े न होने लगे तबतक) बुझावे। पीछे खूब साफ किये हुए लोहेके इमामदस्तेमें कूटकर महीन रेशमी कपड़ेसे छान ले। पीछे समाकके या अन्य

Harish Chand M.S. 3.1. Year

न घिसनेवाले पत्थरके खरलमें डाल, उसको ताजे आंवलेके स्वरसमें मर्दनकर टिकिया बना, सुखा, टिकियोंको दो सकोरोंमें रखकर आधे गजपुटका अग्नि देवे। इस प्रकार ३० पुट दे। बाद तीन दिन चन्दनादि अर्कमें मर्दन कर, छायामें सुखा, महीन रेशमी कपड़ेसे छानकर शीशीमें भर ले। रत्नभस्म चन्द्रिकारहित और आँखमें डालनेके अंजन जितनी सूक्ष्म बननी चाहिये। रत्नभस्म एक साथ २० तोलेसे अधिक न बनावे।

मात्रा—आधी रत्तीसे १ रत्ती।

अनुपान—शहद या खमीरे गावजबानमें मिलाकर दे।

उपयोग—दिल व दिमागकी कमजोरी और उससे होनेवाले रोगोंमें रत्नभस्मोंका उपयोग करे।

वक्तव्य—रत्नोंको चन्दनादि अर्कमें बुझा, सूक्ष्म चूर्णकर, चन्दनादि अर्कमें मर्दन करके पिष्टी भी बना सकते हैं। यूनानी हकीम बिना बुझाये ही अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क या अर्क केवड़ामें मर्दन कर पिष्टी बना लेते हैं।

२२—कासीसभस्म।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छा हरे रङ्गका कसीस ला, उसको लोहेके तवेपर रख, अग्निपर गरम कर उसका जल सुखा ले; बादमें ताजे आंवले, भंगरा या कन्दहारी अनारके रसमें मर्दनकर, टिकिया बना, सुखाकर आधे गजपुटका अग्नि दे। ऐसे दो पुट देनेसे लाल रङ्गकी भस्म होगी।

मात्रा—१-२ रत्ती।

अनुपान—शहद।

उपयोग—लोहभस्मके जैसा इसका उपयोग करे।

भस्म बनाने और पुट देनेके विषयमें कुछ आवश्यक सूचनाएँ।

किस द्रव्यकी एक साथमें कितनी भस्म बनानी चाहिये, उसकी सूचना हमने प्रत्येक भस्मकी निर्माणविधिमें प्रायः लिख दी है। उससे अधिक प्रमाणमें भस्म बनानेसे घुटाई ठीक नहीं होती और जितनी आंच उसके लिये आवश्यक होती है उतनी आंचमें भस्म ठीक नहीं बनती। जिस भस्मके बनानेमें पारा, हिंगुल, संखिया, हरताल, मैनसिल आदि अग्निपर उड़नेवाले द्रव्यका संयोग हो, उसके संपुटको

संधिको कपड़मिट्टी अवश्य करनी चाहिये। परन्तु जब पारे गन्धक जैसी अग्निपर उड़ जानेवाली वस्तु उसमें न डाली गयी हो तब संपुटकी संधि खुली हो रखनी चाहिये। संपुटकी सन्धि खुली रखनेसे आँच ठीक लगती है और भस्मका रङ्ग भी अच्छा आता है। कई वैद्य मिट्टीके घड़े जैसे पात्रमें टिकिया भरकर पुट देते हैं, परन्तु ऐसा करनेमें बीचतक आँच एकसी नहीं लगती। अतः मिट्टीके दो तवोंके बीचमें टिकिया रखकर पुट देना चाहिये, जिससे सब टिकियोंको एकसी आँच लगे। तवोंके बीच टिकियोंकी दो तह (स्तर) ही रखनी चाहिये और तवे भी इतने गहरे न हों कि बीचमें अधिक अवकाश रहे। बीचमें अधिक जगह खाली रहनेसे भी आँच ठीक नहीं लगती। टिकिया गोल न बनाकर थोड़ी चिपटी ही बनानी चाहियें। टिकियोंको अच्छी तरह सुखानेके बाद ही पुट देना चाहिये। यदि टिकियाँ कुछ गीली होंगी तो भस्मका रङ्ग अच्छा नहीं आवेगा। अभ्रक, लोह, मंडूर, वङ्ग और माक्षीकको प्रारम्भमें तेज और पीछे मन्द आंच देनी चाहिये। पीछेके पुटोंमें उनको कड़ी आंच देनेसे भस्म कड़ी हो जाती है, मृदु-मुलायम नहीं बनती। सोना, चाँदी और नागको प्रारम्भके पुटोंमें मन्द आँच देनी चाहिये और पीछे जैसे जैसे अग्निसह होते जायँ वैसे वैसे आँच क्रमसे बढ़ानी चाहिये। कोई भी भस्म तैयार होनेके बाद उसमें कोई रस-विशेषका स्वाद न रहना चाहिये अर्थात् वह आस्वादरहित (बेजायका) और जीभको न लगे ऐसी होनी चाहिये। जबतक ऐसी न हो तबतक पुट देते रहना चाहिये। भस्म तैयार होनेके पीछे उसको २-३ दिन खूब घोटकर महीन रेशमी वस्त्रसे छान लेना चाहिये। भस्म बनाते समय वनस्पतिका स्वरस देकर ६ से ८ घण्टेतक उसको अच्छी तरह घुटना चाहिये। ठीक घुटाई न हो तो भस्म बनानेमें देरी लगती है और भस्म सूक्ष्म तथा मृदु नहीं बनती। भस्म बनाते समय ऊपर लिखी हुई सूचनाएँ खास ध्यानमें रखनी चाहियें।

भस्म बनानेमें जहाँतक बन सके जङ्गली उपलोंकी आँच दे। यदि वे न मिल सकें तो हाथसे बनाए हुए उपलोंकी आँच दे। शहरोंमें उपलोंके जलानेसे धुंएके श्वासका भय हो तो अच्छी लकड़ीके कोयलोंकी आँच भी दे सकते हैं।

२३—संखियेका शोधन।

संखियेके सरौतेसे चने जितने छोटे टुकड़े कर, कपड़ेमें बांध, मिट्टीकी हाँडीमें

दोलायन्त्रमें गायके दूधमें मन्दी आँचपर तीन घटा पकावे ; पीछे कपड़ेसे निकाल, गरम जलसे धोकर सुखा ले।

२४—हरतालका शोधन।

अच्छी पत्री (वरकी) हरताल ला, उसके चने जितने छोटे टुकड़े कर, कपड़ेमें बांधकर, मिट्टीकी हांड़ीमें पेठेके स्वरसमें दोलायन्त्रमें मंदी आंचपर छः घंटा पकावे, पीछे मिट्टी या कांचके बरतनमें नीबूके रसमें भिगोकर रख दे। प्रतिदिन नीबूका रस बदलता रहे। ऐसे सात दिन नीबूके रसमें रखनेके बाद जलसे धो कर सुखा ले।

२५—मैनसिलका शोधन।

अच्छी मैनसिल ला, उसके चने जितने छोटे टुकड़े कर, उसको एक मिट्टीकी हांड़ीमें भंगरेका स्वरस भरकर उसमें दोलायन्त्रसे पकावे। बाद धोकर पत्थरके खरल में ३ भावना अदरकके रसकी और ३ भावना लाल फूलके अगस्त्यके फूलोंके स्वरसः की दे, सुखाकर रख ले।

२६—सज्जी खारका शोधन।

सज्जी खारके चूर्णको चौगुने पानीमें गला कर मिट्टीके पात्रमें रात भर रहने दे। सवेरमें ७ बार कपड़ेसे छान कर चौड़े मुंहके मिट्टीके घड़ेमें डाल आगपर रख कर सब पानी जलकर क्षार शुष्क हो जाय तब ठण्डा होने पर खुरच, सब क्षार निकालकर शीशीमें भर ले। खानेके योगोंमें इसप्रकार शुद्ध किये हुए सज्जी खारका प्रयोग करे।

२७—टंकण (सुहागा) का शोधन।

सुहागेका चूर्ण कर, उसको मिट्टीके तवेपर फैलाकर तवेको अग्निपर रखे। जब सब सुहागा फूलकर लावा (खील) जैसा हो जाय तब ठंढा होनेपर पीस, कपड़-छान करके शीशीमें भर ले।

२८—फिटकिरीका शोधन।

फिटकिरीका शोधन सुहागेके शोधन जैसा ही करे।

२९—गन्धकका शोधन।

गन्धकका शोधन रसपर्पटीकी निर्माणविधिमें लिखे हुए शोधनके अनुसार गायके दूधमें करे।

३०—बछनागका शोधन।

जो बछनाग तोड़नेपर भीतरसे ठोस और चिकना हो उसके छोटे छोटे टुकड़े कर, एक मिट्टी या काँचके पात्रमें डाल, ऊपर सब डूब जाय इतना गोमूत्र डाल कर २४ घंटे तक पात्रको ढाँककर रख छोड़े। दूसरे दिन पहला गोमूत्र निकाल कर नया गोमूत्र भरे। इस प्रकार ३ बार करे; पीछे जलसे धो, एक कपड़ेमें बांध कर गायके दूधमें दोलायन्त्रसे तीन घंटे मन्दी आंच पर पकावे। बाद कपड़ेसे निकाल, जलसे धो, सुखाकर रख छोड़े। सूखनेके बाद यथावश्यक वजन करके काममें ले।

३१—अफीमकी शुद्धि।

अफीमको चौगुने जलमें घोलकर कपड़ेसे छान ले। पीछे मंदी आंचपर गरम करके गाढ़ा करले। बाद उसको अदरखके रसकी ७ भावनाएं दे, सुखाकर काममें लेवे।

३२—धतूरेके बीजका शोधन।

अच्छे पके हुए धतूरेके बीजको कपड़ेमें बांधकर दोलायन्त्रमें गायके दूधमें ३ घण्टा मन्दी आंचपर पकावे। बाद गरम जलसे धोकर सुखा ले।

३३—भाँगका शोधन।

भांगको कपड़ेमें बांधकर जबतक जलमें हरा रंग आता रहे तबतक जलसे धोवे। बाद कपड़ेसे निचोड़, निकालकर छायामें सुखा ले।

३४—कुचलेका शोधन।

अच्छे पुष्ट (भरे हुए) कुचले लाकर उसको मिट्टी या कांचके पात्रमें गोमूत्रमें भिगो दे। दूसरे दिन उसे निकालकर नया गोमूत्र दे। इस प्रकार सात दिन गोमूत्रमें भिगोवे। आठवें दिन चाकूसे कुचलेके ऊपरके छिलके तथा दो दलके अन्दरकी जीभ निकाल दे। पीछे कपड़ेमें बांधकर गायके दूधमें दोलायन्त्रमें पका, कपड़ेसे निकाल, गरम जलसे धो ले। कुचलेको योगोंमें डालना हो तो उसी समय सरौतेसे छोटे टुकड़े कर पीस डाले, सूखनेके बाद बड़े परिश्रमसे चूर्ण होता है।

३५—खर्परका शोधन।

खपरियेका सूक्ष्म चूर्ण बना मिट्टी या कांचके पात्रमें डालकर ऊपरसे पात्रको गोमूत्रसे भर दे। प्रतिदिन गोमूत्र बदलता रहे। इस प्रकार सात बार गोमूत्रमें भिगोनेके बाद उसको जलसे धो, सुखाकर रखले।

बनारस हिन्दू युनिवर्सीटीके फार्मेसी विभागमें जो खपरिया बिकता है। वह ठीक है। उसे काममें लेना चाहिये। खर्परके स्थानमें जस्तेकी भस्मका व्यवहार करना भी अच्छा है।

३६—हिंगुलका शोधन।

हिंगुलका चूर्णकर उसको एक प्रहर गायके दूधमें मर्दन करे पीछे नीबूके रसकी सात भावना दे, सुखाकर शीशीमें भर ले।

३७—पारेका शोधन।

हिंगुलसे निकाला हुआ पारद शुद्ध होता है उसीका योगोंमें प्रयोग करना चाहिये। शुद्ध हिंगुलको नीबूके रसमें पीस, उसकी टिकिया बना, एक चौड़े मुंहकी मजबूत मिट्टीकी हांडीमें रखकर उसको अंगीठी पर रखे। हांड़ीपर हांड़ीके मुंहसे कुछ चौड़ा मिट्टीका तवा या एनामल की हुई लोहेकी रकाबी (तश्तरी) उल्टी कर रख दे और उसके ऊपर चार तह किया हुआ कपड़ा पानीमें तर करके रखे। पाव पाव घंटेसे तश्तरीको बदलता रहे अर्थात् एक तश्तरीको उठाकर तुरंत दूसरी तश्तरी हांड़ी पर रख दे और उठाई हुई तश्तरीमें लगे हुए पारेको अंगुलीसे निकालकर कांचके पात्रमें इकट्ठा करता रहे। इस प्रकार सब पारा निकलने तक यह विधि करनी चाहिये।

३८—भिलावेका शोधन।

भिलावेका शोधन अमृतभल्लातककी निर्माणविधिमें लिखी हुई विधिके अनुसार करे।

वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य विरचित सिद्धयोग संग्रह समाप्त।

श्रीबैद्यनाथ आयुर्वेद भवन

परिचय

श्रीबैद्यनाथ आयुर्वेद भवन इस समय हिन्दुस्तानके सबसे बड़े शहर कलकत्तेमें सबसे बड़ा देशी दवाओंका कारखाना है। आजसे २४ साल पहले इस कारखानेको बैद्यनाथधाम (देवघर) में पं० रामनारायण शर्मा वैद्यशास्त्रीने बहुत छोटे पैमानेपर स्थापित किया था। गत वर्ष इस कारखानेकी दवाओंकी विक्री ११०००००) रुपयेके लगभग हुई। इसमें एजेन्टोंका कमीशन और रेलवेका किराया बाद है, नहीं तो यह संख्या और भी अधिक होती। हिन्दुस्तानमें यही एक कारखाना है जहाँ हजारों मन आसव-अरिष्ट, सैकड़ों मन च्यवनप्राश, मनों भस्म और रस आदि सदा तैयार मिलते हैं। यहाँकी दवाओंका सेवनकर लाखों नहीं करोड़ों भारतवासी फायदा उठा चुके हैं और उठा रहे हैं। सबसे बड़े वैद्यराज जो अखिल भारतीय आयुर्वेद महामण्ड़लके सभापति होनेका गौरव प्राप्त कर चुके हैं, श्रीबैद्यनाथ आयुर्वेद भवनकी दवाइयां काममें लाकर उनकी प्रशंसा कर चुके हैं। इस कारखानाने अपनी दवाओंकी श्रेष्ठताके लिये कई अखिल भारतीय आयुर्वेद प्रदर्शनियोंसे स्वर्णपदक प्राप्त किये हैं।

इस असम्भावित उन्नतिका मूल कारण है सच्चाई! दवाओंके असली और गुणकारी होनेसे ही इसकी ख्याति और विक्री उत्तरोत्तर बढ़ती गई और लड़ाईके जमानेमें भी इसकी विक्री घटी नहीं। यहाँकी दवाइयाँ वैद्यराज, डाक्टर, पंसारी, फार्मेसी, मेडिकल स्टोर आदि बेचते हैं। इस ग्रन्थके सभी योगोंको प्रस्तुत करनेका भी प्रबंध किया गया है और इसकी सभी दवाएँ यहाँ सदा प्रस्तुत मिला करेंगी।

हमारा उद्देश्य

"श्रीबैद्यनाथ आयुर्वेद भवन" के मालिकोंका मुख्य उद्देश्य असली दवाओंकी विक्रीके साथ ही आयुर्वेदको उन्नत बनाना रहा है। इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये कार्यालयकी ओरसे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी, ऋषिकुल हरद्वार, धन्वन्तरि महाविद्यालय नागपुर, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झांसी आदि प्रत्येक संस्थाको आर्थिक सहायता दी जाती है। आयुर्वेद पढ़नेवाले छात्रोंको कार्यालयकी ओरसे छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। बिहारमें जो मलेरियाका भयानक प्रकोप हुआ था, उसमें १०००० से भी ज्यादे रोगियोंकी जानें मलेरियाकी अचूक दवा "बैद्यनाथ प्राणदा" मुफ्त देकर बचाई गईं। कार्यालयकी ओरसे दवाओंके विशेष जानकार और प्रसिद्ध वैद्योंको बुलाकर उनसे आयुर्वेदीय दवाओंके सर्वोत्तम निर्माणके बारेमें सलाह ली जाती है।

(२) उपचार पद्धति और पथ्य

बिना उपचारके बहुतसे रोगी मर जाते हैं। उपचार और पथ्यापथ्यकी सभी जरूरी बातें इसमें बताई गयी हैं।

(३) किशोररक्षा और ब्रह्मचर्य

बालकोंको उनकी सर्वस्व-नाशकारी व्याधियोंसे बचानेका सफल उद्योग किया गया है।

(४) द्रव्यगुण-विज्ञान

आयुर्वेदमें काम आनेवाले द्रव्योंपर प्रमाणित ग्रन्थ है।

(५) शरीर-क्रिया-विज्ञान

आयुर्वेदके मूल-सिद्धान्तोके आधार पर नये दृष्टि-कोणसे लिखी गयी 'फिजियोलाजी' है। आयुर्वेदके छात्रों व विद्वान वैद्योंके बहुत ही कामकी चीज है। ग्रन्थ के विद्वान लेखकने आयुर्वेदके भूले हुए इस विज्ञानपर पाण्डित्यपूर्ण प्रकाश डालकर स्तुत्य कार्य किया हैं।

प्राप्ति स्थान :—

श्रीबैद्यनाथ आयुर्वेद भवन,

कलकत्ता, पटना, झाँसी और नागपुर।